चक्रधर धौलाखंडी

# चतुर हत्यारा

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

**BLUEROSE PUBLISHERS**
India | U.K.

Copyright © Chakradhar Dhaulakhandi 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7018-447-3

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: Jult 2025

इंस्पेक्टर कामत ने डी.एस.पी. और एस.पी. को फोन करने के बाद एम्बुलेंस वालों को फोन किया। उसके बाद वह फिर कमरे में जाकर लाश का मुआयना करने लगा। लाश एक बाईस-तेईस साल की लड़की की थी। वह इस लड़की को अच्छी तरह से जानता था। एक बार पहले भी वह इससे मिल चुका था, जब एक दिन कैप्टन अशोक वर्मा उसके पास आया था और उससे मदद माँगी थी कि वह यहाँ की चॉल में रहने वाली शांता बाई का घर ढूंढने में मदद कर दे।

उसके पूछने पर कैप्टन अशोक ने कहा था - 'वे मेरे यहाँ मेड का काम करती है। इतवार की उनकी छुट्टी रहती है। लेकिन उन्हें तीन दिन हो गये हैं। वे अब तक काम पर नहीं आई। मैंने दूसरी मेडों से पूछा, किन्तु कोई भी ठीक जवाब नहीं दे पायीं। यदि उन्हें काम नहीं करना था तो मुझे खबर कर देतीं।'

इंस्पेक्टर ने हंस कर कहा - 'आप भी कहाँ चक्कर में पड़े गये कैप्टन। ये काम करने वाली ऐसी ही हैं। कहीं ज्यादा पैसे मिल गये तो पहले वाले घर को बिना बताए छोड़ देती हैं। आप कोई दूसरी रख लीजिए।'

कैप्टन ने संजीदा होकर कहा - 'वह काम नहीं छोड़ सकती। उसके पास मेरे घर की चाबियाँ हैं, मेरे घर का सारा काम करती है। इंस्पेक्टर, आपको मालूम नहीं कि मैं उन्हें मम्मी की तरह मानता हूँ।'

इंस्पेक्टर हंसा और बोला - 'कमाल करते हैं आप भी। एक मेड को मम्मी कह कर पुकारते हैं कभी?'

कैप्टन ने कहा - 'हाँ, मैं उसे मम्मी कह कर ही बुलाता हूँ। वो मेरा पूरा ख्याल रखती है। खाना बनाना, कपड़े धोना, झाड़ू लगाना और कभी-कभी मुझे डांटना। ये एक माँ के अलावा और कौन कर सकता है। प्लीज़, आप मेरी मदद कीजिए।'

कैप्टन का मायूस चेहरा देखकर इंस्पेक्टर का चेहरा भी गंभीर हो गया और उठता हुआ बोला - 'चलिये ऊपर चॉल में चल कर पता लगाते हैं। क्या नाम है उसका?

'शांता, शांता बाई।' कैप्टन ने उठते हुए कहा।

इंस्पेक्टर उसे लेकर ऊपर दुकानों से दूर चॉल में ले गया। चॉल बहुत लंबी एक कोने से दूसरे कोने तक फैली हुई थी। इस तरह की दो चॉल थीं। दोनों चॉलों के बीच में दस फुट चौड़ी ईंटों की बनी सड़क थी। उस पर अपने-अपने दरवाजे के पास कुछ बुजुर्ग व्यक्ति और महिलाएं बैठी हुई थीं। इंस्पेक्टर ने एक बुजुर्ग से पूछा - 'शांता बाई कहाँ रहती है?'

बुजुर्ग व्यक्ति के बोलने से पहले ही बूढ़ी औरत ने कहा - 'वो आगे के घर में रहती है। वो सामने कुर्सी पर उसकी माँ बैठी है और स्टूल पर उसका बाप बैठा है।' और उसने हाथ के इशारे से उन्हें दिखाया।

इंस्पेक्टर आगे बढ़ गया। कैप्टन भी उसके पीछे-पीछे चला। स्टूल वाले व्यक्ति के पास जाकर इंस्पेक्टर ने कड़क आवाज में पूछा - 'शांता तुम्हारी बेटी है?'

हड़बड़ा कर वह खड़ा हो गया और सिर हिलाकर मरी सी आवाज में बोला - 'जी सा'ब।'

'वह साहब के यहाँ काम पर क्यों नहीं जाती?' वह औरत भी खड़ी हो गयी और बोली - 'उसकी तबीयत ठीक नहीं है। बुखार हो गया है।'

कैप्टन ने चौंक कर पूछा - 'कहाँ है? कैसी है? कब से बुखार हुआ है? पिछले शनिवार को तो वो ठीक थी। कहाँ हैं?'

'इतवार सुबह उठी तो बदन टूट रहा था। फिर पूरा बदन जलने लगा। अब थोड़ा ठीक है .....।'

किन्तु, कैप्टन आगे सुनने के लिये नहीं रूका। वह दौड़ता हुआ अंदर भागा। अंदर का कमरा खाली था। इधर-उधर देखते हुए उसने पुकारा - 'मम्मी, मम्मी जी, मम्मी।'

इंस्पेक्टर भी अंदर गया। उसके पीछे-पीछे वे दोनों भी अंदर आ गये। कैप्टन को मम्मी-मम्मी पुकारते देख तीनों आश्चर्यचकित रह गये। फिर वह महिला बोली - 'सा'ब, वो अंदर वाले कमरे में है।'

कैप्टन ऊधर लपका। शांता आवाज सुनकर उठ गयी थी। कैप्टन को देखकर वह सीधी होकर बैठ गई। कैप्टन ने उसके नजदीक जाकर पूछा - 'क्या हो गया मम्मी जी?'

शांता ने कांपते हुए स्वर में कहा - 'ठीक हूँ।'

कैप्टन ने झल्लाकर कहा - 'ठीक हो तो आई क्यों नहीं?' फिर उसने उसके माथे पर हाथ रख दिया। उसका सिर तप रहा था। वह हाथ हटाता हुआ बोला - 'पूरा सिर तप रहा है, मम्मी। दवा नहीं ली क्या?'

'ली है।' उस आदमी ने कहा।

'कहाँ से ली है?'

'सरकारी मैडिकल वैन में डाक्टर आते हैं सोमवार और शुक्रवार को, उनसे दवाई ली है।'

'कहीं सरकारी अस्पताल में दिखाया, मम्मी का सिर आग की तरह जल रहा है। इन्हें अभी किसी सरकारी अस्पताल या किसी अच्छे प्राइवेट अस्पताल के पास ले जाओ। कल तक मम्मी ठीक हो जानी चाहिए।' यह कह कर उसने अपना पर्स खोला और दो पांच-पांच सौ के नोट बढ़ाता हुआ उस बुजुर्ग से बोला - 'ये पैसे लो

और सरकारी या प्राइवेट अस्पताल में आज ही ले जाओ। और हाँ, मम्मी को बस में नहीं टैक्सी में ले जाना। पैसे कम पड़े तो और माँग लेना।'

फिर वह शांता से बोला - 'मम्मी आप जब तक पूरी तरह से ठीक न हो जायें, आने की जरूरत नहीं।'

शांता ने कांपते स्वर में कहा - 'फिर आपके खाने का क्या होगा? आपके कपड़े भी धोने होंगे।'

'अरे मम्मी, मैं मैनेज कर लूंगा। खाना मैस में खाऊंगा और रही कपड़ों की बात तो जैसे तुम वाशिंग मशीन में डालती थी, वैसे ही धो लूंगा। चिन्ता मेरी नहीं अपनी करो। आपके पास मेरा फोन नंबर है। शाम को मुझे फोन कर देना कि आप दवा ले आई हैं।'

शांता ने कहा - 'मेरी एक सहेली है। कुछ दिनों के लिये उसे भेज देती हूँ।'

'नहीं, मुझे बस मम्मी चाहिए कोई मेड नहीं। अच्छा मैं चलता हूँ। मम्मी, जरूर ठीक हो जाना।'

शांता ने मुस्कुराने का प्रयास किया और लेट गयी।

बाहर वाले कमरे में आकर कैप्टन ने उसके माता-पिता से पूछा - 'कब ले जा रहे हैं, आप मम्मी जी को?'

'बस अभी ले जाते हैं।' उसके पिता ने कृतज्ञता से सिर झुका कर कहा - 'आपका यह अहसान कभी नहीं भूल पायेंगे।'

'अहसान नहीं है। मम्मी जी एकदम ठीक होनी चाहिए।'

कैप्टन कहकर इंस्पेक्टर की ओर मुड़ा और पूछा - 'चलें?'

'चलिये।' इंस्पेक्टर उसके साथ आगे बढ़ गया।

---- *** -----

# 2

कैप्टन अशोक जल्दी उठकर अपने लिये चाय बना रहा था। जब दरवाजे पर घंटी बजी। उसने जाकर द्वार खोला तो चौंक उठा। शांता मुस्कुराती हुई खड़ी थी। उसने जल्दी से दरवाजा खोला और बोला - 'मम्मी तुम आ गयी। तबीयत कैसी है?'

वह हंस कर बोली - 'अब ठीक हूँ। रास्ते से तो हटिये।'

वह झेंप गया। एक ओर हटता हुआ बोला - 'बड़ी खुशी हुई कि आप ठीक हो गयीं। आज अधिक काम करने की जरूरत नहीं। मैं ब्रेड ले आया हूँ। नाश्ता उसी का करूंगा। लंच ऑफिस कैन्टीन से खा लूंगा।'

'अच्छा, अब जाइए। मुझे काम करने दीजिए।' कहते हुए उसने एक नज़र ड्राइंग रूम पर डाली और रसाई घर में चली गयी। गैस के ऊपर पतीली में चाय खौलकर लाल हो गयी थी। एक ओर ब्रेड और मक्खन पड़ा हुआ था। उसने गैस बंद कर सारी पतीली की चाय सिंक में डाल दी। दुबारा चाय बना कर ड्राइंग रूम में उसके सामने टेबल पर रख कर करूण स्वर में बोली - 'सा'ब, आपका यह एहसान मैं जिंदगी भर नहीं भूलूंगी। आपने मुझे बचा लिया सा'ब।'

कैप्टन हंसा और बोला - 'मम्मी जी, आपको नहीं, अपने आप को बचाया है। बिना ठीक से खाये मेरी क्या हालत हो गयी है।

पूरा एक किलो वजन घट गया है। वो भी दो ही हफ्ते में। मेरी भाभियां आएंगी तो न जाने कितना गुस्सा करेंगी। अब आप आ गयी हैं तो मेरा वजन भी बढ़ जायेगा।'

शांता थोड़ी देर उसे देखती रही। फिर बोली - 'आप तैयार हो जाइए। मैं नाश्ता और लंच तैयार कर देती हूँ।' फिर वह मुड़कर जाने लगी।

कैप्टन ने जल्दी से कहा - 'मम्मी, ब्रेड रखा हुआ है। मैं उसका ब्रेकफास्ट कर लूंगा और लंच ऑफिस की कैन्टीन में कर लूंगा।'

'आपको साढ़े आठ बजे आना है न?' उसने पलट कर पूछा।

'हाँ, लेकिन..।' कैप्टन ने कहना चाहा।

'चाय पीकर नहा-धो कर तैयार हो जाओ।' कह कर वह किचन में चली गयी। चाय पीकर वह भी अपने कमरे में चला गया।

तैयार होकर जब वह बाहर आया तो ब्रेकफास्ट डाइनिंग टेबल पर लगा हुआ था। नाश्ता उसने किया ही था कि शांता उसका टिफिन ले आई और बोली - 'लीजिये आपका लंच तैयार है। सब्जी आदि नहीं थी। कुछ आलू और प्याज थे। वही मिक्स करके बनाई है। मैं शाम को लेकर आ जाऊंगी।'

कैप्टन ने उसे पांच सौ का एक नोट दिया और बोला - 'मम्मी, ब्रेड तो थी। वही नाश्ते में दे देती।'

'ब्रेड से पेट खराब होता है। ज्यादा नहीं खाना चाहिए।' आपका ऑफिस का टायम हो गया है। आप जायें तो मैं दरवाजा बंद करके बाकी काम करूं।'

कैप्टन ने एक बार उसकी ओर देखा और टिफिन बॉक्स उठाकर बाहर निकल गया।

फिर शांता समय पर रोज आने लगी। एक महीना पूरा गुजर गया। महीना पूरा होने पर एक शाम को जब शांता काम समाप्त कर जाने लगी तो कैप्टन ने उसे रोक कर कहा - 'मम्मी, महीना पूरा हो गया है। अपनी तनख़ा तो ले जाओ।' और उसने पांच-पांच सौ के छै नोट उसकी ओर बढ़ा दिये।'

मुस्कुराते हुए शांता ने नोट पकड़े। फिर उसने नोट गिने। छै नोट वो भी पांच-पांच सौ के देखकर वह हैरान रह गयी और कैप्टन की ओर देखने लगी। फिर उसके मुंह से हैरानी से निकला - 'इतने!'

शर्मिन्दा सा होकर कैप्टन ने पूछा - 'कम हैं क्या?'

शांता ने ना में सिर हिलाया और बोली - 'ये तो बहुत ज्यादा हैं सा'ब। मुझे सिर्फ दो हजार चाहिए। यही रेट है।'

कैप्टन हंस पड़ा और बोला - 'अब क्या हो सकता है मम्मी। अब तो मैं दे चुका हूँ। चलो अगले महीने कम दे दूंगा।'

शांता बोली - 'अच्छा तो ये एक हजार रूपये जो आपने मेरे इलाज के लिये दिये थे वो काट लीजिए।' और उसने एक हजार रूपये उसकी ओर बढ़ा दिये।

'अरे वाह! मम्मी के इलाज के पैसे कोई वापस लेता है क्या?' वो मैंने शांता बाई को नहीं, मम्मी के लिये दिये थे। वो कैसे ले सकता हूँ। अच्छा, अब आप जाओ। रात हो रही है। आपको देर हो जायेगी।'

आश्चर्य से कैप्टन का चेहरा देखते हुए वह तेजी से बाहर की ओर लपकी। उसकी आँखों से आंसू गिरने लगे थे।

कैप्टन ने मुस्कुराते हुए दरवाजा बंद कर दिया और सीधे अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट कर अपनी बड़ी भाभी को फोन किया। बड़ी भाभी ने जल्दी ही फोन उठा लिया। उधर से आवाज आई - 'आशी, क्या कर रहे हो?' खाना खा लिया?'

नहीं, भाभी, मम्मी अभी बना कर गयी हैं। मैंने सोचा पहले आपको फोन कर लूं। भैया आ गये क्या?'

'नहीं देर से आयेंगे। आज मैस में पार्टी है।'

'आप नहीं गईं?'

'सौरभ अभी कॉलेज से नहीं आया। उसके पेपर होने वाले हैं। इसलिये मैं नहीं गयी।'

'और चिंटू?'

'वो अपने कमरे में है। अगले महिने उसके बोर्ड के पेपर हैं।'

'वो इतना बड़ा हो गया है क्या?'

'और तू कितना बड़ा हो गया है। तीन साल हो गये तुझे देखे हुए। बस तेरी आवाज ही सुनकर और वीडियो में तुझे देखकर ही तसल्ली कर लेती हूँ।' भाभी की आवाज भर्रा गयी थी। शायद रोने भी लगी थी।

अशोक की आँखें भी भर आईं। किन्तु स्वयं को नियंत्रित करके बोला - 'भाभी, प्लीज़ रोओ मत। मैं जल्द आकर तुमसे मिलूंगा। तुमसे भी और छोटी भाभी से भी।'

कितुं भाभी फिर कुछ न बोली। कैप्टन ने फोन बंद कर दिया और छत को घूरने लगा।

---- *** -----

# 3

इंस्पेक्टर कामत लाश के पास से बाहर आया और वहाँ जाकर खड़ा हो गया, जहाँ से नीचे जाने की सीढ़ियाँ थीं। उसने वहाँ से अपनी पुलिस चौकी की ओर देखा। एक काली कार तभी वहाँ रूकी। सब-इंस्पेक्टर प्रमोद उसे कार का दरवाजा खोलते हुए दिखाई दिया। वह समझ गया कि डी.एस.पी और एस.पी. आ गये हैं और अब प्रमोद उन्हें लेकर ऊपर आयेगा। उसने एक बार उस ओर देखा जहाँ लाश पड़ी थी और दो कांस्टेबल दरवाजे पर पहरा दे रहे थे। उसने हाथ हिलाकर दोनों को सावधान रहने का इशारा किया। दोनों ही मुस्तैद हो गये और सामने खड़े लोगों को दूर हटने का इशारा किया।

थोड़ी ही देर में प्रमोद एस.पी. और डी.एस.पी को लेकर ऊपर आ गया। कामत ने दोनों को सैल्यूट किया। एस.पी. ने सैल्यूट का जवाब देते हुए पूछा - 'लाश कहाँ है?'

'आइए सर।' और वह उन्हें लेकर शांता के घर की ओर चल पड़ा।

थोड़ी ही देर में वे शांता के घर में उस कमरे में पहुंच गये जहाँ शांता का खून हुआ था। शांता की छाती और पेट पर तीन-चार छूरे के निशान थे। घांवों से खून निकल कर बिस्तर को गीला कर चुका था।

'कुछ पता है खून किसने किया है?' डी.एस.पी. ने पूछा

'नहीं, सर।'

'उसके माँ-बाप तो होंगे। उनसे पूछा।' एस.पी. ने कहा।

'पूछा था, सर। उसके पिता का कहना है कि कल वह घर पर अकेली थी।'

'क्यों? और वे कहाँ गये थे?' एस.पी. ने पूछा।

'उनका कहना है कि कल वे एक शादी में गये थे।'

वहाँ से करीब ढाई-तीन बजे वापस आए। बाहर का दरवाजा सिर्फ ढंका हुआ था। पहले कमरे में जहाँ वे सोते हैं, उसकी बत्ती जल रही थी और पीछे वाले कमरे में जहाँ शांता सोती है, उसकी बत्ती बंद थी। उन्होंने सोचा कि शांता सो गयी है। इसलिये उसे जगाना ठीक नहीं समझ कर वे भी बत्ती बुझा कर सो गये। सुबह जब देर तक शांता नहीं उठी तो उसकी माँ उसे जगाने गयी। तब खून देखकर वह चिल्लाई। उसके पिता हड़बड़ा कर उठे और अंदर जाकर देखा। फिर वे दहाड़ मारकर रो उठे और बाहर आकर शोर मचाया। तब एक लड़के ने आकर हमें खबर दी, तो हम यहाँ आये। लाश को देख कर आप दोनों को सूचित किया।

'लाश को किसी ने छुआ? डी.एस.पी. ने पूछा।

'पता नहीं, सर। हो सकता है कि उसके माँ-बाप ने छुआ हो। पर वे बता नहीं पा रहे हैं। रोये जा रहे हैं।'

'ये कहीं काम करती थी क्या?' एस.पी. ने पूछा।

'हाँ, सर, मेड का काम करती थी।'

'कहाँ?'

'एक हैं कैप्टन अशोक। उसके यहाँ काम करती है।'

'कहाँ रहता है ये कैप्टन?'

'नीचे हैदराबाद एस्टेट में।'

'और किसके यहाँ काम करती है?'

'और किसी के यहाँ नहीं।'

'आप उसे जानते हो?' एस.पी. ने पूछा।

'यस सर, एक बार वो यहाँ इसको ढूंढते हुए आया था। उसने मुझसे उसका घर ढूंढने के लिये मदद माँगी थी। तब यह लड़की बीमार थी। वह इसके बाप को एक हजार रूपये देकर गया था कि इसका इलाज किसी अच्छे डाक्टर से कराये।'

'हूँ!' एस.पी. ने सोचते हुए डी.एस.पी. की ओर देखा। डी.एस.पी. के चेहरे पर व्यंग भरी मुस्कान नाच उठी।

कामत ने यह देखा तो जल्दी से बोला - 'सर, वह कैप्टन इसे मम्मी कह कर बुलाता है।'

'क्या?' एक मेड को मम्मी कहता है। क्या वह पागल है?'

कामत बोला - 'मैंने भी पूछा था। वह कहने लगा कि वह मेरा सारा काम करती है। खाना बनाना, मुझे खिलाना, झाड़ू-पोछा लगाना, कपड़े धोना और डांटना। ये सारे काम एक माँ के अलावा और कौन कर सकता है। इसीलिये मैं उसे मम्मी जी कह कर बुलाता हूँ।'

दोनों सोच में पड़ गये। एस.पी. ने कहा - 'क्या तुम उसे बुला सकते हो?'

'सर, मैंने कांस्टेबल को नीचे भेज दिया है। वह लेकर आता ही होगा।'

'वह फौजी है। क्या वह घर पर होगा?' डी.एस.पी. ने पूछा।

'सर, आज इतवार है। शायद अभी घर पर ही हो।'

कुछ देर सोच कर एस.पी. ने पूछा - 'एम्बुलेंस को फोन किया?'

'जी हाँ, आती ही होगी।'

तभी कैप्टन अशोक दौड़ता हुआ आया। उसका चेहरा उदास था। लगता था जैसे अभी रो देगा। वह फौजी ड्रेस नहीं पहने था। लेकिन लगता था जैसे कहीं जाने वाला था। उसके गले में एक फौजी रंगीन छोटा-सा मफलर बंधा हुआ था। उसके पीछे-पीछे एक कांस्टेबल भी दौड़ा चला आ रहा था। कांस्टेबल एस.पी. और

डी.एस.पी को देख कर रूक गया और सैल्यूट मारने की मुद्रा में खड़ा हो गया।

उन्हें देखकर कैप्टन रूका नहीं। वह दौड़ता हुआ अंदर चला गया। उसे रोकने के लिये इंस्पेक्टर कामत और सब-इंस्पेक्टर भी दौड़े। पीछे-पीछे डी.एस.पी. और एस.पी. भी अंदर आ गये।

शांता को खून से लथ-पथ पड़े देखकर कैप्टन रो पड़ा और मम्मी-मम्मी जी कह कर शांता को आवाजें देने लगा। कैप्टन घुटनों के बल उसकी खाट के पास बैठ गया और जोर-जोर से रोते हुए बोला - 'मम्मी उठो, उठो मम्मी, देखो अभी मैंने नास्ता भी नहीं किया - आज मुझे डांटोगी नहीं - मैं आज ब्रेड ले आया हूँ - उठो मम्मी- मुझे डांटो---।'

इंस्पेक्टर कामत ने उसे उठाते हुआ कहा - 'धीरज रखो कैप्टन, वह मर चुकी है। उसकी हत्या हुई है।'

'लेकिन मम्मी को क्यों मारा - किसने मारा - उसने किसी का क्या बिगाड़ा था।' वह फिर से रो उठा।

'हम पूरी कोशिश करेंगे उसके हत्यारे को पकड़ने की। उसको सजा दिलवाने की।'

बड़ी मुश्किल से कैप्टन चुप हो सका। उसे लेकर वे बाहर आए। बाहर आते ही उसकी नज़र शांता के माता-पिता पर गयी। वह उनकी ओर लपका। वे भी रो रहे थे। उनके पास जाकर उसने पूछा - 'आपके होते हुए कोई मम्मी जी को कैसे मार गया। आपने

उसकी चीख भी नहीं सुनी क्या। उसका प्रोग्राम तो ऐलीफेन्टा केव देखने जाने का था न।'

'सा'ब, कल हमारे रिश्ते में एक शादी थी। हमें वहाँ जाना था। इसलिये वहाँ जाने का प्रोग्राम रद्द कर दिया था।'

'तो शादी में उसको भी ले जाते।'

'वह गुस्सा हो गयी थी। इसलिये शादी में नहीं आई।'

'तो वह घर में अकेली थी?' उसकी किसी सहेली को यहाँ छोड़ जाते।'

वे दोनों चुप हो गये।

एम्बुलेंस वाले आ गये थे, साथ में डाक्टर भी आया था। सब-इंस्पेक्टर को डाक्टर के साथ छोड़कर और डाक्टर को कुछ निर्देश देकर, डी.एस.पी. और एस.पी. और कामत कैप्टन को लेकर पुलिस चौकी में आए।

एक कुर्सी पर कैप्टन को बिठा कर एस.पी. ने पूछा - 'एक बात समझ में नहीं आई कैप्टन। आप एक मेड को मम्मी कहकर क्यों पुकारते हो। आपको झिझक या शर्म महसूस नहीं होती।'

कैप्टन अशोक ने अपनी पनीली आँखों को हाथों से साफ किया और धीरे-धीरे बोला - 'उसकी आदत भी मेरी माँ की ही तरह थी। कभी ब्रेड नहीं खाने देती थीं। कहती थीं, ब्रेड खाने से पेट खराब हो जाता है। ये भी यही बात करती थी। कभी इतवार को मैं

ब्रेड लेकर आता था तो वह उठाकर बाहर फेंक देती। माँ का प्यार मेरे पंद्रवे साल में उठ गया था। माँ ही क्यों। मेरे माता-पिता दोनों को कौरोना निगल गया। बड़े भाई तब दिल्ली में थे। आर्मी हास्पिटल में भरती थे। किन्तु एक दिन दोनों ने मेरा साथ छोड़ दिया।' और वह फिर से रोने लगा। एस.पी. ने उसके कंधे पर हाथ रखकर सांत्वना दी। जेब से रूमाल निकाल कर उसने आँखें पोंछी और पूरा चेहरा साफ किया। फिर बोला - 'मेरे दो भाई मुझसे बड़े हैं। दोनों शादी-शुदा हैं। बड़े भैया के दो बेटे हैं। उनमें बड़ा वाला रूड़की युनिवर्सिटी में इंजीनियरिंग कर रहा है और छोटा वाला दसवीं में है।'

'छोटे भाई का एक बेटा है। वह अभी नौवीं में है। छोटा भाई साफ्टवेयर इंजीनियर है और किसी बड़ी कंपनी में काम करता है। मेरे बड़े भाई फौज में कर्नल हैं और आजकल रूड़की में पोस्ट हैं।'

हम सब एक ही घर में रहते थे। तब बड़े भैया मेजर थे। चूंकि मैं सबसे छोटा था, मुझे सबका प्यार और स्नेह मिला। माँ मेरा बहुत ख्याल रखती थी। उसकी हिदायत घर में थी कि मुझे ब्रेड कभी न दिया जाये। मुझे ही क्यों। घर में ब्रेड कभी आता ही नहीं था। बड़े भैया के राशन में एक ब्रेड आता था। जिसे वे मेड को देते थे। मैं बड़ी भाभी को भाभी माँ और छोटी भाभी को छोटी माँ कहकर बुलाता था।

कौरोना काल में माँ-बाप के देहांत के बाद मुझे सहारा देने वाली मेरी भाभियां ही थी। मैं बड़ी भाभी के गले लगकर खूब रोया।

बड़े भैया भी टूट चुके थे। एक दिन उन्होंने बताया कि उनकी पोस्टिंग रूड़की हो गयी है। उन्होंने छोटे भाई से कहा - 'तुम कोई किराये का मकान ले लो या फिर नौकरी छोड़ कर मेरे साथ रूड़की चलो, क्योंकि यह मकान मुझे खाली करना पड़ेगा।'

छोटे भैया ने कहा - 'नौकरी छोड़ने से अशोक की एजुकेशन पर फर्क पड़ेगा। इसकी बोर्ड की परीक्षायें होंगी। फिर ग्रेजुएशन भी यहीं से कर ले तो अच्छा रहेगा। बाकी जैसा आप कहें।'

फिर मुझे वहीं छोड़ कर बड़े भैया, बड़ी भाभी और दोनों बच्चे रूड़की चले गये। छोटी भाभी बड़ी खुश थी। वो मुझे पाकर कहने लगीं - 'चलो, अब मेरे भी दो बच्चे हो गये।'

मैंने दिल्ली से ही ग्रेजुएशन किया। मैंने साइंस सब्जैक्ट से ग्रेजुएशन किया था। छोटे भैया मुझे पी.एच.डी. करने की सलाह दे रहे थे। मैं कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था कि एक दिन भैया आए और मुझे लेकर रूड़की आ गये। अब वे कर्नल हो गये थे।

मैं भाभी माँ से मिलकर बहुत खुश था। मेरा एक भतीजा रूड़की टेक्निकल कॉलेज में इंजीनियरिंग कर रहा था और छोटा भतीजा आठवीं में पढ़ रहा था। एक हफ्ता कैसे निकल गया पता ही नहीं चला।

फिर एक दिन बड़े भैया दफ्तर से आए और मुझे बुलाकर बोले - 'ऐसा कर तू फौज में भर्ती हो जा। अभी मौका है। डायरेक्ट

सेकिंड लेफ्टिनेंट की भर्ती हो रही है। छै महिने की ट्रेनिंग होगी। अच्छी तनखा मिलेगी।'

'मैं कुछ ऐसा काम करना चाहता हूँ जो टेक्निकल हो। मैंने साइंस में ग्रेजुएशन किया है।' मैंने कहा।

'वहाँ तुम्हें जो लाइन चुननी हो, वह चुन लेना। तुम्हारी पोस्टिंग वैसी ही जगहों पर होगी। पर हाँ, तुम्हें फौजी ड्रेस पहननी होगी। जैसे मैं पहनता हूँ। बोलो, तैयार हो। नहीं तो नौकरी ढूंढने में पता नहीं कितना वक्त लगे। फिर मन माफिक नौकरी मिलती भी है या नहीं। बोलो।'

मैंने कहा - 'बड़े भैया रातभर मुझे सोचने दो।'

'ठीक है। अगर तैयार है तो सुबह सलेक्शन कमेटी के पास चले चलेंगे।'

मैं उठकर भाभी माँ के पास आया और उन्हें भैया की कही सारी बात बताई। वे बोलीं - 'आशी, फौज की नौकरी खराब नहीं है। सारी सुविधायें मिल जाती हैं। बस एक ही कष्ट होता है कि फौजी अपनी संतान को ठीक से शिक्षा नहीं दिला पाता। कब एक जगह से दूसरी जगह बदली हो जाये, कह नहीं सकते। तब बीवी बच्चों को अकेला छोड़ कर जाना पड़ता है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, बड़ी क्लास में जाते हैं तो शिक्षा पर असर पड़ता है। लेकिन तुम अभी बाईस साल के ही हो। अभी तुम सलेक्ट होकर सेकिंड लेफ्टिनेंट बन जाते हो तो काफी ऊपर जा सकते हो।' फिर हंसकर

बोली - 'वैसे, अभी तीन-चार साल तो तुम्हारी शादी होने से रही। तब तक खूब मौज कर लो। मैं भी तो देखूं कि मेरा प्यारा आशी फौजी वर्दी में कैसा लगता है।'

मैंने भाभी माँ के चेहरे की ओर देखा, उनके अंतिम शब्दों को सुनकर मैं समझ गया कि वे चाहती हैं कि मैं फौज में जाऊं।

दूसरे दिन बड़े भैया मुझे सलेक्शन सेंटर ले गये। कहना न होगा कि भैया की वजह से मेरा सलेक्शन हो गया। दूसरे ही दिन मैं ट्रेन से चेन्नई ट्रेनिंग के लिये चल पड़ा। रूड़की स्टेशन मुझे छोड़ने सभी आए थे। मुझे एक स्पेशल रिजर्व डिब्बा दिया गया। जहाँ बीस लोग और भी थे। उन्हें देखकर मेरा हौसला बढ़ गया।

ट्रेनिंग सेंटर में मेरा नंबर नौ था। वहाँ के सिखाने वाले उस्ताद बहुत ही अच्छे थे। हम भी मेहनत से सभी कुछ सीखते थे। एक दिन शाम के वक्त एक उस्ताद ने मुझे रोक कर कहा - 'नंबर नाइन, आप जैसे तेज तर्रार, हैंडसम ब्याय को तो सिक्यूरिटी यूनिट ज्वाइन करनी चाहिए। क्या ख्याल है आपका?'

'मैंने उन्हें सैल्यूट मारा और बोला - 'सर मैंने साइंस में ग्रेजुएशन किया है।'

'उससे क्या हुआ?' अपनी काबिलियत दिखानी है तो उन फौजियों को पकड़ो जो देश के साथ गद्दारी करते हैं। जो आतंकी भेड़ की तरह हमारी फौज में घुसे हुए हैं और कब हम पर ही बम चला देते हैं। सड़कों पर तुमने देखा होगा कि हर एक फौजी कपड़े

पहन कर घूम रहे हैं। सब उन्हें फौजी ही समझते हैं। पर वे होते कुछ और हैं।'

मैं सोचता रहा। सिर नीचा किये रहा। तब उस्ताद जी ने कहा - 'सोच लेना। मैं तुम पर जोर नहीं दे रहा हूँ। केवल तुम्हारी लगन और तुम्हारी रिपोर्ट देखकर ही मैंने कहा था। अच्छा जाओ, आराम करो।'

मैं उन्हें सैल्यूट कर अपनी बैरिक की ओर मुड़ गया।

पासिंग आउट परेड के दिन सब फौजी ड्रेस में थे। उस दिन एरिया कमाण्डर जनरल परेड देखने आये थे। मेरे बड़े भैया भी वहाँ मौजूद थे। परेड के बाद हमारे रैंक लगाये गये। हम कुल तीस जवान थे। जनरल ने हमें हमारी पोस्टिंग लेटर दिये। अंत में उन्होंने बेस्ट कंडिडेट के नाम की घोषणा की। उन्होंने मेरा नाम लिया। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि मैं बेस्ट कंडिडेट हूँ। जब उन्होंने मेरा नाम दुबारा लिया तब मैं दौड़ा-दौड़ा उनके पास तक गया और सैल्यूट करके खड़ा हो गया। उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया, मुस्कुराये और सर्टिफिकेट मुझे दिया। मेरा दिल खुशी से झूम उठा।'

पासिंग आउट परेड के बाद, मैं दौड़ा-दौड़ा बड़े भैया के पास गया। उन्होंने मुझे गले से लगा कर मेरे माथे को चूमा और मेरे हाथ से सारे पेपर लेकर देखने लगे। पेपर देखने के बाद बोले - 'चल, अब घर चल। आज पिताजी और माँ होती तो कितने खुश होते। तुझे ज्वाइन करने के लिये दस दिन का वक्त मिला है। तेरी

पहली पोस्टिंग तेजपुर हुई है। सेकिंड लेफ्टिनेंट का रैंक वहीं लगेगा। चल अब घर चलें। तेरी भाभी तेरा ये प्रशंसा पत्र देखेगी तो बहुत खुश होगी।'

मैंने देखा की बड़े भैया की आँखों में आंसू आ गये थे। मैं कुछ न बोला। साथियों से विदा लेकर मैं भैया के साथ चल पड़ा।

मैं जब रूड़की पहुंचा तो ड्रेस में ही था। भाभी ने मुझे गले लगा लिया और रो पड़ीं। मुझे बहुत कसकर अपनी छाती से लगाकर बोली - 'आज तूने अपने भैया का सपना पूरा कर दिया आशी।' मेरे भतीजे भी मुझसे चिपट गये थे।

बड़े भैया ने कहा - 'अब तू पांच-छै दिन यहीं रहकर अपनी थकान दूर कर। फिर यहाँ से सीधे तेजपुर की गाड़ी पकड़ लेना।'

भाभी ने कहा - 'वाह, सीधे क्यों जायेगा? छोटी से मिलकर जायेगा। तू यहाँ से एक-दो दिन में दिल्ली जा और एक-दो दिन दिल्ली में रहकर वहीं से तेजपुर चला जा। उनसे भी मिलना जरूरी है।'

भैया चुप लगा गये। मैं दो दिन वहाँ रूका। भतीजों के साथ हरिद्वार भी हो आया। चौथे दिन ट्रेन से मैं दिल्ली आ गया।

जब मैं दिल्ली घर पर पहुंचा तो मैं अपनी ड्रेस में था। मैंने अपनी फौजी कैप पहन रखी थी और हाथ में पिठ्ठू लटका रखा था। जब मैंने घंटी बजाई तो छोटी भाभी ने दरवाजा खोला। असमंजस में उसने मुझे देखकर पूछा - 'यस।'

मैं टोपी उतार कर जोर से हंस दिया। तब वे मुझे पहचान कर चिल्लाई - 'आशू तू! क्या हाल बना लिया तूने?'

मैंने उनके सामने झुककर प्रणाम किया तो मेरे सिर पर हाथ फेर कर बोली - 'तेरी वो जुल्फें कहाँ चली गयी रे।' फिर मुझे उठा कर मेरे गालों को चूमती हुई चिल्लाई - 'अजी देखो तो मेरा बेटा आशू आया है।' और उन्होंने मुझे बांहों में भर लिया।

भैया घर में ही थे। वे भी बाहर आ गये और मुझे बांहों में भरकर बोले - 'तो तू बड़े भैया की तरह फौजी हो गया है। चल अंदर चल। अच्छा भला पी.एच.डी. कर लेता।'

मेरा छोटा भतीजा सौरभ बाहर खेल रहा था। जब उसे पता चला कि मैं आया हूँ तो वह दौड़ा-दौड़ा आया और मुझसे लिपट कर बोला - 'भैया, अब तो यहीं रहोगे न?' वह मुझे भैया कह कर ही बुलाता था। मुझे भी छोटी भाभी बेटा ही मानती थी।'

तीन दिन मैं छोटी भाभी के पास रहा। सातवें दिन मैं दिल्ली रेलवे स्टेशन से तेजपुर के लिये रवाना हो गया। मेरे छोटे भैया, छोटी भाभी माँ और छोटू मुझे स्टेशन पर छोड़ने आये थे। भाभी ने चलते समय एक टिफिन बॉक्स और दो पानी की बोतले मुझे देते हुए कहा था - 'आशू, ये खा लेना और पहुंच कर फोन कर देना।' उनकी आँखें भर आई थीं और आवाज भर्रा रही थी। मेरी भी आँखें पनीली हो गयीं।'

तेजपुर में मेरा रैंक लग गया और ऑफिसर्स सिंगल क्वाटरों में एक कमरा मिल गया जो मैस के पास ही था। धीरे-धीरे वहाँ सभी से जान-पहचान हो गयी।

छै महिने के बाद ही मैं लेफ्टिनेंट बन गया। इसका कारण शायद यह रहा कि ट्रेनिंग सेंटर से मेरी रिपोर्ट बहुत ही अच्छी थी। प्रमोशन के बाद मुझे सिक्युरिटी ऑफिसर की ड्यूटी सौंप दी गयी। मेरा बॉस एक मेजर थे जो बहुत ही घाघ थे। उनकी नज़रों से बचना बहुत कठिन था। उनका कहना था कि हर व्यक्ति को, चाहे वह फौजी हो या सिविलियन, उसे शक की निगाह से देखो। यहाँ तक अपने उच्च पदाधिकारियों पर भी शक किया करो। क्या पता कल कौन आंतकवादी उनका वेश बदलकर कुर्सी पर बैठ जाये। जो हैं, उनका बोलने का तरीका, हाव-भाव, चलने का तरीका अपने दिमाग में बिठा कर रखो। क्या पता किसी दिन मेरी जगह कोई मेरा हमशक्ल बैठा हो। अतः हमेशा सावधान और चौकन्ने रहो।'

उनकी ये बातें सुनकर मैंने अमल करन शुरू कर दिया। डेढ़ साल बाद मेरा फिर प्रमोशन हुआ और मेरी पोस्टिंग मुंबई हो गयी। यहाँ मैं आर्मी सिक्युरिटी डिपार्टमेंट में हूँ।'

एस.पी. ने पूछा - 'आपको तो मैस में जगह मिली होगी। फिर आपने मकान क्यों लिया और शांता बाई को मेड क्यों रखा?'

वह सिर झुका कर बोला - 'मैंने यहाँ आकर बड़ी भाभी को फोन किया कि मैं मुंबई आ गया हूँ। वे बहुत खुश हुई और

बोलीं - 'चल बड़ी खुशी की बात है आशी। मैं खुद मुंबई देखना चाहती थी। मेरा मन था कि मैं विघ्नेश्वर मंदिर देखूं, देवी का मंदिर, ऐलीफिंटा और द्वारका मंदिर देखूं। लेकिन हम रहेंगे कहाँ। मैस में जगह मिल जायेगी? कम से कम महीना भर तो रहना ही पड़ेगा।'

मैंने भाभी से कहा कि चिंता न करें। मैं सब मैनेज कर लूंगा। जब छोटी भाभी को बताया तो वो भी खुश हुईं और बोली - 'जब बड़ी भाभी के आने का प्रोग्राम होगा, उसी वक्त मैं भी आ जाऊंगी। इस विषय में मैं भाभी से बात कर लूंगी।'

मैं खुश था। मैस में कमरे थे लेकिन उनमें एक हफ्ते से अधिक गेस्ट नहीं ठहर सकते थे। तब मैंने मकान के लिये आवेदन दिया और मुझे हैदराबाद स्टेट में एक्स ब्लॉक में मकान मिल गया। यह तीसरी मंजिल पर दो बैडरूम का है। मैंने सोचा बड़ी भाभी बाहर का खाना रोज-रोज तो नहीं खायेंगी। इसलिये मैं घर में सभी कुछ का इंतजाम कर दिया। गैस-चूल्हा, थोड़े से बरतन, फ्रिज, वाशिंग मशीन, बैड, टेबल, सोफा। अर्थात् सब कुछ जो एक गृहस्थी को चाहिए।

उसके बाद मैंने एक मेड के बारे में सोचा। मैंने वहाँ आने वाली कई मेडों से पूछा। लेकिन उन्होंने अपनी असमर्थता जताई। वे पहले से दो-दो या तीन-तीन घरों में कार्य कर रही थीं। जब मैं परेशान हो गया तो मैंने मकान के गार्ड से कोई काम वाली बाई ढूंढने की विनती की। उसने मेड लाने का वादा किया।

इतवार का दिन था, जब गार्ड शांता बाई को लेकर आया था। 'आप इससे बात कर लीजिये। जो-जो आपको कराना है, इसे बता दीजिये। कितना लेगी वह भी पूछ लीजिये।'

'तुम थोड़ी देर यहीं रूको। तुम्हारे सामने ही बात करूंगा।' मैंने कहा तो वह रूक गया। मैं उन्हें ड्राइंग रूम में ले गया।

मैंने शांता से कहा - 'देखो, झाड़ू-पोंछा है, नाश्ता और लंच और शाम का डिनर बनाना, बरतन और कपड़े धोने हैं। बस इतना-सा काम है।'

शांता ने एक बार चारों ओर देखा। फिर रसोई घर में गयी। वाशरूम में जाकर वाशिंग मशीन देख आई। फ्रिज खोलकर उसके अंदर झांक कर देखा। सब देखने के बाद उसने पूछा - 'इससे पहले आप कहाँ खाते थे सा'ब?'

'मैस में खाता था?' क्यों मैंने आश्चर्य से पूछा।

'घर में तो कुछ भी नहीं है।' वह हंसकर बोली - 'न राशन है, न सब्जी है, नमक और मसाले भी नहीं है। मैं खाना कैसे बनाऊंगी? झाड़ू नहीं है तो सफाई कैसे करूंगी। साबुन आदि नहीं है तो कपड़े कैसे धोऊंगी?'

मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ। मैंने जेब से एक हजार रूपये निकाले और उसकी ओर बढ़ाते हुए मायूस स्वर में बोला - 'तुम जब कल आओ तो थोड़ा बहुत सामान ले आइएगा।

मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि ये सामान भी चाहिए। प्लीज़ आप ले आना।'

नोट लेकर उसने पूछा - 'शाम को आप घर पर नहीं रहेंगे सा'ब?'

'रहूँगा।' मैंने कहा।

'ठीक है। मैं शाम को थोड़ा-बहुत सामान ले आऊंगी।'

कहकर वो गार्ड के साथ चली गयी।

शांता ने घर की काया पलट कर दी। मैं सुबह नाश्ते में ब्रेड और मक्खन लेता था। वह उसे बंद करवा दिया। इतवार को उसकी छुट्टी रहती थी। उस दिन मैं नाश्ते में ब्रेड ले लेता था। एक इतवार को वह कुछ सामान लेकर आई थी। रसोई घर में ब्रेड देखकर वह क्रोधित हो गयी और मुझे डांटते हुए बोली - 'आपको अपनी सेहत का कोई ध्यान नहीं है क्या? क्यों अपना पेट खराब करने पर तुले हैं। यदि ब्रेड ही खाना है तो मेरी क्या जरूरत है। लंच और डिनर भी ब्रेड का ही कर लो। खबरदार जो आज के बाद ब्रेड इस घर में आई तो।' और उसने वह ब्रेड बाहर जाकर कुत्तों को डाल दिया। उसके बाद उसने मोटी-मोटी छै रोटियां बनाई और सब्जी तैयार कर, मेरे पास आकर गुस्से से बोली - 'रोटी-सब्जी बनी है। खा लीजियेगा। शाम को मैं नहीं आऊंगी।'

मैं सिर नीचा किये उसे जाता देखता रहा। उस दिन मुझे अपनी माँ की बड़ी याद आई। माँ भी कभी ब्रेड नहीं खाने देती थी।

बड़े भैया को राशन में दो ब्रेड मिलते थे। हम लोग ललचाते थे। लेकिन माँ वो ब्रेड काम करने वाली मेड को दे देती थी। वो भी कहती थीं कि ब्रेड से पेट खराब होता है और सेहत भी खराब होती है। बस, उस दिन से मैं उसे मम्मी कहने लगा। एक दिन शांता ने कहा भी था - 'मैं आपसे छोटी हूँ। आप मम्मी कहते हैं। मुझे शर्म आती है। मम्मी मत बोला कीजिये सा'ब।

मैं उसके चेहरे की ओर देखकर बोला - 'आप बिल्कुल मेरी माँ की तरह मुझे डांटती हो, खाना खिलाती हो। मेरे सारे काम करती हो। ब्रेड नहीं खाने देती हो। बिल्कुल मेरी माँ की तरह। फिर मैं क्यों न कहूँ।'

'मैं आपसे छोटी हूँ।'

'तो क्या हुआ। मेरी देखभाल तो आप ही करती हो। मेरे सुख-दुख का ध्यान रखती हो। मैं तो कहूँगा।'

कुछ देर तक वह मेरा चेहरा देखती रही। फिर मुस्कुरा कर रसोई घर में चली गयी।

'बस तब से मैं उन्हें मम्मी कह कर बुलाता हूँ। सर, आज मेरी माँ दुबारा मर गयी है।' कह कर कैप्टन फिर रोने लगा।

एस.पी. ने उसे सांतवना दी और बोला - 'हम पूरी कोशिश करेंगे अपराधी को पकड़ने की।

'क्या मैं अपने तौर पर छान-बीन कर सकता हूँ? कैप्टन ने पूछा और आगे बोला - 'मैं उसे छोड़ूंगा नहीं। चाहे वह पाताल लोक में ही जाकर छुप जाये। ढूंढ निकालूंगा उसे। बहुत जल्द।'

कैप्टन का चेहरा कठोर हो गया।

----****----

# 4

पोस्टमॉर्टम के हिसाब से हत्या रात बारह-एक बजे के बीच में हुई थी। गले के पास जो छूरे का वार हुआ था, उससे उसकी सांस की नली कट गयी जिससे मृत्यु हो गयी थी। छाती और पेट पर जो घाव हुए थे, वे अधिक घातक नहीं थे। डाक्टर के अंदाज़ से ऐसा लगता था कि हत्या करने वाला कोई ऐसा व्यक्ति था, जिसे शांता जानती थी। खून के कुछ छींटे खाट के नीचे, लाश से करीब चार फूट दूरी पर भी मिले। उन खून के सैम्पल भी डाक्टर मृतिका के खून से मिलन करने के लिये ले गये थे। उसकी रिपोर्ट वे एक दो दिन में देने को कह रहे हैं।

कैप्टन खड़ा हुआ और बोला - 'लाश तो अब कल ही मिल पायेगी और शायद कल ही शमशान घाट ले जायेंगे। मुझे ऑफिस जाना है। इसलिये मैं चलता हूँ। सर, मैं भी इस केस पर काम करना चाहता हूँ। अपने तरीके से। क्या आप मुझे मदद देंगे?'

एस.पी. ने सिर हिला कर कहा - 'हम आपकी हर संभव मदद करेंगे। लेकिन आपको भी हमें हर उस बात की खबर देनी होगी जो आपको पता चले।'

'बिना बताये और बिना आप लोगों के साथ सलाह किये, मैं कर ही क्या सकता हूँ। मैं फौजी हूँ। अपनी मर्यादा नहीं छोड़

सकता। आम जनता के साथ पुलिस ही निपट सकती है। पुलिस ही पूछताछ कर सकती है। मैं नहीं।'

एस.पी. खड़ा हो गया और हाथ आगे बढ़ता हुआ बोला - 'फिर तो पुलिस आपकी हर संभव सहायता करेगी।'

कैप्टन ने एस.पी. से हाथ मिलाया। फिर डी.एस.पी और इंस्पेक्टर कामत से हाथ मिलाकर बाहर आया और टैक्सी लेकर ऑफिस की ओर चल दिया।

कैप्टन अशोक ने ऑफिस जाकर सारी बातें, अपने बॉस को बताई और दस दिन की छुट्टी की माँग की। उसका बॉस एक मेजर था। उसने पहले तो उसे मना किया कि पुलिस के मामले में हस्तक्षेप न करे। लेकिन कैप्टन अपनी बात पर अड़ा रहा तो उसने कहा - 'तुम जिद कर रहे तो सुनो। अपनी आँखें और कान हमेशा खुली रखना। पता लगाओ कि कौन-कौन कल चॉल से बाहर गया है और क्यूं और कहाँ गया है। कई बार हत्यारा दूर भाग जाता है और कई बार वह पास ही रहता है। यह सोच कर कि उसपर कोई शक नहीं करेगा। यह भी पता लगाओ कि उसका किसी लड़के से संबंध तो नहीं था। दिमाग ठंडा रखना।'

कैप्टन ने उन्हें सैल्यूट मारा और बाहर निकल गया।

मेजर साहब की यह बात उसे बहुत अच्छी लगी थी कि दिमाग को शांत रखना। वह परेशान था। दिमाग काम नहीं कर रहा था। अतः कुछ देर वह निरुद्धेश घूमता रहा। जब दिमाग कुछ सोचने

के योग्य हुआ, तो वह फिर से टैक्सी लेकर शिमला हाउस पहुंच गया। वह पुलिस स्टेशन न जाकर सीधा शांता के घर पहुंच गया। शांता के माता-पिता बाहर ही खाट पर बैठे थे। कुछ लोग और औरतें वहाँ खड़े थे।

कैप्टन को देखकर थोड़ा पीछे हट गये। शांता के पिता भी खड़े हो गये। कैप्टन ने पूछा - 'घर की सफाई कर दी है?'

'आज नहीं की है। शांता की क्रिया हो जायेगी तभी करेंगे।'

'मैं अंदर जा सकता हूँ?' उसने पूछा। फिर बिना जवाब सुने ही वह अंदर चला गया। खून से सनी चादर देखकर, थोड़ी देर के लिये उसका चेहरा मायूस हो गया। उसने फौरन अपने को संभाला और चारों ओर देखता हुआ आगे बढ़ा। जब दरवाजे के पास पहुंचा तो वह चौंक उठा। कुंडे के पास ही नीचे एक खून का दाग़ नज़र आया। और पास ही एक जूते का निशान दिखाई दिया। उसने हाथ की उंगलियों से निशान की लंबाई-चौड़ाई नापी और दिमाग में बैठा लिया।

बाहर निकलकर वह नीचे देखता हुआ आगे बढ़ा। कुछ ही दूर गया था कि उसे दो खून के निशान मिले। यद्धपि दाग़ धूल से ढंक से गये थे। वह आगे बढ़ा, किन्तु और दाग़ नहीं मिले। वह लौट आया। लोग आश्चर्य से उसे देख रहे थे। उसने पूछा - 'क्या यहाँ से कुछ लड़के कल रात बाहर गये थे?'

कुछ देर सब चुप रहे। तब एक बूढ़ी औरत ने कहा - 'कल रात मैंने किसी की आवाज तो सुनी थी।'

कैप्टन ने उतावली से पूछा - 'कब? किस समय? कुछ समय का ध्यान है।'

'न। रात काफी हो गयी थी। हम कल खिड़की बंद करके सोये थे। लेकिन ऐसा लगा कि वे सीढ़ियों की ओर गये थे।'

'क्या तुम उनकी आवाज पहचान सकती हो?' कैप्टन ने मायूसी से पूछा - 'जो भी रहे होंगे, यहीं के रहे होंगे। शायद तुमने कभी उनकी आवाज सुनी हो।'

वह चुप हो गयी। तब कैप्टन ने सभी से पूछा। लेकिन सभी ने सिर हिला कर मना कर दिया। निराश होकर वह उस बूढ़ी औरत से बोला - 'यदि तुम्हें याद आ जाये तो कल सुबह मुझे बता देना।'

फिर जैसे उसे ध्यान आया तो उसने उसके पिता से पूछा - 'क्या शांता किसी को चाहती थी?'

'नहीं, शांता ऐसी लड़की नहीं थी। उसका किसी से ऐसा-वैसा संबंध नहीं था।' उसका पिता कह कर रोने लगा। निराश होकर कैप्टन नीचे की ओर बढ़ गया।

जब वह नीचे दुकानों के बीच से गुजर रहा था, तो एक दुकान के बाहर एक बूढ़ी औरत ने उसे रोक कर कहा - 'सा'ब एक बात कहूँ।'

कैप्टन ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा तो वह बोली - 'यहाँ नहीं थोड़े आगे चलिये।' यह कहकर वह मुड़ी और पुलिस चौकी की ओर मुड़ गयी। फिर एक सब्जी की दुकान के पास रूक गयी। एक जवान लड़का सब्जी के ऊपर पानी के छींटे मार रहा था। वह उस लड़के से बोली - 'चल जा नाश्ता करके आ जाना। तब तक मैं दुकान पर हूँ। जा।'

लड़का पानी की बाल्टी वहीं छोड़कर सीढ़ियों की ओर दौड़ गया। जब वह काफी दूर चला गया, तब वह कैप्टन से बोली - 'सा'ब मैंने उन्हें देखा है। उनकी आवाज भी सुनी है। उनमें एक शंभू था और दूसरा राधे था। सा'ब, मैंने अक्सर देखा था कि वे दोनों शांता को, रात को जब वह काम से लौटती थी तो भद्दी-भद्दी बातें करते थे। एक-दो बार मैंने उन्हें झिड़का भी था।'

'तुम उन्हें जानती हो। ये शंभू और राधे कहाँ रहते हैं। कहाँ काम करते हैं।' कैप्टन ने उतावली से पूछा।

'काम क्या करते हैं, ये तो पता नहीं। शायद कहीं मजदूरी करते होंगे। रहते ऊपर चॉल में ही हैं। ऊपर जाकर जो शांता के घर के सामने जो चॉल है, उसी में बीस और अट्ठाइस नंबर घर में अपने पिता-माता के साथ रहते हैं।'

'आपने आज उन्हें देखा है?' कैप्टन ने पूछा।

'नहीं। मैंने तो नहीं देखा। शायद काम पर गये हों।'

'बहुत धन्यवाद। ये दुकान आप की ही है?'

वह मुस्कुराई और बोली - 'शांता यहीं से सब सामान लेकर नीचे जाती है। शायद आपके यहाँ ले जाती थी।' कहते-कहते उस औरत का गला भर आया।

कैप्टन कुछ सोचकर ऊपर चॉल में चला गया। भीड़ छंट चुकी थी। दो-चार ही लोग शांता के पिता और माता के पास थे। कैप्टन को फिर से आया देखकर उसके माँ-बाप भी खड़े हो गये। कैप्टन ने पूछा - 'ये बीस और अट्ठाइस नंबर घर कौने से हैं?'

एक व्यक्ति ने इशारा करके कहा - 'ये सामने बीस है और उसके आगे आठवां नंबर अट्ठाइस है।'

धन्यवाद देकर वह आगे बढ़ गया। फिर बीस नंबर वाले घर के सामने वह रूक गया। दरवाजा खुला हुआ था। उसने झांक कर देखा। एक औरत फर्श पर बैठी चावल साफ कर रही थी। वह धीरे से खंखारा तो औरत ने सिर ऊपर उठाया। कैप्टन ने पूछा - 'क्या शंभू यहीं रहता है?'

कैप्टन को पहचान कर हड़बड़ा कर उठी और बोली - 'नहीं सा'ब। शंभू तो आगे वाले अट्ठाइस नंबर घर में रहता है।'

'तो राधे यहाँ रहता है। वो तुम्हारा बेटा है?'

घबरा कर वह बोली - 'हाँ, सा'ब।'

'कहाँ है वो?'

'काम पर गया है।'

'कहाँ?'

'ये तो मुझे मालूम नहीं। मजदूरी करता है किसी ठेकेदार के पास।'

'कब आयेगा? शाम तक तो आ ही जायेगा न?'

उस औरत ने कुछ नहीं कहा। कैप्टन आगे बढ़ गया। अट्ठाइस नंबर मकान पर, जब वहाँ पहुंचा तो दरवाजे पर ताला लटक रहा था। उसने एक औरत, जो गौर से कैप्टन को देख रही थी, उससे पूछा - 'ये कहीं गये हैं क्या?'

'ये काम पर गयी होंगी। ये मेड का काम करती है।'

'उनके पति और बच्चे?'

'उसका आदमी पेंटर है। एक लड़का और लड़की है। लड़की कहीं काम करती है और बेटा मजदूरी करता है।'

'लड़का कहाँ मजदूरी करता है?'

'पता नहीं। लेकिन आज मैंने उसे नहीं देखा। शायद जल्दी चला गया होगा। नहीं तो रोज आठ-नौ बजे जाता है।'

कैप्टन सोच में पड़ गया। रात को फिर आने की सोच कर वह तेजी से मुड़ा और नीचे की ओर बढ़ गया।

एक बार उसने सोचा की पुलिस चौकी चला चले। फिर अपना विचार त्यागकर वह हैदराबाद एस्टेट की ओर पैदल ही चल पड़ा जहाँ उसका घर था।

शाम को, करीब छै बजे वह फिर चॉल की ओर चल पड़ा। वह पहले ठीक अठ्ठाइस नंबर मकान पर पहुंचा। ताला खुला था। किन्तु उसे कोई दिखाई नहीं दिया। उसने दरवाजा खटखटाया तो एक अठ्ठारह-बीस बरस की लड़की अंदर से बाहर आई। वह आश्चर्य से कैप्टन को देखने लगी। कैप्टन ने पूछा - 'आपकी माँ कहाँ है?'

'वह काम पर गयी होगी?'

'और तुम्हारा भाई शंभू?'

'वह तो ऐलीफिंटा घूमने गया है।'

'अरे, कब गया?' कल तो यहीं था।'

'नहीं सर, वह तो परसों रात ही चला गया था।'

'क्या मैं तुम्हारा घर अंदर से देख सकता हूँ?'

'क्यों? मैं घर में अकेली हूँ। थोड़ी देर में मेरे पापा आ जायेंगे। तब आप देख लेना। अभी मैं आपको अंदर नहीं आने दे सकती।' लड़की ने तुनककर कहा और द्वार बंद कर दिया। कैप्टन थोड़ी देर वहीं रूका रहा। फिर हट कर बीस नंबर मकान पर आया।

वही दोपहर वाली औरत खड़ी थी और सामने के चॉल वाली एक औरत से बात कर रही थी। कैप्टन को देखकर बोली - 'सा'ब, बेटा अभी नहीं आया है और न ही उसके पिता आए हैं।'

कैप्टन मायूस हो गया। वह वापसी की ओर चल दिया। वह वहाँ से सीधा पुलिस चौकी पर पहुंचा। इंस्पेक्टर कामत वहाँ नहीं था। केवल सब-इंस्पेक्टर वहाँ बैठा था और बाहर दो कांस्टेबल बैठे हुए थे। सब-इंस्पेक्टर उसे देखकर मुस्कुराया और खड़े होकर बोला - 'आइए सर, कहिये कैसे आना हुआ?'

बैठते हुए उसने कहा - 'इंस्पेक्टर साहब, आपको मेरा एक करना होगा। मुझे दो लड़कों पर शक है। मुझे उनकी पूरी डिटेल चाहिए। मुझे पता चला है कि वे परसों रात घर से बाहर निकले थे और अब तक घर नहीं आये। उनमें एक है शंभू जो मकान नंबर अट्ठाइस में रहता और दूसरा है राधे जो बीस नंबर मकान में रहता है। शंभू की बहन ने बताया है कि वह चार दिन पहले ऐलीफिंटा गया है। जबकि इन दोनों को हत्या की रात यहीं चॉल में देखा गया है। आप गंभीरता से छान-बीन कीजिये। साथ ही दोनों घरों की तलाशी भी लीजिये। कपड़ों पर या घर में कहीं भी खून के दाग़ मिल सकते हैं।'

आश्चर्य से सब-इंस्पेक्टर ने पूछा - 'यह सब आपको कैसे पता चला? हम भी सबसे पूछ चुके थे?'

कैप्टन ने कहा - 'बस यूंही पता चल गया। दिमाग में एक बात आई कि हो न हो हत्या किसी लड़के ने की होगी। क्योंकि शांता सुंदर और सुशील थी। मेड का काम करती थी। रात को देर से आती थी। अकेली सुंदर लड़की पर मनचले आवारा लड़के छींटाकशी जरूर करते हैं। यही सोचकर मैंने पूछा कि कोई लड़का बाहर तो नहीं गया।' तब पता चला कि रात को दो लड़के बाहर निकले थे और अभी तक वापस नहीं आये हैं।'

'आपने तो कमाल कर दिया, सर। इस ओर तो हमारा ध्यान ही नहीं गया। मैं अभी पता लगाता हूं। आप चाय लेंगे?'

'नहीं। मैं अब चलता हूँ।' कैप्टन ने उठते हुए कहा - 'एक काम करियेगा। उनकी फोटो मिले तो ले आइयेगा। उसकी फोटो कापी मुझे भी दे दीजियेगा।

'हाँ, दे दूंगा।' सब-इंस्पेक्टर ने कहा।

फिर दोनों बाहर आये। हाथ मिलाकर कैप्टन नीचे की ओर चल दिया और सब-इंस्पेक्टर एक कांस्टेबल को लेकर चॉल की ओर बढ़ गया।

----****----

# 5

रात करीब आठ बजे सब-इंस्पेक्टर का फोन आया। उसने बताया कि शंभू के घरवालों ने बताया कि वह चार दिने पहले ही घर से चला गया है। वह अपने कुछ दोस्तों के साथ ऐलीफिंटा घूमने गया है। जब वह यहाँ था ही नहीं तो हत्या वाली रात वो यहाँ कैसे हो सकता है। जिसने भी कहा कि वह यहाँ देखा गया, वे झूठ बोल रहे हैं और उसे झूठे आरोप में फंसा रहे हैं। दूसरा राधे। वह हत्या वाली रात को खाना खाने के बाद नीचे घूमने गया था। नीचे वो अपने दोस्तों से गप-शप मारकर तकरीबन रात दस-ग्यारह बजे घर आता है और सो जाता है। किन्तु दो दिन से वह घर नहीं आ रहा है। उसका फोन उसके पापा के पास आया था कि चार-पांच दिन वह रात को घर नहीं आ पायेगा। क्योंकि जिस ठेकेदार के पास वह काम कर रहा है, वहाँ काम जल्दी समाप्त करना है। अतः रात-दिन काम चल रहा है। वह रात को भी काम कर रहा है। रात को काम करने के उसे दुगने पैसे मिलेंगे।'

'वो किस ठेकेदार के पास काम करता है?' कैप्टन ने पूछा।

'कोई राधेश्याम ठेकेदार है। वो नैपियन रोड के ऊपर की ओर के बंगले में काम कर रहा है। पुराना बंगला तोड़ कर नया बनाया जा रहा है।'

'और शंभू?'

'वो हैदराबद के किसी 'टी-2' नंबर में काम करता है।'

'उसका पिता पेंटर है। वह कहाँ काम करता है?' कैप्टन ने पूछा।

'वह वहीं ऊपर वाले बंगले में, जो बन रहा है, उसमें उसने ठेकेदार से पेंटिंग का ठेका ले रखा है, और वहीं काम कर रहा है।' सब-इंस्पेक्टर ने कहा। फिर आगे बोला - 'कैप्टन साहब, मैंने दोनों घरों की अच्छी तरह तलाशी ली। मुझे वहाँ कहीं भी खून के दाग़ नहीं मिले। मैंने कोना-कोना छान मारा। कहीं कुछ नहीं था।'

कैप्टन ने कहा - 'यह जरूरी नहीं है कि खून से सने कपड़े, जूते घर में रखे हों। कहीं फेंके भी जा सकते हैं। खैर, फोटुओ का क्या रहा?'

'दोनों की अलग-अलग फोटुयें नहीं मिलीं। शंभू की एक फोटो उसकी बहन के मोबाइल में थी और राधे के घर में एक ग्रुप फोटो उसके माँ-बाप के साथ थी। दोनों के मैंने प्रिंट करवा लिये हैं। कल मैं आपको भेज दूंगा।'

'सर, सुबह आप तो काफी देर से आयेंगे?'

'अरे भाई, मैं तो चौबीस घंटे यहीं रहता हूँ। मैं चौकी के पीछे जो मकान थाने का फ्लैट है उसी में रहता हूँ। बस, अब घर जाकर खाना खाकर आराम करूंगा। आप जब भी आयें, फोन कर दीजियेगा, मैं हाजिर हो जाऊंगा।'

'और इंस्पेक्टर कामत कहाँ रहते हैं?' आश्चर्य से कैप्टन ने पूछा।

'वे सरकारी क्वार्टर में रहते हैं। नैपियन रोड पुलिस हैडक्वार्टर के पास।'

'ओह। अच्छा तो कल सुबह मिलता हूँ।' फिर कैप्टन ने फोन काट दिया।

कैप्टन अशोक सोच में पड़ गया। यदि शंभू चार दिन पहले घर से चला गया था तो उस सब्जी वाली ने किसे देखा था? क्या वह सचमुच झूठ बोल रही है? उसने कहा कि उसने शंभू और राधे को साथ जाते देखा। जबकि राधे के घरवालों का कहना है कि राधे घूमने गया था। यदि सब्जी वाली झूठ बोल रही हो तो क्यों? फिर ऊपर वाली एक औरत ने भी कहा था कि उसने हत्या वाली रात दो लड़कों की आवाज सुनी थी। तो क्या वे कोई और थे? फिर सब्जी वाली झूठ क्यों बोल रही है? क्या सच में वह किसी को बचाने के लिये झूठ बोलकर मामला तो नहीं उलझा रही है?'

सोचते-सोचते उसका दिमाग चक्कर खाने लगा। फिर उसे राधे के घरावालों के कहे शब्द याद आये। वह आजकल रात-दिन काम कर रहा है किसी ठेकेदार के पास काम कर रहा है। कुछ नाम बताया था सब-इंस्पेक्टर ने.. हाँ, राधेश्याम। क्यों न अभी जाकर पता लगाऊं। काम चल भी रहा है या नहीं।' उसने घड़ी देखी। नौ बज रहे थे। वह फौरन उठा द्वार बंद कर बाहर आया और टैक्सी

लेकर नैपियन रोड की ओर चल दिया। ऊपर आकर वह थोड़ी देर इधर-उधर घूमता रहा। उसे बंगले का नंबर नहीं मालूम था। फिर उसे मकान दिखाई दिया जिसके चारों ओर बल्लियां बंधी हुई थी। मकान के चारों और चार बल्ब जल रहे थे और गेट बंद था। उसने गेट को जोर से खटखटाया। थोड़ी देर में गेट में एक छोटी सी खिड़की खुली और एक चेहरा नज़र आया। उसने पूछा - 'कहिये, क्या चाहिए?'

कैप्टन ने पूछा - 'क्या राधेश्याम ठेकेदार हैं?'

'इतनी रात को यहाँ क्यों रहेंगे साहब। वो तो कब के घर चले गये हैं।'

'क्यों? आज रात को काम नहीं लगा क्या?' कैप्टन ने पूछा।

'रात को यहाँ काम नहीं होता। दिन में ही होता है। आप गलती पर हैं।'

कैप्टन की आँखें चमक उठी। उसने पूछा - 'सुबह कितने बजे काम शुरू होता है?'

'नौ बजे से।'

उसको धन्यवाद देकर वह मुड़ा और टैक्सी में बैठकर घर की ओर चल पड़ा। तो राधे ने झूठ बोला कि रात-दिन काम हो रहा है। मगर क्यों?

दूसरे दिन वह सुबह ही पुलिस चौकी पर पहुंच गया। इंस्पेक्टर कामत और सब-इंस्पेक्टर अभी आये नहीं थे। कल रात वाले कांस्टेबल की जगह दूसरे चार कांस्टेबल आ गये थे, जो कल दिन में भी थे। कैप्टन को देखकर उन्होंने सैल्यूट की मुद्रा में हाथ उठाये और 'अभी आता हूँ' कह कर आगे बढ़ गया। सब्जी वाली नहीं आयी थी। उसकी जगह उसका लड़का दुकान में सब्जी लगा रहा था। कैप्टन ने जब उसकी माँ के बारे में पूछा तो वह बोला - 'शांता की लाश आ गयी है। उसकी अर्थी जाने वाली है। इसलिये माँ वहाँ रूक गयी है।'

कैप्टन को जैसे एक धक्का लगा। वह बड़ी तेजी से जाकर ऊपर पहुंचा। अर्थी तैयार होकर चार लोग उठा चुके थे। वह एक ओर खड़े होकर आंसू बहाने लगा और मन ही मन बोला - 'जाओ मम्मी, ईस्वर तुम्हे शांति दे। मैं वादा करता हूँ मम्मी जी, मैं खूनी को छोड़ूंगा नहीं।'

अर्थी चली गयी। कई लोग नीचे तक गये। शांता की माँ दहाड़े मारकर रो पड़ी। कुछ औरतों ने उसे सांत्वना देकर खाट पर बिठा दिया। उसने वहाँ शंभू की माँ, राधे की माँ और सब्जी वाली औरत को भी देखा। सबके चेहरे उदास दिखाई दिये। 'क्या ये सब नाटक कर रही हैं? क्या इनमें आपस में कोई संबंध है?' सोचते हुए वह नीचे पुलिस चौकी में आ गया।

सब-इंस्पेक्टर आ चुका था। कैप्टन को देखकर वह बोला - 'बड़ी जल्दी आ गये सर। नाश्ता किया या नहीं?'

'जब नाश्ता बनाने वाली मम्मी जी ही नहीं रही तो क्या नाश्ता और क्या लंच।' कैप्टन ने फीकी हंसी से कहा। सब-इंस्पेक्टर ने फौरन एक कांस्टेबल को चाय और ब्रेड-पकोड़े लाने को कहा और टेबल की दराज से दो फोटुएं निकाल कर टेबल पर रख कर बोला - 'ये शंभू है जिसकी फोटो उसकी बहन के मोबाइल में थी। और यह जो ग्रुप फोटो है। इसमें औरत के बायीं ओर खड़ा लड़का राधे है।'

कुछ देर फोटो देखने के बाद कैप्टन ने कहा - 'आपने कहा था कि आजकल वहाँ रात-दिन काम हो रहा है। मैं कल रात वहाँ गया था। लेकिन गार्ड ने बताया कि यहाँ सिर्फ दिन में ही काम होता है। रात को वहाँ कोई नहीं रहता।'

सब-इंस्पेक्टर बोला - 'उसके माँ-बाप ने तो कहा कि वह आजकल वहीं रहकर रात को भी काम करता है। उन्होंने ऐसा झूठ क्यों बोला। मैं अभी जाकर पकड़ता हूँ।'

'किसने झूठ बोला, क्या पता। हो सकता है राधे ने ही झूठ बोला हो।'

'पर क्यों?'

'इसका जवाब तो वहीं ठेकेदार से बात करके पता चलेगा?'

सब-इंस्पेक्टर ने कहा - 'ठहरिये, चाय पी लेते हैं। तब तक इंस्पेक्टर साहब भी आ जायेंगे। तब चलते हैं।'

चाय और ब्रेड-पकोड़े आ गये। दोनों खाने लगे। उसी वक्त इंस्पेक्टर कामत भी आ गये। सब-इंस्पेक्टर ने उन्हें चाय के लिये पूछा। जो उन्होंने मना कर दिया। उन्होंने कैप्टन से कहा - 'आज सुबह-सुबह यहाँ? सब ठीक तो है न?'

कैप्टन से पहले सब-इंस्पेक्टर ने उन्हें कल रात से लेकर अब तक की पूरी बात बताई। सारी बातें सुनकर इंस्पेक्टर ने कहा - 'ठीक है तुम इनके साथ जाओ। यहाँ बाकी पूछ-ताछ मैं कर लेता हूँ। आज एस.पी. साहब भी प्रोग्रेस पूछ रहे थे। सुबह ही फोन करके मुझे बुला लिया था।'

चाय समाप्त कर दोनों उठे। एक टैक्सी लेकर और एक कांस्टेबल को साथ लेकर वे नैपियन रोड के निर्माणाधीन बंगले पर पहुंच कर उतरे। सब-इंस्पेक्टर के पीछे-पीछे कैप्टन भी गेट से अंदर चले गये।

गार्ड ने पुलिस को देख कर रोका नहीं। एक लेबर से ठेकेदर के बारे में पूछने पर वे उसके ऑफिस में जा पहुंचे। ठेकेदार राधेश्याम तीन सुपरवाइज़रों के साथ बैठा, उनसे काम के बारे में बात कर रहा था। सब-इंस्पेक्टर को देखकर वह एकदम खड़ा हो गया और आश्चर्य से बोला - 'आइए सर, आज इधर कैसे?'

'आपसे कुछ बात करनी थी। लेकिन लगता है कि आप बिजी हैं।' सब-इंस्पेक्टर ने कहा और आगे बोला - 'मैं थोड़ी देर इंतजार कर लेता हूँ।'

ठेकेदार ने जल्दी से कहा - 'मैं काम के सिलसिले में बात कर रहा था। वह बाद में भी हो सकता है।' फिर उसने तीनों सुपरवाइज़रों को बाहर जाने का संकेत किया। वे फौरन उठकर बाहर निकल गये। जब वे चले गये तो इंस्पेक्टर और कैप्टन, वहाँ बैठ गये। कांस्टेबल खड़ा ही रहा।

सब-इंस्पेक्टर ने जेब से राधे वाली फोटो निकाली और राधेश्याम की ओर बढ़ाता हुआ बोला - 'मैं इस लड़के के बारे में जानना चाहता हूँ। इसका नाम राधे है। यह आपके यहाँ मजदूरी करता है।'

राधेश्याम थोड़ी देर फोटो को देखता रहा। फिर बोला - 'मेरे यहाँ करीब सौ मजदूर काम करते हैं। मैं किसी को नहीं पहचानता। लेकिन ठहरिये। जो सुबह-शाम मजदूरों की हाजिरी लेता है, उसे पता होगा।' उसने घंटी बजाई तो एक गार्ड ने अंदर झांका। राधेश्याम ने कहा - 'हाजिरी वाले को बुलाओ। उससे कहना अपना हाजिरी वाला रजिस्टर लेकर आए।'

थोड़ी ही देर में एक अधेड़ सा व्यक्ति रजिस्टर लेकर अंदर आया। राधेश्याम ने फोटो उसकी ओर बढ़ा कर कहा - 'देखो, यह लड़का काम पर आया है?'

थोड़ी देर फोटो को देखने के बाद वह बोला - 'ये तो राधे है। बड़ा बेकार लड़का है। चार-पांच दिन से आ भी नहीं रहा है। जब

देखो, तब औरतों को उल्टा-सीधा बोलता रहता है। मैं तो सोच रहा था कि महीना खत्म हो तो इसे निकाल बाहर करूं।'

उसने रजिस्टर के पन्ने पलटे और एक नाम पर उंगली रख कर राधेश्याम को दिखाता हुआ बोला - 'यह देखिये पांच दिन से वह अपसेंट है। यह 'A' लिखा हुआ है। आज भी नहीं आया।'

'क्या आजकल आप रात को भी काम करते हैं।' कैप्टन ने पूछा।

'रात को कौन आता है? कोई नहीं। मेरा काम सुबह नौ बजे से शाम को छै बजे तक होता है। बारह बजे आधे घंटे का लंच-ब्रेक होता है। शाम को पांच बजे से हाजिरी शुरू होती है। जिनका काम तब तक हो जाता है वो साढ़े पांच बजे अपना सामान जमा करके निकलने लगते हैं। रात को यहाँ रूकने की इजाजत नहीं है सिवाये गार्ड के।'

'आपका जो कूड़ा-कबाड़ जमा होता है वह कहाँ फेंकते हो?' कैप्टन ने पूछा।

'हमने पीछे उसकी लिये जगह बना रखी है। वहीं इकट्ठा कर देते हैं। जब एक ट्रक के करीब हो जाता है। तो उसे फिकवा देते हैं?'

कैप्टन ने पूछा - 'अभी आपने कब फिकवाया?'

'यही कोई दस-पंद्रह दिन पहले।'

'क्या हम वो जगह देख सकते हैं?'

राधेश्याम जी ने एक क्षण तक कैप्टन के चेहरे की ओर देखा। फिर उठते हुए बोले - 'आइये मैं आपको वह जगह दिखाता हूँ।'

राधेश्याम के साथ तीनों बाहर निकल कर बंगले के पिछली ओर को चल दिये। पीछे करीब तीस फुट की दूरी पर दीवार थी। बंगले के चारों ओर दस फुट ऊंची दीवार थी। पीछे की दीवार के पास ही कूड़ा पड़ा था। जिसमें ईंटों के टुकड़े, मकान के दीवार का प्लास्टर, टाइल्स, टूटे वाश-बेसिन, सीमेंट के फटे बोरे और पुराने कपड़े थे। राधेश्याम जी ने कहा - 'ऐसा कबाड़ जो मकान में तोड़फोड़ से निकलता है हम यहाँ इकट्ठा कर देते हैं और बाद में ट्रक से दूर गड्ढों में डाल देते हैं।'

कैप्टन धीरे-धीरे आगे बढ़ा और एक ओर से दीवार के कोने में जाकर उस ढेर की ओर देखने लगा। वह सोच रहा था - 'क्या खून से सने कपड़े यहाँ फेंके जा सकते हैं? राधे यहाँ काम करता था और शंभू का पिता यहाँ पेंटिंग का काम करता है। दोनों के पास मौका था। लेकिन राधे तो पांच-छै दिन से काम पर आया ही नहीं। रह गया शंभू का पिता। उसकी बहन भी बड़ी तेज है।'

कैप्टन धीरे-धीरे दीवार का सहारा लेकर उस कूड़े के ढेर पर चढ़ गया और नीचे टूटी हुई ईंटों के बीच झांकता हुआ आगे बढ़ने लगा।

राधेश्याम चिल्लाया - 'सर, ये क्या कर रहे हैं। गिर पड़ेंगे।'

कैप्टन मुस्कुराया और नीचे देखता आगे बढ़ता रहा। जब ढेर के बीच में पहुंचा तो उसे ईंटों के बीच में एक लाल सा रंग दिखाई दिया। वह शायद कोई कपड़ा था, या फटा हुआ सीमेंट का बैग। वह दीवार के सहारे नीचे बैठ गया और ईंटे हटाने लगा। किन्तु वह काफी नीचे तक दबा हुआ था। उसे ईंटे और कबाड़ हटाते देख राधेश्याम ने आवाज देकर, दो मजदूरों को बुला लिया और उन्हें कैप्टन की मदद करने के लिये कहा।

दोनों मजदूर बड़ी तेजी से ऊपर चढ़ गये और सधे हाथों से उन्होंने ईंटे और कचरा हटा कर एक बोरी बाहर निकाल ली। बोरी अधिक फटी हुई नहीं थी। वह एक धागे से बंधी हुई थी। लेकिन, शायद जल्दी में बांधने से अंदर रखे कपड़े का एक टुकड़ा बाहर ही रह गया था, जिस पर खून लगा हुआ था। उसे लेकर कैप्टन नीचे आया। वे मजदूर भी नीचे उतर आये थे। कैप्टन ने बोरी सब-इंस्पेक्टर को देते हुए कहा - 'सर, देखिये इसमें और क्या है?'

सब-इंस्पेक्टर ने नीचे रखकर थैली पर बंधी पतली-सी रस्सी को खोला। एक टी-शर्ट थी, जो खून से सनी हुई थी। एक नीले रंग की पेंट थी। उस पर भी खून के दाग़ थे। और एक चप्पलों का जोड़ा था। ऐसा लगता था कि चप्पलों को पानी से धोया गया था। बोरी पर भी खून के निशान लगे हुए थे।

राधेश्याम जी हैरत से यह सब देख कर मजदूरों से चिल्ला कर बोले - 'तीनों सुपरवाइज़र को यहाँ भेजो और तुम अपने काम पर जाओ।'

दोनों मजदूर चले गये। थोड़ी ही देर में तीनों सुपरवाइज़र आ गये। राधेश्याम जी दहाड़ कर बोले - 'यह थैला यहाँ कचरे में कहाँ से आया? किसने फेंका इसे यहाँ?'

वे तीनों थैला देख कर चुप लगा गये।

'पता लगाओ ये भरा हुआ थैला कहाँ से आया और किसने यहाँ डाला है। वरना मैं तुम तीनों को पुलिस के हवाले कर दूंगा।'

वे तीनों सिर झुका कर चले गये। सब-इंस्पेक्टर ने कहा - 'इन कपड़ों का यहाँ होने का अर्थ है कि खून करने वाला या उसका कोई साथी खूनी के कपड़े घर से दूर छुपाना चाहता था। डस्टबिन में डालता तो हल्ला मच जाता।'

कैप्टन ने कहा - 'शंभू के पिता पेंटर हैं। उसने यहाँ पेंटिंग का ठेका ले रखा है। वह भी हो सकता है। बेटे को बचाने के लिये यहाँ डाल दिया हो।'

थोड़ी ही देर में एक सुपरवाइज़र ने आकर कहा - 'सर, कुछ पता नहीं चल रहा है। मैंने सब से पूछ लिया है। किसी ने इस तरह का थैला नहीं देखा है।'

'तो क्या आसमान से टपका है। पेंटर को बुलाओ। उसका कोई हेल्पर है तो उसको भी बुलाओ।' राधेश्याम गुस्सा से बोला।

कैप्टन ने कहा - 'सर, इन कपड़ों को शंभू के घरवालों और राधे के घरवालों को दिखाइये। शायद वो पहचान जायें।'

सब-इंस्पेक्टर चिंतित स्वर में बोला - 'उनके लड़के के होंगे, तो मानेंगे क्या?' साफ कह देंगे कि हमारे नहीं है। फिर भी मैं उनको दिखाऊंगा। उसके बाद ही इन्हें फारेंसिक लैब में यह जानने के लिये भेजूंगा कि यह खून शांता के खून से मेल खाता है। क्या अब हम चलें?'

कैप्टन कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला - 'चलिये।'

कांस्टेबल ने थैला उठाया और दोनों राधेश्याम जी के साथ उसके ऑफिस तक आए। फिर हाथ मिलाकर गेट की ओर बढ़े, जहाँ टैक्सी खड़ी थी। गेट के गार्ड ने सब-इंस्पेक्टर को सैल्यूट किया तो कैप्टन ने उससे पूछा - 'रात यहाँ कोई आया था क्या?'

गार्ड अदब से बोला - 'सर, मेरी ड्यूटी आठ बजे तक रहती है। उस समय तक कोई नहीं आया था। मिस्त्री मजदूर सब छै बजे तक ही चले गये थे। ठेकेदार और सुपरवाइज़र भी सात-साढ़े सात बजे तक निकल गये थे।'

'रात को कौन रहता है?'

'आजकल किशन रहता है।'

'कहाँ, बिहार के रहने वाले है क्या?'

'यहाँ, जितने भी गार्ड हैं सब बिहार के हैं, सर।'

'गुड।' मुस्कुराता हुआ कैप्टन बोला और टैक्सी की ओर बढ़ गया। टैक्सी में बैठकर वापस शिमला हाऊस पुलिस स्टेशन पहुंचे।

इंस्पेक्टर वहीं बैठा था। सब-इंस्पेक्टर ने पूरी बात बता कर थैला खोला और खून से सने पैंट, टी-शर्ट दिखाए। फिर बोला - 'सर, एक बार ये कपड़े उनके माँ-बाप को दिखा कर तस्दीक कर ली जाये। फिर इन्हें फारेंसिक के पास भेज देते हैं।'

'क्या वे मानेंगे?' मैंने शंभू के पापा से जब पूछा कि शंभू कहाँ है तो उन्होंने भी यही बात कही कि वह पांच-छै दिन पहले अपने दोस्तों के साथ ऐलीफिंटा घूमने गया है। कब तक आएगा पता नहीं। राधे की माँ का भी यही कहना है कि उसका फोन आया था, तो वह बोला था कि रात-दिन काम चल रहा है। धमकी का भी कोई असर नहीं हुआ। उल्टा राधे की माँ रोने लगी। वह यह सोच कर पागल सी हो गयी है कि जब काम नहीं चल रहा था, तो उसने झूठ क्यों बोला और अब वह कहाँ है। राधे की माँ पागलों की तरह अपने आदमी को ढूंढने नीचे गयी है। शायद आती ही होगी।'

सारी बातें सुनकर कैप्टन भी सोच में पड़ गया। बारह बज चुके थे। वह इजाज़त लेकर उठ गया। इंस्पेक्टर ने चाय के लिये पूछा। लेकिन उसने मना कर दिया।

सारे रास्ते वह सोचता रहा - 'यदि शंभू ऐलीफिंटा गया है तो इतने दिन वहाँ क्या कर रहा है। अब तक तो उसे वापस आ जाना था। कहीं ऐसा तो नहीं कि खून करने के बाद वह कहीं और भाग गया हो। गोवा, पूना, या कहीं और जहाँ से वह पकड़ा ना जा सके। जहाँ उसे कोई न जानता हो। राधे भी यहाँ नहीं है। कहीं ऐसा तो नहीं कि दोनों साथ ही भागे हों। अर्थात् दोनों ने मिलकर हत्या की हो। वह उस रात घर में अकेली थी। दोनों बलात्कार के उद्देश्य से उसके घर में घुसे हों। वह चीखने लगी हो और दोनों उसे मार कर भाग गये हों। या उनके माँ-बाप ने उन्हें भागने में मदद की हो। नहीं तो दोनों गायब कैसे हो सकते हैं। उस सब्जी वाली ने भी कहा था कि दोनों शांता को आते-जाते अश्लील शब्दों का इस्तेमाल करते थे।'

उसने निश्चय किया कि कल वह गेटवे ऑफ इंडिया पर जाकर नाव वालों से पूछताछ करेगा। जो वहाँ से ऐलीफिंटा के लिये यात्रियों को ले जाते हैं।

वह घर पहुंचा। अकेला इतना बड़ा घर काट खाने को आ रहा था। वह बिना कुछ खाये ही पलंग पर लेट गया। कुछ ही देर में वह सो गया।

वह शाम को करीब छै बजे उठा। उसने चाय बनाई और बिस्कुटों का डिब्बा लेकर ड्राइंग रूम में बैठ गया। वह चाय पीकर तैयार हुआ।

तभी इंस्पेक्टर का फोन आया। वह बोला - 'राधे के पिताजी जो मजदूरी करते हैं, अपनी पत्नी के साथ आए थे। वे ऊपर बंगले पर भी हो आए। जहाँ उन्हें पता चला कि वहाँ रात को काम नहीं होता। और राधे करीब पांच छै दिन से गैरहाजिर है। दोनों बहुत रो रहे थे। उनके पास से राधे का फोन नंबर मिल गया है। मैंने दिन में ही उसे हैडक्वार्टर भेज दिया है सर्विलेंस के लिये। उम्मीद है कि कल तक उसकी लोकेशन का पता चल जायेगा। दूसरा आज पेंटर घर पर ही था। सुबह पेंट खरीदने के लिये बाजार चला गया था और पेंट बुक कर वापस आ गया था। कपड़े उसे दिखाये थे किन्तु उसने कहा कि ये कपड़े और चप्पल शंभू के नहीं हैं। वह कभी चप्पल पहनता ही नहीं है। राधे के पिताजी और माँ को कपड़े दिखाये थे। उन दोनों ने भी कपड़े पहचानने से इन्कार कर दिया। चप्पलें देखकर बोले कि उनका बेटा सिर्फ सफेद चप्पलें पहनता है। उसे सफेद रंग के जूते और चप्पल ही पसंद हैं। एक जोड़ी चप्पल और दो जोड़ी जूते घर में पड़े हुए हैं। चप्पल-जूते गंदे हो जायें तो रात को ही धोकर साफ कर देता है। मामला उलझ गया सर।'

'तो दोनों गये कहाँ?' कैप्टन ने हैरानी से पूछा।

'शंभू की लोकेशन का पता लग जाये, तब राधे का भी पता चल जायेगा।'

फिर कॉल बंद कर वह गहरी सोच में पड़ गया।

ठीक आठ बजे वह उस बंगले के गेट पर पहुंच गया। अभी सुबह वाला ही गार्ड वहाँ था। कैप्टन को देखकर उसने गेट खोल दिया और सैल्यूट मारते हुए बोला - 'सरजी, किशन आता ही होगा। पांच-दस मिनट की देरी तो हो ही जाती है। आप बैठिये। वह आता ही होगा।'

उसका इतना कहना था कि एक छरहरे बदन का व्यक्ति गार्ड की ड्रेस पहने वहाँ आ गया। गेट खुला देख कर उसने पूछा - 'रनवीर ये गेट खुला क्यों है। क्या सेठजी अभी अंदर ही हैं?'

'नहीं, ये साहब तुझसे मिलने आये हैं।' फिर उसने सुबह की पूरी बात बता कर कहा - 'ये तुझसे कुछ पूछेंगे।'

किशन ने गौर से कैप्टन को देखा। फिर बोला - 'आप कल रात भी आए थे शायद?'

'हाँ, मैं कल रात ये पूछने आया था कि क्या यहाँ रात-दिन काम होता है।' तब तुम्हीं ने कहा था कि नहीं होता। किन्तु आज मैं कुछ और पूछने आया हूँ। तुम पहले रनवीर को विदा तो करो।'

'मेरे चिंता न कीजिए सर। हम चारों गार्ड साथ ही रहते हैं।' रनवीर ने कहा।

'क्या मतलब? तुम चार हो? यहाँ तो मुझे दो ही दिखे। एक तुम और किशन। बाकी दो कहाँ काम करते हैं?' हैरत से कैप्टन ने पूछा।

रनवीर ने हंस कर कहा - 'एक गार्ड सुबह छै बजे से ड्यूटी पर लग जाता है। उसका काम ऑफिस की सफाई करना और चाय-पानी देना। दूसरा भी सुबह ही आता है और लेबर की चौकसी करता है। कोई सामान उठा न ले जाये। ट्रक आदि आते हैं। उनका माल चैक करना आदि काम उसका होता है।'

'तो रात को किशन अकेला रहता है?'

'हाँ, एक हफ्ते वह अकेला रहेगा। उसके बाद उसकी ड्यूटी दिन की हो जायेगी। फिर वो दिन वाली ड्यूटी पर आयेगा। मैं रात वाली पर, ऑफिस वाला लेबर के साथ और किशन ऑफिस ड्यूटी पर।'

थोड़ी देर सोच कर कैप्टन ने किशन से पूछा - 'किशन, इसका मतलब यह है कि एक हफ्ते से तुम ड्यूटी पर हो। यह बताओ कि यहाँ अंदर जाने के लिये कोई और भी रास्ता है जहाँ से पीछे जा सकें?'

दोनों गार्ड एकसाथ बोले - 'नहीं, पीछे से कोई रास्ता नहीं है। सिर्फ यही एक गेट है। बस।'

'और जो पीछे गांव में या चॉल मे रहते हैं और उधर से आते हैं। वे कैसे आते हैं?'

किशन ने जवाब दिया - 'कुछ मजूदर नीचे से सीढ़ियों के रास्ते, किनारे के बंगलों के बीच से सड़क पर आकर यहाँ आते हैं। और जो लोग चॉलों में रहते हैं वे नीचे जनशौचालय के किनारे बनी

पगडंडी से इधर दायीं ओर वाली जगह से निकल कर यहाँ आते हैं। आप देख सकते हैं कि सभी बंगलों की चार दीवारी के बीच में थोड़ी सी जगह खाली है। यह इसलिये है क्योंकि सीवर लाइन वहीं बिछी हुई हैं। बंगलों का गंदा पानी उन्हीं सीवरों में आता है और वहाँ से नीचे चला जाता है।'

कैप्टन ने सोचते हुए कहा - 'इसका अर्थ है कि कोई बीच से आ सकता है। लेकिन, अंदर गेट से ही जायेगा।'

दोनों ने एक स्वर में कहा - 'हाँ, ऐसा ही है।'

'अच्छा किशन, मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। तुम बहुत सोच-विचार कर उसका जवाब देना। झूठ मत बोलना। आज से पांच-छै दिन पहले की बात है। क्या रात के नौ-दस बजे कोई आया था? कोई मर्द या औरत?' कैप्टन ने उसके चेहरे की ओर देखा।

किशन चुप रहा। ऐसा लगता था जैसे वह कुछ सोच रहा था। तभी रनवीर गार्ड ने धीरे से उससे कहा - 'ये सा'ब सुबह पुलिस के साथ आये थे। ठेकेदार इन्हें लेकर पीछे गये थे। कोई आया था तो सच बता दो। कहीं तुम पुलिस के चक्कर में पड़ गये तो लेने के देने पड़ेंगे। इसलिये सोच कर बोलो।'

किशन ने उसकी बात सुनी तो वह डर गया। उसका चेहरा सफेद हो गया। वह हकलाते हुए बोला - 'सर, यह चार दिन पहले की बात है। करीब नौ बजे रात को एक औरत रोती हुई आई थी।

उसने अपनी बगल में एक छोटी बोरी दबा रखी थी। वह रोते-रोते कह रही थी - 'भैया मेरा आदमी अभी तक घर नहीं आया। उसको देर तक काम करना था, तो मैं चली गयी थी। मैं भी यहीं काम करती हूँ। जरा तुम जाकर अंदर कमरों में देख दो। कहीं पीकर तो नहीं पड़ा है। मेरे को डर लग रहा है। वैसे वो काम के समय कभी नहीं पीता। लेकिन, क्या पता किसी ने पिला दी होगी। थोड़ी सी पीने के बाद ही वह लुढ़क जाता है।'

मैंने उसे झिड़क कर कहा - 'यहाँ से सब चले गये हैं। होगा कहीं रास्ते में पड़ा हुआ। कल सुबह आके देख लेना।'

'इस पर वह जोर-जोर से रोने लगी। मुझे दया आ गयी। मैंने गेट खोल कर उसे अंदर बुला लिया और बोला - 'देख, मैं गेट छोड़ कर नहीं जा सकता। तू तो यहाँ काम करती है, जा देख ले और जल्दी वापस आ। वहीं देखना जहाँ वो काम कर रहा था।'

वह बोली - 'दारू पीने वालों का कोई भरोसा थोड़े ही है। मैं कमरे भी देख लूंगी। वहाँ न मिला तो चारों ओर देख लूंगी। मैं अभी आई।' और वह अपने आंसू पोछते हुए बंगले के बगल से चली गयी। करीब पंद्रह मिनट बाद वह रोती हुई आई। मैंने पूछा क्या हुआ? मिला?' वह दहाड़ मारकर रो उठी और न में सिर हिला कर, यहीं नीचे बैठ गयी। मैंने उसे सांत्वना देकर कहा - 'चिंता मत कर, वह अब तक घर पहुंच गया होगा। कल सुबह आकर देख लेना, अगर घर न पहुंचा होगा तो। जा अब तू बाहर निकल और घर जा।'

फिर वह बाहर निकली तो मैंने देखा उसके पास जो थैली थी वह नहीं है। तो मैंने उससे पूछा - 'अरे, तेरा थैला कहाँ है। कहाँ छोड़ आई उसे?'

'मरद को ढूंढने के चक्कर में थैला पता नहीं कहाँ छोड़ आई। अब सुबह आके ही ले लूंगी। कुछ आलू-प्याज और सब्जी थी।' वह जाने लगी तो मैंने कहा - 'जा अभी ले आ। सुबह तेरे आने से पहले किसी को मिल गया तो वो ले लेगा।'

'जब मरद ही नहीं मिलेगा, तो बनाऊंगी किसके लिये। मैं देखती हूँ कहीं रास्ते में न पड़ा हो।' यह कहते हुए वह दाहिनी ओर की पगडंडी से चली गयी।'

डर से उसकी जुबान कांप रही थी। कुर्सी से उठकर कैप्टन ने कहा - 'चिंता मत करो। तुमने एक अहम बात बताई है। लेकिन आगे से ध्यान रखना। यदि ऐसा मौका आता है तो गेट बंद करके साथ जाया करो। क्या तुम उस औरत को पहचान सकते हो?'

कांपना बंद कर वह थोड़ा हिचकिया और बोला - 'मैं कह नहीं सकता कि मैं उसे पहचान सकता हूँ या नहीं। फिर भी मैं कोशिश करूंगा। शायद, जब वह मुझे दिखाई दे तो उसकी चाल-ढाल देखकर या आवाज सुनकर उसे पहचान लूं।'

'तुमने उसका नाम पूछा था?'

'नहीं।'

कैप्टन ने कहा - 'ठीक है। पुलिस तुमसे पूछताछ करेगी। तुम्हारा ब्यान लेगी। तुमने अभी मुझे जो कहा, वह सच-सच बता देना।' फिर उसने पूछा - 'अपना फोन नंबर मुझे दे दो। जरूरत पड़ी तो मैं तुमसे बात कर लूंगा।'

किशन ने अपना फोन नंबर दिया और उनसे विदा लेकर गेट से बाहर आकर पैदल ही घर की ओर चल दिया।

----****----

# 6

दूसरे दिन सुबह ही कैप्टन गेटवे ऑफ इंडिया पर पहुंच गया। इतनी सुबह भी वहाँ खूब चहल-पहल थी। यात्री स्टीमरों में बैठ रहे थे। कुछ ऐलीफिंटा जा रहे थे और कुछ समुद्र की सैर को। प्रायः लोग अपने परिवार के साथ थे। ये स्टीमर डबल डेकर टायप के थे। उनमें खाने-पीने की सामग्री भी थी। कई बच्चे नमकीन खा रहे थे। उनके हाथों में नमकीन के पैकेट थे।

कैप्टन कुछ देर लोगों को चढ़ते उतरते देखता रहा। फिर वह वहाँ से बाहर आकर एक फोटोग्राफर के पास पहुंचा जो कमर्शियल किस्म का था। उस वक्त वह एक लड़की और उसके साथ जवान लड़के की फोटो खींच रहा था। फोटो खींचने के बाद वह बोला - 'आप या तो अपना पता दे दीजिये या कल आकर अपनी फोटो ले जाइये। जैसा आपको उचित लगे, वैसा कीजिये।'

लड़के ने अपना पता उसे लिखवाया और बोला - 'आप इसे कल न भेजियेगा। यदि हम मुंबई में ही रहे तो कल खुद आकर ले जायेंगे।'

जब वे चले गये तो कैप्टन उसके पास गया। कैप्टन को देखते ही फोटोग्राफर बोला - 'आइये साहब कैसी फोटो खिंचवायेंगे?'

'मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। आप सुबह से शाम तक यहीं रहते हैं न।'

'जी हाँ। मैं सुबह छै बजे से शाम छै बजे तक इसी एरिया में रहता हूँ। उसके बाद घर चला जाता हूँ।'

कैप्टन ने जेब से शंभू और राधे की फोटो निकाली और उसे देते हुए बोला - 'क्या आपने कुछ दिन पहले इन लड़कों को देखा था?'

उसने फोटो को देखने से पहले शक की नजरों से कैप्टन की ओर देखा और पूछा - 'आप ये क्यों पूछ रहे हैं?'

कैप्टन ने जेब से अपना पहचान पत्र निकाल कर उसे दिखाते हुए झूठ बोला - 'मैं आर्मी से हूँ। ये दोनों लड़के आर्मी का कुछ सामान चोरी करके भागे हैं। मैं उनकी खोज कर रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि पुलिस की मदद लूं। इससे तुम्हारी बदनामी हो सकती है। अगर तुमने देखा हो तो बताओ।'

पुलिस के नाम से वह डर गया और फोटुओं को गौर से देखने लगा। कुछ देर देखने के बाद वह बोला - 'मुझे ऐसा लगता है कि इन दोनों को मैंने देखा है। लेकिन ये अकेले नहीं थे। इनके साथ तीन-चार लड़के और भी थे। पहले ये फोटो खिंचवाना चाहते थे। किन्तु न जाने क्या बात हुई कि आपस में ही झगड़ने लगे। शोर सुनकर एक पुलिसवाला इधर आ गया तो वे भाग गये।'

'यह कब की बात है?'

'ठीक से याद नहीं। ये भी इसलिये याद रह गया है कि न जाने किस बात पर वे झगड़े थे। मैं उस समय स्टैण्ड में अपना कैमरा लगा रहा था। फिर भी चार-पांच दिन तो हो ही गये होंगे।'

फोटोग्राफर के हिसाब से वे यहाँ थे तो निश्चय ही ऐलीफिंटा गये होंगे। लेकिन शंभू के माता-पिता और बहन के अनुसार वह हत्या से एक दिन पहले ही घर से निकल गया था। जबकि, राधे हत्या के बाद तक वहीं था। फिर वह यहाँ कैसे और कब आया?' सोचते-सोचते कैप्टन का दिमाग चकरा गया। उसने अपने सिर को एक झटका दिया और फोटोग्राफर को अपना मोबायल नंबर देकर बोला - 'यह मेरा नंबर है। यदि फिर दिखाई दें तो मुझे फोन करना। तुम भी मुझे अपना नंबर दो।'

फोटोग्राफर ने अपना कार्ड निकाल कर देते हुए कहा - 'सर, पुलिस को मत बताइयेगा। नहीं तो मेरा यहाँ आना बंद कर देंगे। मेरी रोजी-रोटी का सवाल है।'

कैप्टन ने हंस कर कहा - 'मुझे पता है। तभी तो मैं अपना फोन नंबर दे रहा हूँ। नहीं तो सीधे पुलिस को ही नहीं बोलता। तुम निश्चिंत रहो।'

उसके बाद अपनी दोनों फोटुयें लेकर वह चल पड़ा। गेटवे ऑफ इंडिया से बाहर आकर उधर बढ़ गया जहाँ लोगों की भीड़ थी। वह आगे बढ़ते हुए, उन लड़कों को गौर से देख रहा था जो ग्रुप में घूमते दिखते। चलते-चलते वह नारीमन प्वाइंट तक आ गया।

चलते-चलते वह थक गया था। भूख भी लग रही थी। अतः एक रेस्टोरेंट देख कर वह उसमें घुस गया। खाना खाकर उसने टैक्सी ली और घर की ओर चल पड़ा। उसे इतनी तसल्ली थी कि शंभू और राधे यहाँ तक आये थे। तो हत्यारा कौन हो सकता है?'

जब वह घर पहुंचा तो शाम के चार बज रहे थे। जाते ही उसने इंस्पेक्टर को फोन किया और सारी बात उसे बताई। सारी बातें सुनने के बाद इंस्पेक्टर ने कहा - 'आपको गेटवे ऑफ इंडिया से हमें फोन कर देना चाहिए था। उस फोटोग्राफर को दो चार दिन अंदर रखते तो वह और भी कुछ उगल देता।'

'लेकिन, फोटो देखकर पहचान गया था। वे दोनों अपने दोस्तों के साथ थे। इससे एक बात तो सच लग रही है कि शंभू घर से ऐलीफिंटा देखने निकला था।'

'लेकिन उसके घरवाले तो कह रहे थे कि हत्या की एक रात पहले निकला है। राधे का उसके साथ होने का अर्थ है कि वह हत्या के बाद घर से निकला है और दोनों साथ-साथ ऐलीफिंटा गये हैं। इससे यह भी साबित होता है कि हत्या दोनों ने मिलकर की। राधे ने घरवालों से झूठा बहाना बनाया कि रात-दिन काम चल रहा है।'

कैप्टन ने कुछ सोच कर बोला - 'लेकिन कपड़े तो एक ही जोड़ी के मिले हैं।

'हो सकता है कि दूसरी जोड़ी के कपड़े कहीं और ठिकाने लगा दिये गये हों। या जला दिये गये हों। यदि ठिकाने लगाये भी हों तो अब तक ये कहीं के कहीं पहुंच गये होंगे। समुद्र में भी डाले जा सकते हैं।

कैप्टन को गार्ड किशन का ध्यान आया तो वह बोला - 'मैंने कल रात उस बंगले के गार्ड से पूछताछ की थी। उसने बताया कि कुछ दिन पहले रात दस-बजे के आस-पास एक औरत रोती हुई आई थी और अपने मरद को ढूंढ रही थी। वह कह रही थी कि वह भी वहीं काम करती है और छै बजे घर चली गयी थी। उसके पति का काम बाकी बचा था तो वह रूक गया था। घर जाकर जब नौ बज गये तो उसे शंका हुई कि कहीं उसका मरद पीने तो नहीं बैठ गया। वह जरा सी पीकर टुन्न हो जाता है। घबड़ाहट में वह नीचे आई और सब्जी खरीदी। क्योंकि दस बजे के बाद दुकानें बंद हो जाती हैं। जब तक पति नहीं आया तो वह थैला लेकर वहाँ गयी और गार्ड से प्रार्थना की कि वह अंदर जाकर उसे ढूंढ कर ले आये। गार्ड ने गेट छोड़ना ठीक नहीं समझा और उस औरत को अंदर जाकर ढूंढने के लिये कहा। वह अंदर गयी और पंद्रह-बीस मिनट बाद रोती हुई अकेले बाहर आई। उसे अपना पति कहीं नहीं मिला था। वह थैला भी कहीं छोड़ आई थी। जब गार्ड ने थैले के विषय में पूछा, तो रोते हुए बोली की अब सब्जी का क्या करूंगी। वह तो कल भी ले जा सकती है। पहले अपने पति को तो ढूंढूं। पता नहीं किस नाली में पड़ा है। और वह चली गयी। वह उसी रास्ते से गयी

जो सार्वजनिक शौचालय के पास निकता है जहाँ से मजूदर काम पर जाते हैं।'

'इतनी महत्वपूर्ण जानकारी आप मुझे अब दे रहे हैं, कैप्टन।' इंस्पेक्टर कामत ने नाराजगी से कहा।

'क्या करता सर।' कैप्टन ने कहा। 'मैं रात बारह बजे घर आया था। उतनी रात को आपको परेशान नहीं करना चाहता था। फिर आज सुबह सात बजे मैं गेटवे ऑफ इंडिया की ओर निकल गया और अब चार बजे घर आया हूँ और आते ही आपको फोन कर रहा हूँ।'

'उस गार्ड का नाम क्या है?'

'किशन है। अभी वह ड्यूटी पर अकेला होगा। कल सुबह उसे चौकी में बुला लेते हैं। वहीं दिन में उसे दोनों औरतों से मुलाकात करवाके देखते हैं कि वह किसी को पहचान पाता है या नहीं।'

इंस्पेक्टर कुछ देर चुप रहा फिर बोला - 'कल तक किशन कहीं भाग गया तो?'

'उम्मीद तो नहीं है सर। कल उसकी छुट्टी रहेगी। मैंने उससे कहा भी था कि पुलिस उसका ब्यान लेने के लिये उसे बुलवा सकती है।'

'ठीक है फिर। अच्छा हाँ, उन कपड़ों पर लगा खून, शांता के खून से मैच हो गया। किन्तु बोरी पर लगा दाग़ मैच नहीं हुआ है।'

कैप्टन ने कहा - 'ठीक है सर, मैं कल आता हूँ।'

उसके बाद फोन बंद कर, वह चाय बनाने रसोईघर में चला गया।

दूसरे दिन वह सुबह ही चौकी पहुंच गया। सब-इंस्पेक्टर बैठा था। कैप्टन को देखकर वह खड़ा हो गया और बोला - 'आइये सर, इंस्पेक्टर साहब आते ही होंगे। आप तब तक गार्ड किशन को फोन कर दीजिये। मैंने अट्ठाइस नंबर की लेडी को रोक रखा है। वर्ना वह काम पर निकल जाती।'

कैप्टन ने हामी भरी और किशन को फोन किया। किशन ने जब फोन उठाया तो कैप्टन ने शिमला पुलिस चौकी पर बुलाया। उसने जवाब में कहा कि 'वह पंद्रह-बीस मिनट में पहुंच जायेगा।' फोन बंद करके कैप्टन ने कहा -- 'वह आ रहा है। थोड़ी ही देर में वह पहुंच जायेगा।' 'लेकिन वह औरत काम पर चली गयी तो हमें वहाँ भी जाकर देखना होगा।'

सब-इंस्पेक्टर ने सिर हिलाया और चाय के लिये पूछा। कैप्टन ने मना कर दिया। थोड़ी ही देर में इंस्पेक्टर कामत भी आ गये। नमस्ते का आदान-प्रदान करते हुए कामत ने कैप्टन से पूछा - 'क्या रहा आपके उस गार्ड का। आ रहा है?'

'जी हाँ, पहुंचने वाले होगा।' कैप्टन ने जवाब दिया।

तब कामत ने सब-इंस्पेक्टर से पूछा - 'और वो दोनों औरतें हाजिर हैं?'

'जी हाँ, कहिये तो बुला लूं।'

'नहीं।' कैप्टन ने कहा - 'गार्ड को वहीं ले चलेंगे। वहाँ वह उनकी चाल-ढाल भी देख लेगा। क्योंकि रात को वह ठीक से देख नहीं सका था।'

इंस्पेक्टर ने घूर कर कैप्टन को देखा और बोला - 'मामला ठंडा ही लगता है। जब उसने ठीक से नहीं देखा तो क्या पहचान पायेगा। हम यूंही हवा में तीर छोड़ रहे हैं।'

कैप्टन चुप रहा।

थोड़ी देर में गार्ड आ गया। वह पूरी ड्रेस में था। दरवाजे के बाहर से ही उसने सैल्यूट मारा। कैप्टन ने बताया कि यही गार्ड किशन है जो उस रात ड्यूटी पर था।

इंस्पेक्टर ने घुड़क कर पूछा - 'तुम पहचानते हो उस औरत को?'

'साहब बहुत दिन हो गये। एक औरत रोती हुई आयी थी अपने मरद को ढूंढने।'

'तो तुमने अंदर क्यों जाने दिया। लगता है तुम्हारी मिली-भगत है। तुम्ही ने उसकी पोटली छुपाई थी।' इंस्पेक्टर अग्नेय नेत्रों से उसे देखकर गुर्राया।

किशन घबरा गया। उसने कैप्टन की ओर देखकर, मिमियाते हुए कहा - 'नहीं साहब। उसने कहा कि वह यहीं काम करती है और उसका मरद भी। लेकिन वह दारूबाज है। जरा-सी पीकर टुन्न हो जाता है। अंदर ही कहीं पड़ा होगा। मैं ढूंढ कर ले आती हूँ। तो मैंने उसे जाने दिया।'

इंस्पेक्टर कुछ कहना चाहता था कि कैप्टन बोल पड़ा - 'पहले इसे उन औरतों के पास ले जाते हैं। देखें उन्हें पहचानता है या नहीं।'

कैप्टन की बात सुनकर इंस्पेक्टर ने कहा - 'ठीक है ले जाओ, लेकिन यह उस औरत को नहीं पहचानेगा। उसने पहले ही इसकी जेब गरम कर दी होगी।' फिर सब-इंस्पेक्टर को उसे ले जाने के लिये कहा।

कैप्टन भी उठ गया और दोनों उसे साथ लेकर ऊपर ले गये। पहले वे बीस नंबर वाले मकान में गये। राधे की माँ बाहर ही खड़ी थी। उसे देखते ही किशन ने ना में सिर हिला दिया। जब वे अट्ठाइस नंबर के मकान के सामने गये तो शंभू की माँ बाहर ही किसी औरत के साथ बात कर रही थी। सब-इंस्पेक्टर को देखकर उसने कहा - 'अब कितनी देर और रूकना होगा साहब। मुझे काम पर भी जाना है।'

'बस, थोड़ी देर और। शंभू आया लौट कर?'

'नहीं सा'ब।'

किशन ने उस औरत को गौर से देखा और ना में सिर हिला दिया। सब-इंस्पेक्टर कड़क कर बोला - 'ठीक से देखो। यही औरत रही होगी। फिर से देखो।'

'नहीं, सा'ब, यह नहीं थी।'

'कहीं, तुम इन्हें बचाने की कोशिश तो नहीं कर रहे हो? याद रखो तुम बचोगे नहीं।' सब-इंस्पेक्टर ने कड़क स्वर में कहा और आगे झूठ बोला - 'वे कपड़े इसी के लड़के के थे।'

गार्ड ने मायूसी से कैप्टन की ओर देखा। कैप्टन समझ रहा था कि गार्ड के हाव-भाव बता रहे हैं कि वह सच बोल रहा है। वह सब-इंस्पेक्टर से बोला - 'चलिये नीचे चलते हैं। बाकी पूछताछ नीचे कर लेते हैं।'

सब-इंस्पेक्टर मान गया और तीनों नीचे आए। सब्जी वाली औरत आ गयी थी। वह अपने लड़के से कह रही थी - 'जारे नाश्ता करके जल्दी आ जाना। मुझे पीछे डाक्टर के पास जाना है।'

लड़के ने गीले हाथों को एक कपड़े पर साफ किया और बोला - 'अब क्या है माँ? इतने दिन तो हो गये हैं। अब डाक्टर के पास जाकर क्या करोगी?'

वह औरत जोर से बोली - 'लोहा लगा है। डाक्टर कहता था इंजेक्शन लगवाना पड़ेगा। उंगली दबक कर रही है। तेरा बापू सब्जी लेकर आ जाये तो हो आऊंगी।' फिर कुछ रूक कर बड़बड़ाई - 'तुम लोगों की हरकतों से तंग आ गयी हूँ।'

किशन जो सब-इंस्पेक्टर के पीछे चल रहा था, एकदम से रूक गया। कैप्टन जो उसके पीछे-पीछे चल रहा था, उससे टकराते-टकराते बचा। उसने पूछा - 'क्या हुआ? क्यों रूक गये।'

'सर, यह आवाज बिल्कुल वैसी है जैसी मैंने उस रात उस औरत के मुंह से सुनी थी।' किशन धीरे से बोला।

सब-इंस्पेक्टर भी रूक गया। कैप्टन ने कहा - 'उस औरत का एक ही बेटा है और वो यहीं मौजूद है। फिर अभी वो लड़का ही है। अगर उसने हत्या की होती तो वो कहीं भाग जाता। तुम्हें कुछ गलती लग रही है।'

'नहीं, सर। मैं शक्ल भूल सकता हूँ लेकिन किसी की आवाज नहीं। यही आवाज थी जो रात को बंगले में आई थी। यही औरत है सा'ब।'

'अबे, अब किसी और को फंसाने के चक्कर में है क्या? चल चौकी चल। तेरा ब्यान लेता हूँ।' सब-इंस्पेक्टर ने कहा और आगे बढ़ गया। कैप्टन ने एक बार पीछे मुड़कर देखा। सब्जी वाली उसी ओर देख रही थी। कैप्टन को पलट कर देखते देख वह जल्दी-जल्दी अपनी सब्जी को इधर-उधर सजाने लगी। कैप्टन मुड़ा और उनके पीछे-पीछे चल पड़ा।

----****----

# 7

दूसरे दिन करीब नौ बजे वह ऊपर पहुंचा और सीधे सब्जी वाली दुकान के सामने रूक कर मेडिकल शॉप की ओर देखने लगा। सब्जी वाली उसे पहचानती थी। उसे दुकान की ओर देखता देख उसने पूछा - 'क्या देख रहे हो साहब?'

कैप्टन पलटा और बोला - 'दवाई लेनी थी। कल तो यह दुकान खुली हुई थी। आज बंद क्यों है।'

'दुकान ग्यारह बजे खुलती है साहब।'

'ओह! फिर तो मैं जल्दी आ गया।' कह कर कैप्टन चिंतित चेहरा बना कर पूछने लगा - 'आपने शंभू और राधे को देखा क्या? उनके घरवाले कह रहे हैं कि वे अभी तक नहीं आये हैं। शायद रात को आते होंगे और सुबह जल्दी निकल जाते हों।'

'उन्होंने शांता की हत्या की है। मैंने शंभू की माँ से पूछा था। वह कह रही थी कि हत्या से पहले ही अपने दोस्तों के साथ ऐलीफिंटा चला गया था।'

'झूठ कह रही थी वो ऐलीफिंटा जाने और आने में इतना समय लगता है क्या?'

'अब क्या कहूँ। वे तो इसी पर अड़ी है। कैप्टन ने कहा। फिर अचानक पूछा - 'अरे आपकी उंगली को क्या हुआ? चोट लगी है क्या?'

'नहीं, साहब, कुछ दिन पहले सब्जी आई थी। मेरा मरद मंडी से लेकर आता है। बोरी पर एक तार बंधा था। मैंने ध्यान नहीं दिया। जब खोलने लगी तो तार उंगली में चुभ गया। बहुत खून निकला जल्दी में मैंने एक खाली बोरी से उसे लपेट दिया। लेकिन खून बंद नहीं हुआ। तब मैं मेडिकल स्टोर में गयी। उसने एक टेप इस पर बांधा और एक गोली खाने को देकर कहा कि डाक्टर को दिखाओ। तब डाक्टर को दिखाया तब खून बंद हुआ।'

'ओह! अभी कैसा है?'

'अभी ठीक है लेकिन चबक-चबक कर रहा है। अभी समर आ जायेगा तो डाक्टर को दिखा आऊंगी।'

यहाँ कोई डाक्टर है?'

'हाँ, एक है। वह पीछे वाली चॉल में रहता है।'

'तुम्हारा एक ही बेटा है क्या?'

'हाँ, साहब, बेटा एक है और दो लड़कियां हैं। एक बड़ी वाली की शादी कर दी है। अब एक छोटी वाली है।'

'चलो, उसकी भी शादी हो जायेगी। तब बहू ले आना।' कैप्टन ने हंस कर कहा और मुड़ा तो सब्जी वाली ने पूछा - 'साहब, कल वो गार्ड क्यों आया था। जिसे लेकर आप ऊपर गये थे?'

कैप्टन चौंका और रूक गया। पलट कर पूछा - 'आपको कैसे पता कि वह गार्ड है?'

सब्जी वाली मुस्कुराई और बोली - 'अरे साहब, उसके कपड़े देखकर ही मैं समझ गयी। ऐसे कपड़े यहाँ गार्ड ही पहनते हैं। जिनकी ड्यूटी गेट पर होती है। वो सामने गेट की ओर देखिये। वहाँ जो गार्ड खड़ा है उसने भी ऐसी ही ड्रेस पहन रखी है।'

कैप्टन ने गेट की ओर देखा। फिर सब्जी वाली की ओर देखकर उसको बहलाने के लिये बोला - 'शंभू और राधे की फोटो दिखाने के लिये पुलिस ने उसे बुलाया था। राधे को तो वह पहचान गया, लेकिन शंभू को नहीं पहचान सका।'

'साहब, इतने दिन कोई ऐलीफिंटा में रह नहीं सकता। जरूर वो दोनों अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ छुपे होंगे। जब मामला ठंडा हो जायेगा तब ही लौट कर आयेंगे।'

'समस्या तो और भी है। जिस चाकू से खून हुआ है, वह भी तो नहीं मिला है। दोनों के घर दो-तीन बार पुलिस जा चुकी है।' कैप्टन ने चिंता से चेहरा लटका कर कहा।

'अरे साहब, ऐसी चीज़ कोई अपने घर में क्यों रखेगा। फेंक दिया होगा कहीं।' वह मुंह बना कर बोली।

'कहाँ फेंक सकते हैं। सारे सड़क के डस्टबिन देख चुकी है पुलिस। उसी दिन देखे थे जिस दिन खून का पता चला था। कहीं नहीं मिला।'

सब्जी वाली उसके करीब आकर धीरे-धीरे बोली - 'कहीं पानी में फेंक दिया होगा। शंभू की माँ नीचे काम करती है। उसकी बहन भी नीचे काम करती है। वहाँ से समुद्र पास है। वहाँ डाल दिया होगा। या शंभू ही ने कहीं ले जाकर फेंक दिया होगा। एक बात और सोचने वाली है साहब। भला इतनी रात को उन्हें कौन सी बस या गाड़ी मिली होगी ऐलीफिंटा जाने के लिये? जरूर दोनों रात को उसी बंगले में रूक गये होंगे और सुबह को वहाँ से भागे होंगे। फिर आने-जाने का इतना पैसा कहाँ से आया होगा? जरूर उनके माँ-बाप ने दिये होंगे।'

कैप्टन उसका चेहरा देखता रहा। उसकी बात में दम था। लेकिन गार्ड भी झूठा नहीं हो सकता। वह उस औरत की आवाज पहचानता था, जो सब्जी वाली की थी। नहीं, तो वह इस तरह न रूकता। किन्तु, इस पर हाथ कैसे डाला जाये। प्रगट में वह बोला - 'आपकी बात सही लग रही है। इस विषय में तो पुलिस ने सोचा भी नहीं।'

तभी उसका बेटा समर आ गया। उसे देखकर सब्जी वाली उससे बोली - 'तेरे बापू तो अभी आये नहीं। तू दुकान देख। मैं डाक्टर को अपनी उंगली दिखा कर आती हूँ।'

समर सत्रह-अट्ठारह साल का तंदुरुस्त लड़का था। वह पैरों में चप्पल पहने हुए था। चप्पलों को देख कर कैप्टन को उस चप्पलों की याद आ गयी जो उस बोरी में मिले थे। फिर उसने सिर को झटका देकर यह ख्याल मन से निकला दिया कि एक सी चप्पलें हो सकती हैं।

तभी सब्जी वाली बोली - 'साहब, मैं डाक्टर को दिखा आऊं।'

कैप्टन ने कुछ सोच कर कहा - 'क्या मैं आपके साथ चल सकता हूँ। मैं भी डाक्टर से दवा ले लूं। यह मेडिकल शॉप तो पता नहीं कब खुलेगी।'

वह हंसी और बोली - 'मैंने आपसे कहा था कि दुकान ग्यारह बजे से पहले नहीं खुलेगी। चलिये, आप डाक्टर के पास चलिये।'

वे दोनों ऊपर आए और सीधे गली में चलने लगे। उन दो चॉलों के अलावा वहाँ पांच और भी चॉल थे। तीन चॉल आगे जाने पर एक मकान के दरवाजे के बायीं ओर एक छोटा सा बोर्ड लगा था। उस पर मोटे अक्षरों से लिखा था 'डा. शांतनू।' नीचे लिखा था समय - 8.00 AM to 9.00 PM'

सब्जी वाली के पीछे-पीछे कैप्टन भी अंदर चला गया। एक अच्छी कद-काठी का सांवला सा, बड़ी-बड़ी मूंछों वाला व्यक्ति, सफेद कोट पहने बैठा हुआ था। सब्जी वाली अंदर उसके

पास रखे एक स्टूल पर बैठ कर अपना बायां हाथ आगे बढ़ाती हुई बोली - 'डाक्टर साहब, मेरी इस उंगली में बहुत दर्द हो रहा है। चबक-चबक हो रही है।'

डाक्टर शांतनू ने बेरूखी से कहा - 'मैंने उसी दिन कहा था कि इंजेक्शन लगवा हो। तुम मानी ही नहीं। लगता है उंगली में पस जमा हो गया है। शायद घाव पक गया है।'

'अब ये कैसे ठीक होगा। इंजेक्शन लगाना है तो लगा दो।'

'पहले देख लेते हैं।' कह कर उन्होंने एक कैंची से उंगली पर बंधी पट्टी काट कर अलग की। फिर डिटौल के पानी से साफ किया। उंगली लालिमा लिये सफेदी से फूल सी गयी थी। डाक्टर देख कर बोले - 'पहले उंगली का यह जमा खून निकालना पड़ेगा। थोड़ा दर्द होगा।'

उन्होंने एक रूई का बंडल पूरे टेबल पर फैलाया और डिटौल की शीशी के अंदर से एक सुई निकाली। फिर खड़े होकर बायें हाथ से उसका हाथ पकड़ कर बोले - 'तुम दूसरी ओर देखो। दूसरी ओर.. उस दीवार पर लगी फोटो देखो।' वह जब तक अपना चेहरा फोटो की ओर घुमाती, डाक्टर ने उसकी उंगली में सुई चुभा दी। खून मिश्रित सफेद खून पिचकारी की तरह उंगली से बाहर निकला और सब्जी वाली जोर सी चीखी।

'हो गया, हो गया। देखो कितनी पीक निकल रही है। बस समझो अब ठीक हो गया है।' कह कर डाक्टर ने एक दूसरे बंडल से

और रूई निकाल कर उसकी उंगली को जोर-जोर से दबाने लगा। जब लाल खून निकलना शुरू हो गया, तब उसने रूई से उंगली साफ की और सारी गंदी रूई समेट कर कोने में रखे डस्टबिन में डाल आया। उसके बाद दवा लगा कर पट्टी बांधी और एक इंजेक्शन लगाकर बोला - 'कल भी आकर पट्टी बंधवा जाना।' एक शीशी में से उसने पांच गोलियां दी और बोला - 'एक अभी खा लेना और कल से रात सोते समय खाना। ठीक हो जाओगी।'

फीस देकर वह जाने लगी तो कैप्टन से बोली - 'आपने दवा लेनी है साहब?'

'मैं ले लूंगा। अब तुम जाकर आराम करो।' वह चली गयी तो डाक्टर ने पूछा - 'आपको क्या चाहिए? और जल्दी न हो तो मैं पांच-दस मिनट में हाथ धोकर आता हूँ। मेरे हाथों में भी खून लग गया है। मैं अभी आया।'

कैप्टन ने हंस कर सिर हिला दिया। डाक्टर तेजी से अंदर चला गया।

कैप्टन फौरन उठा। उसने इधर-उधर देखा। जहाँ डाक्टर बैठता है उसके पीछे एक अखबार पड़ा था। उसने उसे उठा कर उसके अंदर का एक पेज बाहर निकाल कर डस्टबिन के पास आया। एक बार अंदर के द्वार की ओर देखा। डाक्टर शायद बाथरूम में था। वह दिखाई नहीं दिया। उसने डस्टबिन खोला और सारी रूई जो उसमें पड़ी थी अखबार के ऊपर डाल कर डस्टबिन

बंद कर वहीं रख दिया। फिर अखबार को लपेट कर अपनी जेब में डाला और फिर अपनी सीट पर बैठ गया। उसके बैठने के दस मिनट बाद ही डाक्टर आया।

कैप्टन ने पूछा - 'आप अकेले रहते हैं सर?'

'अरे नहीं भाई, मेरी पत्नी भी है। उसे पसंद नहीं है कि मैं डाक्टरी करूं। क्योंकि कई बार आधी रात को मरीज आ जाते हैं और सबकी नींद खराब हो जाती है। मैं एक एम.बी.बी.एस. डाक्टर हूँ। मैंने नौकरी करने के बजाय अपना क्लीनिक खोल दिया। एम.बी.बी.एस बोर्ड से इसीलिये हटा दिया कि लोग रात को तंग न करें।'

'यहाँ चलती भी है या यूंही?' कैप्टन ने हंस कर पूछा।

'बस चह ही रही है। आप कैसे आये थे?'

सब्जी वाली ने आपके बारे में बताया था। फिर उसने दवा का नाम बताया। सुनकर डाक्टर ने कहा - 'यह दवा तो साधारण गैस की है। आपके शरीर से तो नहीं लगता है कि आपको गैस हो सकती है।'

'कभी-कभी हो जाती है। हो तो दे दें।'

डाक्टर ने उठकर कैबिनेट से एक शीशी निकाली और देता हुआ बोला - 'रोज रात को खाना खाने के बाद ले लें।'

दवा लेकर और पैसे देकर वह वहाँ से विदा हुआ। बाहर आते ही वह तेजी से चौकी की ओर बढ़ा। सब्जी वाली वहाँ नहीं थी। उसका लड़का समर और एक अधेड़ व्यक्ति दुकान में थे। मेडिकल वाले की दुकान खुल चुकी थी। वह सीधे पुलिस चौकी पर पहुंचा। इंस्पेक्टर वहाँ बैठा था।

कैप्टन ने शीशी टेबल पर रखी दी और जेब से अखबार का पुलिंदा भी टेबल पर रख कर मुस्कुराते हुए बोला - 'सर, आज चाय नहीं पिलायेंगे क्या?'

हैरत से कैप्टन की ओर देखकर इंस्पेक्टर ने पूछा - 'ये सब क्या है?'

कैप्टन ने कागज का पुलिंदा खोला। खून से सनी हुई रूई देखकर इंस्पेक्टर ने कहा - 'ये क्या ले आये? कहाँ से लाये?'

अभी तो आप इसे फारेंसिक लैब भिजवायें और पता लगाइये कि क्या यह खून उससे मैच करता है जो बोरी पर लगा है। रिपोर्ट मिलने में वक्त लग सकता है। अतः उनसे प्रार्थना कीजिये कि कम से कम फोन पर रिपोर्ट दे दें।'

'लेकिन, यह खून है किसका?'

'उसी का। जिसके बारे में गार्ड किशन ने कहा था।'

'आप अभी भी उसकी बात मान रहे हैं। वह औरों को फंसाना चाहता है। उसकी बात का विश्वास नहीं किया जा सकता है।' सब-इंस्पेक्टर ने चिढ़ कर कहा।

'फिर भी आप एक बार इसे टेस्ट करवा दीजिये।'

'ठीक है। मैं अभी हेडक्वार्टर जा रहा हूँ। लेता जाऊंगा।' इंस्पेक्टर ने कहा। तभी चाय आ गयी। चाय पीते हुए कैप्टन ने कहा - 'सर, आपके पास ठेकेदार राधेश्याम जी का नंबर है। पता लगाइये उन्होंने पानी इक्टठा करने के लिये कोई जमीन में टैंक बनाया है क्या?'

'क्यों? उससे हमें क्या लेना?' सब-इंस्पेक्टर ने पूछा।

'पूछ तो लीजिये सर। आपकी बात का वह सही उत्तर देगा। यदि हो तो उससे कहिये कि वह पानी निकालने की व्यवस्था करे। हम उसे खाली करा कर देखना चाहते हैं।'

सब-इंस्पेक्टर ने इंस्पेक्टर को देखा तो उसने सिर हिला कर हामी भरी। इंस्पेक्टर ने जब फोन किया तो ठेकेदार ने कहा कि एक टैंक छै फुट लंबा, पांच फुट चौड़ा और तीन फुट गहरा बनाया है। वह टैंक मजदूरों के काम करने के बाद हाथ-पैर धोने और टाइल्स को गीला करने के काम आता है। आप उसे खाली करवाना चाहते हो, मैं अभी बंदोबस्त करता हूँ। टैंक को खाली होने में आधा घंटा लग सकता है। फोन रखने के बाद सब-इंस्पेक्टर ने कैप्टन की ओर

देखा। कैप्टन उठते हुए बोला - 'चलिये सर, उस रात हमने ठीक से तलाशी नहीं ली थी। चलिये टैंक भी देख लेते हैं।'

इंस्पेक्टर ने पूछा - 'टैंक में आपको क्या मिलेगा?'

'छूरा। वह छूरा जिससे शांता का कत्ल हुआ था। बोरी के अंदर तो वह नहीं था। फिर कहाँ गया?' सर, आप ये खून चैक करवाइये और हम दोनों टैंक देखते हैं।'

'आपका क्या विचार है। वहाँ मिलेगा?'

'आपने हर जगह देख लिया। कहीं नहीं मिला। अब वहाँ भी देख लेते हैं।'

जब वे कोठी पर पहुंचे, तो टैंक लगभग खाली हो चुका था। टैंक के नीचे टायलें रखी हुई थीं, जो एक काले रंग के तिरपाल के ऊपर रखी हुई थीं। कैप्टन ने ठेकेदार से पूछा - 'ये तिरपाल क्यों बिछा रखा है?'

'टायल खराब न हो जाये इसलिये बिछाया है। दूसरा, पानी जमीन में जाने से बच जाता है।' ठेकेदार ने बताया।

'लेकिन टायल गीला करने की क्या जरूरत है?' सब-इंस्पेक्टर ने पूछा।

'ये टायल दीवारों में लगनी है। सीमेंट के साथ लगाने से पकड़ मजबूत हो जाती है।'

'इन टायलों को बाहर निकलवाइये। हमें खाली टैंक देखना है।'

सुपरवाइज़र वहीं खड़ा था। ठेकेदार राधेश्याम ने उससे दो मजदूर बुला लाने को कहा। वह दौड़ा-दौड़ा गया और दो मजदूर लेकर आ गया। ठेकेदार ने उन्हें टायल बाहर निकालने का आदेश दिया। वे दोनों कूद कर खाली टैंक में चले गये और एक-एक करके टायल निकाल कर टैंक की मुंडेर पर रखने लगे।

टायल एक के ऊपर छै-छै रखे हुए थे। और ढेरियों के बीच में कुछ चार-पांच इंच की दूरी थी। जब एक ओर की ढेरी समाप्त हुई, तो मजदूर के हाथ दूसरी ढेरी की टायलें उठाने के लिये बढ़ा, तो उसके हाथ में एक पोलीथीन का छोटा सा बंडल आया जो धागे से बंधा हुआ था। उसने हाथ से उसे फेंकना चाहा, तो कैप्टन चिल्लाया - 'फेंको मत। लाओ मुझे दो।' और झुक कर उसके हाथ से ले लिया। सब आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगे। कैप्टन ने उसे टटोल कर देखा और आँखों में चमक आ गयी। पोलीथीन को सब-इंस्पेक्टर की ओर बढ़ा कर बोला - 'लीजिये सर, आप इसे खोल कर देख लीजिये।'

'क्या है?' सब-इंस्पेक्टर ने बंडल लेते हुए पूछा।

'वही, जिसे हम ढूंढ रहे थे।'

सब-इंस्पेक्टर जल्दी-जल्दी बंडल पर लगा धागा तोड़ने लगा, तो कैप्टन ने चेतावनी वाले स्वर में कहा - 'ठहरिये सर, ऐसे

मत खोलिये। हो सकता है कि छूरे पर उंगलियों के दाग़ होंगे। वो मिट जायेंगे। पोलीथीन पर भी दाग़ हो सकते हैं। पहले आप दस्ताने पहन लीजिये।'

सब-इंस्पेक्टर ने रूक कर कहा - 'दस्ताने तो मैं लाया नहीं।'

कैप्टन कुछ देकर तक सब-इंस्पेक्टर का चेहरा देखता रहा। फिर सुपरवाइज़र की ओर देखकर पूछा - 'यहाँ दस्ताने मिल सकते हैं?'

सुपरवाइज़र ने पहले ना में सिर हिलाया। फिर एकदम से बोला - 'सर मैं पेंटर से पूछता हूँ। वो पेंटर का काम करते समय रबर के ग्लब्स पहनता है।' और वो कोठी के अंदर दौड़ता चला गया। पांच मिनट में वह दस्ताने लेकर लौट आया।

सब-इंस्पेक्टर ने बंडल कैप्टन को धमाया और दस्ताने लेकर हाथों में पहन लिये। फिर बंडल लेकर खोलने लगा।

पोलीथीन में एक लंबा छूरा लिपटा हुआ था। देखकर सभी हैरान रह गये। ठेकेदार गरज कर सुपरवाइज़र से बोला - 'किसने डाला इसे। यह तुमने लोगों की ड्यूटी है देखने की। क्या तुम लोग यहाँ मजे करने के लिये आते हो। कोई बोरी डाल जाता है और कोई छूरे फेंक जाता है।'

कैप्टन ने उसे समझाते हुए कहा - 'इसमें इतना गरम होने की जरूरत नहीं, राधेश्याम जी। कोई दिन में ऐसा काम नहीं कर

सकता। यह काम तो रात को या शाम को जब मजूदर हाथ-पैर धोते हैं, तब हो सकता है। चलो जो हुआ अच्छा ही हुआ।'

राधेश्याम जी चुप हो गये। किन्तु चेहरा अभी भी लाल नज़र आ रहा था।

सब-इंस्पेक्टर ने कहा - 'ऐसा लगता है जैसे छूरा अच्छी तरह से साफ किया गया है।'

'कोई बात नहीं। उंगलियों के निशान तो होंगे।' छूरे की ओर देखकर कैप्टन ने कहा - 'छूरा देख कर मुझे ऐसा लगता है कि जैसे इस तरह का छूरा मैंने कहीं और भी देखा है।'

'कहाँ देखा आपने?'

'याद नहीं आ रहा है। पर देखा जरूर है। पुलिस चौकी चलते हैं। शायद तब तक कुछ याद आ जाये।'

उसके बाद वे पुलिस चौकी आ गये।

इंस्पेक्टर जा चुका था। अंदर घुसते हुए सब-इंस्पेक्टर ने चाय के लिये बोल दिया। फिर बैठते हुए उसने कैप्टन से पूछा - 'हाँ सर, आप कह रहे थे कि आपने छूरा कहीं देखा है। कहाँ देखा?'

'ऐसा छूरा मैंने यहीं कहीं किसी और के पास भी देखा था। किसके पास देखा, कब देखा, समझ नहीं आ रहा है। पर देखा जरूर है।' कैप्टन ने सोचते हुए कहा।

सब-इंस्पेक्टर ने छूरे को निकाल कर सावधानी से एक पोलीबैग में रख दिया और मोटे पैन से उस पर कुछ लिखकर इंस्पेक्टर को फोन किया। उसे सारी बता कर उसने फोन बंद किया। उसके बाद उसने उस पोलीथीन को, जिसमें छूरा रखा था, उसे भी सावधानी से लपेट कर उसे एक पोलीबैग में रखा, और उस पर भी कुछ लिखा। फिर वह कैप्टन की ओर मुड़ा और बोला - 'चाय पीजिये सर, ठंडी हो जायेगी। आपको यह कैसे पता लगा कि छूरा टैंक में हो सकता है?'

कैप्टन ने कहा - 'मुझसे किसी ने कहा था कि छूरा कहीं भी फेंका जा सकता है। शंभू की माँ और बहन नीचे काम करती हैं। वहाँ से समुद्र पास है। वहाँ फेंक सकती हैं। शंभू का पिता पेंटर है। जिस कोठी में काम करता है, वहाँ कोई टैंक होगा तो वहाँ फेंक सकता है। तब मेरे मन में खटका हुआ। समुद्र में फेंका होगा तो ढूंढना कठिन था। तो मैंने सोचा कि ठेकेदार के यहाँ बड़ा काम चल रहा है। और लेबर भी बहुत है। तो वहीं क्यों न देख लिया जाये।'

'अर्थात्, आपको किसी पर शक है?'

'शक तो है। यदि खून मिल जाये तो शक पचास प्रतिशत हो जाये। बाकी पचास प्रतिशत इस छूरे की उंगलियों पर निर्भर करता है। लेकिन समस्या यह है कि मैंने ऐसे छूरे कहाँ देखे हैं। मुझे याद क्यों नहीं आ रहा है।'

सब-इंस्पेक्टर ने कहा - 'सर जाइए और आराम से सोचिये।' फिर घड़ी की ओर देखकर बोला - 'दो बज रहे हैं। ऐसा कीजिये घर चलिये और जो भी रूखा-सूखा हो वहीं खा लेते हैं।'

'नहीं, अब मैं चलूंगा।' उठते हुए कैप्टन ने पूछा - 'शंभू और राधे तो अभी आये नहीं होंगे?'

'नहीं। उनका कोई पता नहीं।' उठते हुए सब-इंस्पेक्टर ने कहा- 'पुलिस ने अपने मुखबिरों को सावधान कर रखा है। मुझे लगता है उन्हें यहाँ की रोज-रोज की खबर मिल रही है। इसलिये वे नहीं आ रहे हैं। हमारे हिसाब से तो ऐसा लगता है कि खून उन दोनों ने मिलकर किया है। हमें पता लगा कि वे दोनों शांता को आते जाते तंग करते थे।'

'अच्छा चलता हूँ।' कह कर कैप्टन बाहर निकल गया। उसने मुड़कर सब्जी वाली की दुकान की ओर देखा वह वहाँ नहीं थी। उसका बेटा समर भी मेडिकल की दुकान के सामने खड़ा दुकान वाले से गप्पें मार रहा था। वह मुड़ा और पैदल ही घर की ओर चल दिया।

----****----

# 8

दूसरे दिन, करीब दस बजे कैप्टन शिमला हाऊस पहुंचा। चौकी में उस वक्त इंस्पेक्टर कामत और सब-इंस्पेक्टर बैठे हुए थे। वह दूसरी ओर देखता हुआ आगे बढ़ गया। चाय की दुकान के बगल में भी एक सब्जी की दुकान थी। एक मोटा सा व्यक्ति कद्दू काट रहा था। उसके हाथ में चाकू देखकर वह चौंका। वह चाकू वैसा ही था जैसा टैंक के अंदर मिला था। अब उसे ध्यान आया कि ऐसा ही चाकू उसने उस सब्जी वाली के हाथ में भी देखा था। यह उस दिन की बात है जब शांता बीमार थी और वह उसे देखने आया था।

यह ध्यान आते ही वह सीधा सब्जी वाली की दुकान पर पहुंचा। वह उसे देखकर मुस्कुरायी और पूछा - 'साहब कुछ पता चला शंभू और राधे का?'

'पुलिस जाने और पुलिस का काम। मुझे क्या करना है। आप तो मुझे ये बताओ कि आपके पास कद्दू है?'

'हाँ है। चाहिये क्या? कौन बनायेगा? दूसरी मेड रख ली क्या?' उसने एकसाथ तीन सवाल पूछ डाले।

'हाँ, आज एक को बुलाया है। बहुत दिनों से कद्दू की सब्जी नहीं खायी। शांता गयी तो सब चला गया।'

'हाँ साहब, मेरा भी नुकसान हो गया। वह सारी सब्जी मेरे यहाँ से ही ले जाती थी।' कहते हुए उसकी आवाज भर्रा गयी।

फिर वह दुकान के अंदर की ओर जाकर एक बड़ा सा कद्दू उठा लाई और पूछा - 'पूरा ही दे दूं।'

'अरे नहीं। एक चौथाई दो। अकेले ही तो खाना है।'

उसने कद्दू एक ओर रखा ओर पतली सी छूरी से उसे काटने लगी। किन्तु उस छूरी से वह कट नहीं रहा था। कैप्टन ने पूछा - 'बड़ा छूरा कहाँ गया? उससे काटो। आपकी यह छूरी तो टूट जायेगी।'

उसने बड़बड़ाते हुए छूरी वहीं पटकी और बाहर निकलती हुई बोली - 'आप रूको मैं छूरा माँग कर लाती हूँ।' वह लगभग दौड़ती हुई उस दुकान की ओर बढ़ी, जहाँ वह मोटा व्यक्ति कद्दू काट रहा था।

कैप्टन ने चारों ओर देखा। लोग आ रहे थे और दुकान के सामने से गुजर रहे थे। लेकिन किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं था। उसने जेब से अपना रूमाल निकाला और छूरी के ऊपर डाल दिया। रूमाल के ऊपर हाथ रखकर उसने उस ओर देखा जहाँ सब्जी वाली गयी थी। वह उस दुकानदार से छूरा माँगने का प्रयास कर रही थी। कैप्टन ने जल्दी से रूमाल से छूरी को उठाया और लपेट कर जेब में डाल दिया। उसके बाद वह उस दिशा की ओर चल दिया।

वह कुछ ही दूर गया था कि सब्जी वाली छूरा लेकर आ गयी। कैप्टन ने कहा - 'उसके पास भी कद्दू है। मैं उसी से ले लेता हूँ।'

वह उसे अपने पीछे आने का इशारा करके बोली - 'उसका कद्दू कच्चा है साहब। उसमें टेस्ट नहीं आयेगा। वह गलेगा भी देर से। मेरे पास जो कद्दू है, वह पक्का हुआ है। उसका स्वाद मीठा है। खराब चीज़ क्यों लोगे। आइये मैं पांच मिनट में काट कर देती हूँ।'

जब दुकान में पहुंचे और कद्दू काटने लगी तो कैप्टन ने कहा - 'तुम्हारा पास भी छूरा था। वह कहाँ गया?'

'यहीं कहीं होगा साहब। ये लड़का और बापू पता नहीं कहाँ-कहाँ चीज़ें फेंक देते हैं। मैं तो तंग आ गयी हूँ इनकी हरकतों से।'

थोड़ी देर में कैप्टन को कद्दू काट कर एक काले पोलीथीन में डाल कर दे दिया। जब वह चलने लगा तो कैप्टन ने पूछा - 'आपकी उंगली का क्या हाल है?'

'अब ठीक है साहब। आज भी पट्टी करवाकर आई हूँ।'

उसके बाद वह तेजी से पुलिस चौकी की ओर बढ़ गया।

जब वह चौकी में पहुंचा तो इंस्पेक्टर कामत और सब-इंस्पेक्टर दोनों बैठे हुए थे। कैप्टन के हाथ में थैला देख कर इंस्पेक्टर ने पूछा - 'ये क्या ले आए?'

'कद्दू है। बड़ा टेस्टी होता है।' कैप्टन ने हंस कर कहा और जेब से रूमाल निकालकर टेबल पर रख कर, उस पर से रूमाल हटा दिया। एक छूरी देखकर दोनों चौंक उठे।'

'ये क्या ले आए सर?' सब-इंस्पेक्टर ने छूरी की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

कैप्टन ने उसका हाथ झटक कर एक ओर करते हुए कहा - 'नंगे हाथ से मत उठायें, सर। इस पर उंगलियों के निशान हैं। दस्ताने पहन कर पोलीबैग में रख लीजिये और इनका मिलान उन निशानों से करवाइये जो छूरा टैंक से मिला है। देखें मिलते हैं या नहीं।'

'ये आप किससे लेकर आए हैं?' इंस्पेक्टर ने पूछा।

'माँग कर नहीं, चोरी करके लाया हूँ।'

दोनों हैरान होकर उसकी ओर देखने लगे। फिर इंस्पेक्टर ने पूछा - 'किसके यहाँ चोरी की?'

कैप्टन मुस्कुराया और बोला - 'सब बताऊंगा, सर। मुझे एक पर शक है। कद्दू लेने के बहाने उसके पास गया था। काटने के लिये उसके पास छूरा नहीं था। भला जब कद्दू बेच रहे हो तो छोटी छूरी से कटेगा नहीं। मैंने उसे छूरा लेने के लिये भेजा और छूरी उठा कर ले आया। मैंने पहले भी कहा था कि मैंने ऐसा छूरा किसी के पास देखा है। तब ध्यान नहीं आ रहा था। लेकिन छूरा देखते ही ध्यान आ गया कि कहाँ देखा था।'

इंस्पेक्टर मुस्कुराया और बोला - 'तो आपका शक उस सब्जी वाली पर है। इसका मतलब यह हुआ कि आप गार्ड की बात पर विश्वास कर रहे हैं।'

सब-इंस्पेक्टर ने दस्ताने पहने और छूरी को पोलीबैग में रखते हुए हंस कर बोला - 'चोरी करने में आप माहिर लगते हैं। डाक्टर के यहाँ से आप रूई चुरा कर ले आये और अब सब्जी वाली की दुकान से छूरी मार लाये।'

कैप्टन ने हंस कर कद्दू वाला पोलीथीन टेबल पर रख कर बोला - 'कल एक दवा के लिये एक सौ पचास रूपये खर्च किये। दवा भी ऐसी जो मेरे काम की नहीं है। आज ये कद्दू पर भी पैसे खर्च किये जो मैं खाता नहीं। अब आप ही इसे ले जाइये और इसके बाद में मुझे चाय पिलाइये।

दोनों हंसने लगे। सब-इंस्पेक्टर ने एक कांस्टेबल को चाय और ब्रेड पकोड़े का आर्डर दिया।

कुछ देर बाद कैप्टन ने इंस्पेक्टर से पूछा - 'उस खून को उन्होंने बोरी से मिलान करके देख लिया? क्या रिपोर्ट दी उन्होंने?'

'रिपोर्ट आज शाम को मिलेगी।'

कैप्टन ने आगे झुक कर कहा - 'सर फोन करके पता तो कीजिये। करीब चौबीस घंटे हो रहे हैं। रिपोर्ट जब मिले, चलेगा। वो इतना बता दें कि खून मिल रहा है नहीं।'

इंस्पेक्टर थोड़ी देर सोचता रहा। फिर टेबल पर से फोन उठा कर उसने एक नंबर डायल किया। जब दूसरी ओर से फोन उठाया तो उसने रिपोर्ट के बारे में पूछा। फिर जो कुछ उसने सुना तो उसका चेहरा खुशी से खिल गया। फोन बंद करने के बाद वह बोला - 'कांग्रेचुलेशन सर, खून मैच हो गया।'

कैप्टन के चेहरे पर खुशी की लहर आ गयी। फिर चिंतित होकर बोला - 'वह बहुत तेज औरत है। मुझे ऐसा लगता है कि खून उसने नहीं किया। खूनी कोई और है। जिसे वह बचा रही है। खैर अब उंगलियों के या हाथ के निशान मिल जाये, तब आगे की कार्यवाही सोची जाये। तब तक उस पर नज़र रखनी होगी। केवल उस पर ही नहीं, बल्कि उसके पति और लड़के पर भी।' इंस्पेक्टर ने सिर हिलाया।

'ये छूरी और छूरा आप आज ही फारेंसिक वालों को भेज दें।' कह कर कैप्टन उठ गया। तभी चाय और पकोड़े लेकर कांस्टेबल आ गया तो वह फिर बैठ गया।

'आपका क्या विचार है। क्या उसका पति या लड़का खूनी हो सकता है?' इंस्पेक्टर ने पूछा।

'क्योंकि घर में घुसकर एक अकेले की हत्या कर देना मुश्किल काम है।' कैप्टन ने कहा।

'लेकिन असंभव नहीं। ऐसे कई केस हुए हैं। जिसमें औरतों ने ही औरतों की हत्या कर दी।' इंस्पेक्टर ने कहा।

'अब हमे शंभू और राधे को ढूंढना है। शायद उनसे कुछ पता चल जाये।' कैप्टन ने कहा। फिर उठता हुआ बोला - 'एक बात तो तय हो गयी कि बोरी और कपड़े सब्जी वाली ने ही वहाँ छुपाये थे। अब चाकू का भी मिलान हो जाये तो फिर देखेंगे।' अच्छा अब मैं चलता हूँ।

फिर वह विदा होकर बाहर निकल गया।

वह धीरे-धीरे पैदल ही नीचे की ओर चल पड़ा। टुटे हुए मकान के पास वह ठिठक कर खड़ा हो गया। नीचे से पेंटर की बेटी, शंभू की बहन, कंधे पर एक बड़ा-सा पर्स लटकाये मोबाइल फोन देखते हुए आ रही थी। उसका चेहरा धूप की गर्मी से लाल हो रहा था। जब वह थोड़ा करीब आई तो कैप्टन ने पूछा - 'आप शंभू की बहन हैं न?'

वह हड़बड़ाई और कैप्टन की ओर देखा। वह उसे पहचान कर बोली - 'आप वहीं हैं जो मेरा घर देखना चाहते थे। लेकिन जब मेरे मम्मी और पापा आ गये थे तो आप नहीं आये।'

'दूसरे दिन पुलिस तुम्हारा घर देख गयी थी। इसलिये मैं नहीं आया था। वे तुम्हारे फोन से तुम्हारे भाई की फोटो भी ले गये थे।' कैप्टन ने आगे पूछा - 'तुम्हारे फोन में कोई ऐसी फोटो है जिसमें तुम्हारे भाई के साथ उसके किसी दोस्त की भी फोटो हो?'

वह कुछ देर सोचती रही। उसने अपने फोन की गैलरी खोली। कुछ देर देखने के बाद उसने फोन का मुंह कैप्टन की ओर

बढ़ा कर बोला - 'एक बार उनके कुछ दोस्त आये थे। उन्होंने हमारे घर खाना खाया था। उस समय उनकी फोटो खींची थी। यह देखिये।'

फोन अपने हाथ में लेकर उसने फोटो देखी। तीन लड़के बैठे थे। चौथा शंभू था। यह फोटो करीब एक महीने पहले की थी।

'ये लड़के यहाँ के तो नहीं लगते।'

'नहीं। ये बात कर रहे थे कि नारीमन प्वाइंट की ओर से आये थे। वह तो यहाँ से बहुत दूर है।' लड़की ने कहा।

'लेकिन तुम्हारा भाई अचानक रात को ही क्यों गया?'

'वह काम से जब घर लौटा तो पापा से ऐलीफिंटा देखने जाने के लिये बोला। पापा और माँ ने उसे सुबह जाने के लिये कहा। पर वह नहीं माना और कहने लगा कि वह यहाँ से अकेला नहीं जा रहा है। उसका एक दोस्त गाड़ी लेकर आया है। दो वहीं हैं और दो हम यहाँ से जायेंगे। रात को हम उनके घर रूकेंगे और सवेरे ही ऐलीफिंटा के लिये निकल जायेंगे। पापा ने बड़बड़ाते हुए उसे रूपये दिये और वह छै बजे ही चला गया।'

कैप्टन ने पूछा - 'क्या राधे भी उसके साथ गया था?'

'राधे को तो मैंने दूसरी सुबह देखा था। वह काम पर जा रहा था।'

'अच्छा। क्या तुमने रात को चीखने की आवाज सुनी थी?'

'मैं नौ बजे तक सो जाती हूँ। वह भी अंदर वाले कमरे में। मुझे तो कुछ सुनाई नहीं दिया।'

'लेकिन, कुछ लोग कह रहे हैं कि शंभू और राधे दोनों आधी रात में ही चले गये थे। उन्होंने ही खून किया होगा। इसीलिये भाग गये।'

'जो बोल हैं वही खूनी हो सकते हैं।' लड़की ने गुस्से से कहा - 'ऐसा होता तो राधे दूसरे दिन क्यों नज़र आया। वह भी रात को ही भाग जाता। दोनों पर झूठा लांछन लगा रहे हैं। जरूर वो इन दोनों को फंसाना चाहते हैं।'

'लेकिन लोग यह भी कह रहे हैं को दोनों शांता को आते-जाते छेड़ा करते थे। गंदी-गंदी बातें करते थे।'

'हाय राम। किसने कहा ऐसा? दोनों शांता को दीदी कहकर बुलाते थे। मैं भी दीदी कहती थी। कई बार जब मैं अकेली होती तो वे पास आकर बैठ जाया करती थी। गुंडा तो शालिनी का लड़का समर है। एक नंबर का गुंडा है। कई बार मुझे भी छेड़ चुका है। जब उसके बाप से पापा ने शिकायत की तब उसकी उन्होंने खून पिटाई की थी। कई दिनों तक वह मुझे छूरा दिखाता रहा।'

फिर वह चौंक कर बोली - 'सर, कहीं ऐसा तो नहीं कि उसी ने शांता दीदी की हत्या की हो? उनसे भी अक्सर गंदी बात कहता था, जब शालिनी आंटी नहीं होती थी और छूरा दिखाता था। तब शांता दीदी ने वहाँ से सब्जी लेना बंद कर दिया था।'

यह बात कैप्टन के दिमाग में ठहर गयी। वह सोच में पड़ गया। उसने पूछा - 'तुम्हारे पास शंभू या राधे का फोन नंबर है?'

'भैया के पास फोन नहीं है। था, लेकिन कहीं गुम हो गया था। राधे भैया का फोन उसके घरवालों के पास होगा। मेरे पास नहीं है।'

'ठीक है। अब तुम जाओ। जरूरत होगी तो फिर मिलूंगा।'

वह अपना फोन लेकर चली गयी और कैप्टन भी धीरे-धीरे घर की ओर बढ़ गया।

----****----

# 9

दूसरे दिन सुबह ही वह चॉल में पहुंच गया। राधे के पिता काम पर जाने की तैयारी कर रहे थे। कैप्टन ने उनका दरवाजा खटखटाया तो राधे की माँ बाहर निकली। वह प्रश्नात्मक दृष्टि से उसकी ओर देखती हुई बोली - 'क्या है सा'ब।'

'आपके पति से मिलना था। क्या वे हैं?'

आवाज सुनकर राधे के पिता बाहर निकल आये। उन्हे देखकर कैप्टन ने पूछा - 'तुम्हारे पास राधे का फोन नंबर है?'

'हाँ है। लेकिन उसका फोन लग नहीं रहा है।'

'मुझे वो नंबर दे दो।' उसने नंबर दिया और चिंतित स्वर में बोला - 'जब से गया है तब से उसने एक भी फोन नहीं किया। कहाँ गया? समझ नहीं आ रहा है। बस उसका आखिरी फोन उसी दिन आया था जब उसने कहा था कि रात को भी काम करेगा। आखिर उसने ऐसा झूठ क्यों बोला।'

कैप्टन मुड़ने लगा तो देखा कि सब्जी वाली अपने घर के दरवाजे पर खड़ी उसी ओर देख रही थी। कैप्टन फिर राधे के पिता की ओर पलटा और पूछा - 'तुम रात को कितने बजे घर पर आते हो?'

'तकरीबन सात-आठ बजे।'

'क्या तुमने कोई ऐसी-वैसी बात नोट की? मेरा मतलब किसी औरत को या लड़के को छूरे के साथ इधर-उधर आते जाते देखो हो।'

वह सिर हिलाकर रह गया। लेकिन उसकी पत्नी ने दरवाजे के पास से ही कहा - 'एक ही है ऐसा लड़का। वो सब्जी वाले का बेटा। अक्सर सब्जी काटने का छूरा लेकर सबको डराते हुए कहता है दूर हट जाओ नहीं तो मार दूंगा। हट जाओ यहाँ से। इसकी शिकायत मैंने उसकी माँ से की थी कि इसके हाथ में छूरा मत दिया करो, कहीं किसी को मार न दे। एक-दो बार उसने डांटा भी था। लेकिन वह अपनी माँ से भिड़ जाता था।'

वह चुप होकर सोच में पड़ गई। कैप्टन ने पूछा - 'क्या ऐसा हो सकता है कि उसने खून किया हो?'

राधे की माँ थोड़ी देर सोचती रही। कुछ सोचकर बोली - 'सा'ब, एक बार शांता ने किसी बात पर उसके बेटे समर को उसी की दुकान पर थप्पड़ मारा था। उस समय वो और उसकी माँ दुकान पर थे। शांता ने सब्जी के लिये आर्डर दिया तो छूरा हाथ में लेकर और छूरा उसकी ओर बढ़ाकर कोई गंदी बात कही थी। जिस पर शांता ने उसके गाल पर थप्पड़ मारा था। समर चिल्लाया तो उसकी माँ शांता से लड़ने लगी। शांता की बात न मानकर उसने उसे उल्टा-सीधा कहा और सब्जी देने के लिये मना कर दिया था। रात को जब शांता काम से लौट कर आई थी, तब भी सब्जी वाली ने उसे बहुत

डांटा था। वह इसी बात पर अड़ी थी कि उसने क्यों मारा। वह होती कौन है उसके बेटे को मारने वाली।'

कैप्टन ने कहा - 'एक बात समझ नहीं आई। शांता उस रात अकेली थी, तो फिर दरवाजा किसने खोला, हत्या करने वाला अंदर कैसे गया?'

'यही बात हमारी समझ में भी नहीं आ रही है सा'ब। वह ऐसी लड़की नहीं थी कि दरवाजा खुला छोड़कर सो जाये। रात दस बजे के करीब राधे आया था नीचे से। तब मैंने ही दरवाजा खोला था। तब शांता का दरवाजा बंद था।'

राधे का पिता बोला - 'एक बात याद आ रही है साहब। उस रात करीब ग्यारह बजे के आस-पास बाहर खटखटाहट की आवाज मैंने सुनी थी। मैंने सोचा शांता के माता-पिता आ गये होंगे और शांता दरवाजा बंद करके सो रही होगी। अब उसे जगाने के लिये दरवाजा खटखटा रहे होंगे। इसलिये मैं उठा नहीं।'

कैप्टन सोच में पड़ गया। उसे भी शक तो था। लेकिन दरवाजा कैसे खुला? शांता ने ही खोला, तो क्यों? कहीं इसमें सब्जी वाली या उसके पिता का हाथ तो नहीं?

जब उसकी समझ में कुछ नहीं आया तो उनसे विदा लेकर नीचे आया। समर का पिता दुकान खोल रहा था। वह उसके पास रूक गया और पूछा - 'आज आप दुकान खोल रहे हैं। आज सब्जी लेने मंडी नहीं गये।'

दुकान के पल्ले खोलते हुए बोला - 'आज मंडी बंद रहती है। इसलिये आज नहीं जाता।'

'आपका बेटा समर नज़र नहीं आ रहा है?'

'होगा कहीं। मैं तो उसकी वजह से परेशान हो गया हूँ। मेरे छूरे भी नज़र नहीं आ रहे हैं। कहीं समर लेकर न गया हो। गंदी हरकतें करने लगा है। अभी आता ही होगा कोई शिकायत करने।'

'उसे स्कूल क्यों नहीं भेजते?'

'पढ़े, तब तो भेजूं। आजतक तो पढ़ा नहीं। नीचे स्कूल जाता था। वहाँ भी लड़ाई झगड़ा करके बच्चों को मारता रहता था। टीचरों को भी डांट दिया था। इसलिये उन्होंने स्कूल से निकाल दिया। अब क्या पढ़ेगा?' समर के पिता ने दुखी होकर कहा।

'उसे प्यार से समझाइये। शायद मान जाये।' कहकर कैप्टन पुलिस चौकी की ओर बढ़ गया।

सब-इंस्पेक्टर बैठा हुआ था। कैप्टन को देखकर उसने कहा - 'आइये सर, बैठिये। चाय मंगवाऊं?'

'नहीं।' कैप्टन ने बैठते हुए कहा - 'छूरे की रिपोर्ट तो अभी नहीं आई होगी?'

'नहीं सर, लेकिन सुबह-सुबह कैसे आना हुआ?'

जेब से एक कागज निकाल कर मेज पर रखते हुए कैप्टन ने कहा - 'यह राधे का नंबर है। इसे सर्विलांस में डाल कर पता लगाइये कि इसकी लोकेशन कहाँ पर है। इसका फोन बंद आ रहा है।'

सब-इंस्पेक्टर ने कागज उठाते हुए कहा - 'यदि फोन बंद आ रहा है, तो सही जगह का पता नहीं चल पायेगा। फिर तो पुरानी लोकेशन बतायेगा।'

'पुरानी लोकेशन कब की है यह तो पता लग जायेगा।'

'हाँ, यह पता चल जायेगा।'

'वही सही। अंदाज़ा तो हो जायेगा।'

सब-इंस्पेक्टर ने अपना फोन उठाया और फोन करके राधे का फोन नंबर देकर, आखिरी लोकेशन पता लगाने क लिये दे दिया। फिर उसने पूछा - 'और आज सुबह-सुबह कहां हो आए?'

'राधे के यहाँ गया था, राधे का नंबर लेने के लिये।' कैप्टन ने कहा - 'राधे के पिता ने एक नई बात बताई। वह कहता है कि उसने रात ग्यारह-बारह के बीच में किसी के दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनी थी। उसने सोचा कि शांता के माता-पिता आये होंगे और शांता सो गयी होगी। अब वे दरवाजा पीटकर उसे जगाने की कोशिश कर रहे होंगे। इसीलिये वो उठा नहीं था।'

'डाक्टर ने मौत का समय ग्यारह-बारह के बीच में बताया है।' सब-इंस्पेक्टर ने कहा - 'तो क्या सब्जी वाली और उसका पति हो सकते हैं?'

'एक को आप भूल रहे हैं सर।' कैप्टन ने कहा - 'सब्जी वाली का बेटा। वैसे ही आवारा लड़का है लड़कियों-औरतों को छूरा दिखाता रहता है। शांता की हत्या से कुछ दिन पहले किसी बात पर दुकान पर शांता ने उसे थप्पड़ मारा था। उसकी माँ के ही सामने और लोगों ने भी उसे देखा था। तब सब्जी वाली ने शांता को खूब डांटा और भला-बुरा कहा था। तब से शांता ने वहाँ से सब्जी लेना बंद कर दिया था। इसके अलावा वह शंभू की बहन को भी छेड़ा करता था और आते जाते छूरा दिखाता था। लड़की ने अपने पिता से शिकायत की तो उन्होंने सब्जी वाले को बताया और पुलिस में शिकायत की धमकी दी। उस दिन समर के पिता ने उसे खूब मारा था।'

आश्चर्य से सब-इंस्पेक्टर ने कहा - 'हमें तो इस बात की कोई खबर नहीं।'

'आपको खबर तो तब होगी न जब कोई शिकायत करता। जब तक कोई शिकायत नहीं करता तब तक आप चैन से बैठे रहते हैं।' कैप्टन ने हंस कर कहा।

तभी सब-इंस्पेक्टर के फोन की घंटी बजी। उसने फोन उठाया और हैलो कहा। फिर दूसरी ओर की आवाज सुनता रहा।

अंत में 'थैंक्यू' बोलकर फोन बंद किया और कैप्टन की ओर पलट कर बोला - 'फोन की आखिरी लोकेशन गेटवे ऑफ इंडिया की आ रही है। वह भी पांच-छै दिन पहले की। अब फोन बंद है।'

कैप्टन सोच में पड़ गया। कुछ देर बाद बोला - 'इसका अर्थ यह है कि गेटवे ऑफ इंडिया पर वे उस दिन थे, जिस दिन मैं गया था। अर्थात् वे ऐलीफिंटा से वापस आये थे। उसके बाद फोन की बैटरी खत्म हो गयी और कहीं चार्ज नहीं करा सका। यह गाड़ी तो यहीं अटक गयी।'

'लेकिन जितनी बातें पता चली हैं। उनके आधार पर पूछताछ तो कर सकते हैं। बस जैसे ही छुरों पर हाथ के निशान मिल जायें, हम दोनों को थाने ले जाकर सख्ती से हर बात उगलवा सकते हैं।'

'और, यदि कोर्ट में जाकर वह कह दें कि पुलिस की मार की वजह से उसने झूठ-मूठ में उनकी बात मान ली थी तो। तब क्या होगा?' पुलिस की बड़ी थू-थू होगी और तुम्हारे उच्च अधिकारी तुम्हें अयोग्य करार दे देंगे। नहीं, ऐसा कोई काम नहीं करेंगे। सब्जी वाली बहुत तेज है। उस पर सोच समझ कर हाथ डालना होगा।'

सब-इंस्पेक्टर सोच में पड़ गया। कैप्टन ने हंस कर कहा - 'इस विषय को अभी बंद करो और चाय मंगवाओ। सोचते हैं कि उस पर कैसे हाथ डाला जाये।'

सब-इंस्पेक्टर ने चाय मंगवाई। चाय पीने के बाद कैप्टन उठ गया और बोला - 'मैं चलता हूँ। अभी मैं नहाया भी नहीं हूँ। जाकर नहा-धो लूं।'

सब-इंस्पेक्टर हंसा और बोला - 'फौजी होकर भी नहाये नहीं।'

'आजकल छुटी पर हूँ। राधे का फोन नंबर लेने के चक्कर में जल्दी आ गया था।'

फिर वह बाहर निकल गया। उसने पलट कर देखा। सब्जी वाला सब्जी लगा चुका था। उसकी पत्नी और समर अभी भी नहीं आये थे। वह अपने घर की ओर चल पड़ा।

रास्ते में उसके दिमाग में एक बात आई। 'कहीं ऐसा तो नहीं कि गार्ड किशन ने उसकी आवाज पहचानने का बहाना किया हो। कोई और औरत भी हो सकती है जो सब्जी वाली का छूरा कोठी में फेंक सकती है उसे फंसाने के लिये। छूरा चुराना कोई मुश्किल काम नहीं है। उसने भी तो छूरी चुराई थी और सब्जी वाली को पता भी नहीं चला। वह हर वक्त तो दुकान पर रहती नहीं है। इधर-उधर लोगों से गप्पें मारती रहती है। उसका लड़का भी पागल-सा है। आवारा है। वह कहाँ हर वक्त दुकान पर रहता है। जरूर किशन से कुछ भूल हुई है।' यह सोच कर कि एक बार किशन से फिर पूछ लिया जाये वह कोठी की ओर बढ़ गया।

कोठी पर गेट का गार्ड बदल गया था। लेकिन वह कैप्टन को जानता था। कैप्टन ने उससे पूछा - 'किशन कहाँ है?'

उस गार्ड ने बताया कि वह ऑफिस की ड्यूटी पर है और वहीं होगा। कैप्टन ऑफिस की ओर बढ़ गया। गार्ड किशन दरवाजे के पास ही कुर्सी पर बैठा हुआ था। कैप्टन को देख कर वह खड़ा हो गया और सैल्यूट करके बोला - 'सर, आप यहाँ?'

'हाँ किशन, मैं तुमसे कुछ पूछने आया हूँ। ठेकेदार जी आ गये?'

'नहीं सर, अभी नहीं आये।'

'अच्छा एक बात बताओ। तुमने सचमुच उसी औरत की आवाज सुनी जो उस दिन यहाँ आई थी?'

'मैं सच कह रहा हूँ सर, वही आवाज थी। मैं एक बार किसी की आवाज सुन लेता हूँ फिर उसे भूलता नहीं हूँ। हजारों में भी आवाज पहचान लेता हूँ। हाँ, शक्ल भूल जाता हूँ। अब यहीं देखिये अंदर दो व्यक्ति बाते कर रहे हैं। उनमें एक पेंटर है और दूसरा सुपरवाइज़र है।

कैप्टन ने हंस कर कहा - 'इनके साथ तुम्हारा रोज का संबंध है। इसलिये तुम इनके बारे में जानते हो। सब्जी वाली से तुम्हारा कोई संबंध नहीं है। अतः तुम जान बचाने के लिये झूठ भी बोल सकते हो।'

'सर, मैं सच कह रहा हूँ। वही औरत थी। मैंने भी तो आवाज पीछे से सुनी थी। उसका चेहरा तो नहीं देखा था।'

कैप्टन सोच में पड़ गया। कुछ रूक कर उसने पूछा - 'तुम राधे को जानते हो?'

वह बोला - 'जिस दिन से आपने मुझे फोटो दिखाई तो मैं यही सोच रहा था कि मैंने इसको कहाँ देखा। पर याद नहीं आ रहा है। मुझे ऐसा लगता है कि जब मैं ड्यूटी खत्म करके जा रहा था तो वह गेट के दाहिनी वाली पुलिया पर बैठा था। उस दिन वह काम पर नहीं आया था। लेकिन मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता।'

'सोचने की कोशिश करो और मुझे फोन कर देना।' कहकर निराश होकर वह वहाँ से चला गया। अब उसे शंभू और राधे का ही इंतजार था। तभी गुत्थी सुलझ सकती थी।'

----****----

# 10

दूसरे दिन करीब ग्यारह बजे वह ऊपर पहुंचा। सब्जी वाली के पास से गुजर रहा था, तो उसने रास्ता रोक कर दबे स्वर में कहा - 'सा'ब आ गये दोनों।'

वह चौंका और पूछा - 'कौन आ गये?'

वह दबी आवाज में बोली - 'सा'ब, वो दोनों खूनी, शांता के खूनी, शंभू और राधे। आज सवेरे ही आये हैं। सोचा होगा अब क्या होगा। घूमने का तो बहाना था। सा'ब, लगता है घर वाले सब मिले हुए हैं।'

कैप्टन ने आगे बढ़ते हुए कहा - 'अच्छा चल कर देखता हूँ। आपने पुलिस को बताया?'

'नहीं। मैं क्यों टांग अडाऊं।' कह कर वह अपने काम पर लग गयी।

कैप्टन ऊपर जाकर राधे के घर के सामने गया। अंदर से राधे की माँ और राधे के पिता की डांटने की आवाजें आ रही थीं। दरवाजा खुला हुआ था। उसने दरवाजा खटखटाया। राधे की माँ बाहर आई। कैप्टन को देख कर बोली - 'राधे आ गया सा'ब। आज अभी कुछ देर पहले आया है। कहता है फोन की बैटरी खराब हो गयी थी। बुलाऊं सा'ब?'

'क्या मैं अंदर आ सकता हूँ? अंदर ही पूछ लेता हूँ।'

तभी राधे के पिता बाहर आ गये और बोले - 'आइये साहब और जो पूछना है, पूछ लीजिये।'

कैप्टन उनके पीछे-पीछे अंदर गया। राधे एक ओर सिर झुकाये खड़ा था। कैप्टन ने पास जाकर उसके सिर पर हाथ रखा और प्यार से पूछा - 'तुम तो काम पर गये थे। फिर तुमने उसी शाम को अपने पिता को फोन करके ये क्यों कहा कि रात-दिन काम करोगे, इसलिये घर नहीं आओगे।'

वह थोड़ी देर कैप्टन की ओर देखता रहा। उसके बाद धीरे-धीरे बोला - 'मैं खाना खाकर नीचे दोस्तों के साथ बाते करने और टहलने जाता हूँ। एक रात को जब मैं नीचे जा रहा था तो मुझे शंभू मिल गया, वह उस वक्त सीढ़ियों पर बैठा था। मैंने जब वहाँ बैठने का कारण पूछा तो वह बोला - 'अरे यार बड़ी गड़बड़ हो गयी है। मेरे दोस्तों ने फोन किया था कि वे कल सुबह ऐलीफिंटा देखने जा रहे हैं और मुझे जल्दी आने के लिये कह रहे हैं। पापा-मम्मी से लड़-झगड़ कर मैं घर से निकला था और सोचा नीचे जाकर गेटवे ऑफ इंडिया के लिये बस पकड़ लूंगा। नीचे जाने से पहले मैं अपने दोस्त से मिलने गया। फिर उसके फोन से मैंने उस दोस्त को फोन किया जिसने मुझे आने के लिये कहा था। उसने मुझे बताया कि दस-साढ़े दस बजे सुबह पहुंचने के लिये कहा। अब समझ नहीं आता कि कहाँ जाऊं। घर जाने की सोच रहा था। लेकिन हो सकता है वे फिर मना कर दें। इसलिये यहीं बैठ गया।'

हम लोग कुछ देर घूमते रहे। अंत में जब ग्यारह बज गये तो उसने पूछा कि तुम भी चलोगे ऐलीफिंटा देखने? मेरा मन तो था ही। मैंने कहा चल तो सकता हूँ लेकिन जेब खाली है।'

'तू चिंता न कर। मैं घर जाने के बजाय तेरी उस कोठी में चला जाता हूँ।'

'तुझे कौन अंदर घुसने देगा?'

'अंदर कौन जायेगा। तेरी कोठी के गेट के बगल में एक लंबी-सी पुलिया की दो फुट ऊंची दीवार है। बस वहीं आराम करूंगा। तू सुबह जल्दी आ जाना। वहीं से नीचे जाकर बस पकड़ लेंगे। जब यह तय हो गया तो मैं घर लौट आया। सुबह जब मैं काम पर गया तो वह नहीं था। मैं कुछ देर ही बैठा था कि वह नाले से ऊपर आया। उसने बताया कि वह फ्रेश होने के लिये नाले में गया था। वहाँ से हम नीचे गये और बस पकड़ कर गेटवे ऑफ इंडिया पहुंचे। उसके तीन दोस्त वहाँ इंतजार कर रहे थे। फिर हम स्टीमर में बैठकर ऐलीफिंटा गये थे।'

कैप्टन ने पूछा - 'तुम्हारा फोन बंद क्यों था? और शाम को तुमने फोन कहाँ से किया था?'

'तुमने चॉल में फोन चार्ज क्यों नहीं किया?'

'मैं अपना चार्जर नहीं ले गया था। उनके पास जो चार्जर था, वह मेरे फोन पर नहीं लग रहा था। वह बड़ा था।'

'तुम जब रात को ऊपर आये तो तुमने यहाँ गली में किसी को देखा था?'

राधे सोच में पड़ गया। कुछ देर बाद वह असमंजस की सी स्थिति में बोला - 'हाँ, ऐसा लगता था जैसे शालिनी आंटी, शांता दीदी के दरवाजे के पास खड़ी है। मुझे देख कर पीछे हट कर दूसरी ओर मुड़कर देखने लगी। जब वह हटी तो मुझे समर बैठा दिखा। मैंने सोचा वह समर को ले जाने के लिये आयी है।'

'क्या तुम्हे विश्वास है कि वह समर ही था?'

'हाँ, पूरा विश्वास है। उसका चेहरा गली की रोशनी में साफ दिखाई दे रहा था।'

'ठीक है। अब तुम कहीं मत जाना। पुलिस वाले तुम्हें बुलायेंगे। सब सच-सच बताना।' कैप्टन ने कहा और बाहर निकल गया और शंभू के घर की ओर बढ़ा। जाते-जाते उसने इंस्पेक्टर कामत को फोन किया। जब इंस्पेक्टर ने फोन उठाया तो उसने राधे और शंभू के आने की बात बताई और कहा कि उन्हें चौकी में बुलाकर उनका स्टेटमेंट ले लें।'

इतना कह कर वह शंभू के घर पहुंचा। शंभू की माँ दरवाजा खोल कर बैठी हुई थी। शंभू अंदर खाट पर बैठा रोटी खा रहा था। उसके पिता और बहन घर पर नहीं थे। शायद काम पर चले गये थे। शंभू की माँ कैप्टन को देखकर उठ गयी। शंभू भी खड़ा हो गया।

'कैप्टन ने पूछा - 'कब आये हो शंभू?'

'आज सुबह आया हूँ।'

'तुम ऐलीफिंटा गये थे। क्या वहाँ इतने दिन लगते हैं?'

'दो बार तो हम ऐलीफिंटा गये थे। फिर दो-चार दोस्तों के साथ घूमते रहे। नारीमन प्वाइंट पर घूमे। समुद्र के किनारे बीच पर घूमे।'

'रहते कहाँ थे?'

मेरे दोस्त हैं। उन्होंने चॉल में एक कमरा किराये पर लिया हुआ था। बस वहीं रहे।'

'तुम शांता की हत्या के दिन, रात सात-आठ बजे घर से निकले थे। लेकिन, दस-ग्यारह बजे तक यहीं थे। क्यों?'

उसने एक बार अपनी माँ की ओर देखा जो हैरत से शंभू को देखने लगी थी। तब वह सिर झुका कर धीरे-धीरे बोला - 'मैं यहाँ से नीचे बस पकड़ने जा रहा था। जब मैं अपनी काम वाली जगह पर गया, तो सोचा अपने दोस्तों को फोन करके सूचना दूं कि मैं बस से आ रहा हूँ। मैं अपने उस दोस्त के पास गया जो रात को उसी टूटे मकान में ही रहता था। वहाँ वह सात और मजूदरों के साथ रहता है। मैंने उसी का नंबर अपने दोस्तों को दे रखा है। जब मैंने फोन किया तो मेरे दोस्त ने कहा - 'अबे रात को क्यों आ रहा है। तू सुबह दस-ग्यारह बजे तक पहुंच जाना। उन्होंने मुझे गेटवे ऑफ इंडिया पर मिलने के लिये कहा।'

मैं निराश होकर वापस लौट आया। जब मैं सीढ़ियाँ चढ़ रहा था तो मुझे ध्यान आया कि मैं पापा-मम्मी से लड़कर निकला हूँ। अब घर जाऊंगा तो हो सकता है कि पापा मुझे न जाने दें। रात भी काफी हो चुकी थी। मैं सीढ़ी पर बैठ गया और सोचने लगा कि अब क्या करूं।'

थोड़ी देर में राधे नीचे से आता दिखा। मुझे देखकर वह रूक गया। उसने जब पूछा कि मैं यहाँ सीढ़ियों में क्या कर रहा हूँ तो मैंने उससे कहा कि चल तुझे एक बात बताऊं। फिर हम दोनों नीचे चल पड़े। जब हम दोनों टहलते हुए नीचे जा रहे थे तो मैंने उसे सारी बात बताई। वह बहुत खुश हुआ और बोला - 'तू ऐसा कर, हमारे घर सो जा और सुबह जल्दी निकल जाना।' लेकिन मुझे डर था कि मम्मी वैसे भी जल्दी उठती है। कहीं देख लिया तो सब गड़बड़ हो जायेगी। मैं नहीं माना। आधे रास्ते से हम वापस लौटे तो मैंने उससे पूछा कि क्या वह भी ऐलीफिंटा चलेगा? वह मान गया किन्तु, उसने कहा कि उसके पास पैसे नहीं है और घर वाले देंगे नहीं। मैंने उससे कहा कि चिंता मत कर पैसे मेरे पास हैं। जब वह तैयार हो गया तो मैंने कहा कि जहाँ वह काम करता है उसके बाहर नाले के ऊपर पुलिया है। मैं रात वहाँ गुजार लूंगा और उसे सुबह जल्दी आने को कह कर कच्चे रास्ते से ऊपर गया और रात को उसी पुलिया पर लेटा रहा। सुबह जब वह आया तो हम दोनों साथ ही बस स्टाप से बस पकड़कर गेटवे ऑफ इंडिया पहुंचे, जहाँ मेरे दोस्त इंतजार कर रहे थे।'

कह कर वह चुप हो गया। उसने करीब-करीब वही बातें बताईं जो राधे ने कही थी।

कुछ देर बाद कैप्टन ने पूछा - तुम जब सीढ़ियों पर बैठे थे तो तुमने नीचे से किसी को आते-जाते देखा था?'

वह चुपचाप कैप्टन की ओर देखता रहा। कैप्टन ने आगे कहा - 'मेरा मतलब समर को या वो सब्जी वाली आंटी, क्या नाम है उसका? हाँ, शालिनी को या उसके पिता को।'

'शंभू जल्दी से बोला - हाँ, समर मेरे सामने से ही भाग कर ऊपर गया था। उसके हाथ में छूरा भी था। उसके पीछे-पीछे आंटी भी जल्दी-जल्दी ऊपर चढ़ी। 'वह जोर-जोर से कह रही थी समर छूरा दे नहीं तो बहुत मारूंगी। रूक अभी बताती हूँ तुझे।' फिर वो ऊपर चली गयी।'

'तब उसकी दुकान खुली हुई थी?'

'हाँ, अंकल दुकान बंद कर रहे थे। साथ ही समर को गालियां भी दे रहे थे।'

'और कुछ देखा तुमने?'

वह थोड़ी देर चुप रहकर सोचता रहा जैसे कुछ याद कर रहा हो। आखिर में बोला - 'एक बार जब मैं और राधे नीचे जा रहे थे तो नीचे की गली में कोई बैग नीचे गिर गया था। मैं उसे उठाने के लिये पलटा और सामान उठा कर दुकान वाले को दिया। तब मेरी

निगाह सीढ़ी की ओर उठीं तो मैंने शालिनी आंटी को सीढ़ियों के ऊपर खड़ी देखा। लेकिन वे जल्दी ही पीछे हट गयी थीं। बस, उनकी एक झलक ही देखी थी।'

कैप्टन ने कहा - 'अभी तुम कहीं जाना नहीं। पुलिस आयेगी तुम्हें और राधे को ले जाने के लिये। चौकी में तुमसे पूछताछ होगी। समझे।'

'नहीं सा'ब, ये आज घर से बाहर कहीं नहीं जायेगा। इसके बापू ने साफ कह दिया कहीं मत जाना।'

'लेकिन पुलिस आयेगी तो जाना पड़ेगा।' कैप्टन ने कहा ही था कि कांस्टेबल ने अंदर झांका और आवाज दी - 'शंभू, चलो इंस्पेक्टर साहब ने बुलाया है।' तभी उसकी नज़र कैप्टन पर पड़ी तो उसने सैल्यूट किया और बोला - 'सर, इसे और राधे को इंस्पेक्टर साहब ने बुलवाया है।'

'हाँ, ले चलो।' कैप्टन ने बाहर निकलते हुए कहा - 'मैं भी इससे यही कह रहा था। चलो।'

राधे दूसरे कांस्टेबल के साथ खड़ा था। उसकी माँ भी दरवाजा बंद कर साथ में खड़ी थी। उसका चेहरा सफेद पड़ गया था।

शंभू बिना पूरी रोटी खाये ही निकल पड़ा था। उसकी माँ ने भी दरवाजा बंद किया और साथ में चल पड़ी।

वे कांस्टेबल दोनों को लेकर सीढ़ियों की ओर बढ़ गये। उनके पीछे दोनों की मातायें चल रही थी और सबसे अंत में कैप्टन भी चल पड़ा। वह जान-बूझकर पीछे हो गया था।

जब वे पुलिस के साथ नीचे पहुंचे तो गली के सभी लोग आश्चर्य से उन्हें देखने लगे। जब वे सब्जी वाली दुकान से पुलिस चौकी की ओर बढ़ गये, तब कैप्टन सब्जी वाली के पास रूक गया। इस समय वह अकेली ही थी। उसका लड़का समर वहाँ नहीं था। कैप्टन को देखकर मुस्कुराते हुए बोली - 'देखा सा'ब, मैंने आपको सही बोला था कि खून इन दोनों ने ही किया है। तभी तो वे भाग गये थे।'

कैप्टन ने चिंतित स्वर में कहा - 'लेकिन वे तो इस बात पर अड़े हैं कि खून हमने नहीं किया।'

'सा'ब, दो-चार डंडे पड़ेंगे तो सब उगल देंगे।'

'शायद, आपको भी पुलिस बुलाये।'

वह हड़बड़ाई और बोली - 'मुझे क्यों सा'ब?'

'तुमने रात को उन्हें जाता देखा था। उनकी आवाज सुनी थी। यही पूछने के लिये बुलायेगी। आप डरना नहीं। सच-सच बता देना।'

'सा'ब मुझे इस पचड़े में मत डालो।'

'क्या तुम नहीं चाहती की शांता का खूनी पकड़ा जाये?'

वह चुप हो गयी। लेकिन उसके चेहरे पर घबराहट के चिन्ह साफ नज़र आ रहे थे।

कैप्टन फिर आगे बढ़ गया। वह पुलिस चौकी पहुंचा तो देखा कि शंभू और राधे की माँ दरवाजे के पास खड़ी अंदर झांक रही थी और दोनों शंभू और राधे अंदर खड़े थे। सब-इंस्पेक्टर उस समय शंभू का बयान डायरी में नोट कर रहा था। कैप्टन थोड़ी देर बाहर खड़ा रहा। एक कांस्टेबल ने दोनों औरतों को पीछे हटने का इशारा किया। तब कैप्टन अंदर चला गया। उसे देख कर इंस्पेक्टर मुस्कुराया और उसे बैठने का इशारा किया।

जब कैप्टन बैठ गया तो उसने एक कागज कैप्टन की ओर बढाया। कैप्टन ने कागज उठा कर देखा। वह फारेंसिक लैब की रिपोर्ट थी। जल्दी से वह रिपोर्ट पढ़ने लगा। पढ़ने के बाद इंस्पेक्टर की ओर देख कर मुस्कुराया। फिर रिपोर्ट उसकी ओर बढ़ा दिया। लेकिन दोनों बोले कुछ नहीं।

जब दोनों के बयान हो गये, तो सब-इंस्पेक्टर ने उनसे कहा - 'जो-जो तुम लोगों ने कहा। हम उसकी जांच करेंगे। इसलिये तुम्हें उन-उन जगहों पर ले जाया जायेगा। इसलिये कहीं भागना मत। नहीं तो सीधे अंदर कर देंगे। समझे?'

दोनों ने सिर हिलाकर हामी भरी और बाहर निकल गये। जब वे चले गये तब इंस्पेक्टर ने कहा - 'बहुत मुबारक हो सर।

आपकी यह शंका भी सच हुई। छूरे पर वही निशान हैं जो छूरी पर थे। अर्थात् सब्जी वाली के। तो क्या खून उसी ने किया है?'

कैप्टन ने कहा - 'खून या तो उसने किया या उसके बेटे समर ने।'

'उसका आदमी भी हो सकता है?' सब-इंस्पेक्टर बोला।

'नहीं, वह नहीं हो सकता। वह तो खुद दुखी था। तभी तो पेंटर की शिकायत पर उसने समर को खूब पीटा था। मुझे ऐसा लगता है कि शांता ने जब समर को थप्पड़ मारा. तो सब्जी वाली ने उसे खूब डांटा था और उल्टी-सीधी बातें कहीं थी। बस तब से दोनों मौके की तलाश में थे। सब्जी वाली अपने बेटे को बहुत प्यार करती है। उसके लिये वह किसी से भी लड़ सकती है। कुछ भी कर सकती है।'

'फिर क्या करें?' इंस्पेक्टर ने पूछा।

'शंभू और राधे को आपने छोड़ दिया है। इसका उसपर क्या असर पड़ता है, यह पता करना होगा।'

'कैसे? वह कुछ नहीं बतायेगी।' इंस्पेक्टर बोला।

'थोड़ी देर में मैं जाऊंगा। वह शायद मुझसे से कुछ कहे या पूछे।'

सब-इंस्पेक्टर ने हंस कर कहा - 'हाँ, शायद आपको बता दे। तब तक चाय पी लेते हैं।'

तीनों ने हामी भर दी।

चाय पीकर कैप्टन धीरे-धीरे सब्जी की दुकान की ओर बढ़ा। कैप्टन के देखकर वह दुकान के अंदर से बाहर निकली और रास्ता रोककर धीरे से बोली - 'सा'ब, पुलिस ने उन दोनों को क्यों छोड़ दिया?' पकड़ा क्यों नहीं?'

कैप्टन ने नम्र लहजे में कहा - 'ऐसे कैसे पकड़ सकते हैं। कल पुलिस उनको लेकर उन जगहों पर जायेगी जहाँ-जहाँ वे गये थे, और जिन-जिन से वे मिले थे। अगर उनकी बात झूठी निकली तो, तब उन्हें गिरफ्तार करेगी। सबूत भी तो होना चाहिए, न।'

'क्या सा'ब, इतने चक्कर में क्यों पड़ रहे हैं। मुझे ले चलो। मैं बताऊंगी कि मैंने रात को उन्हें जाते देखा था। डंडे पड़ेंगे तो सब उगल देंगे।'

कैप्टन ने चिंतित स्वर में कहा - 'राधे तो कुछ और भी कह रहा था। वह तुम्हारे बारे में बोल रहा था।'

उसने घबराते हुए पूछा - 'क्या कह रहा था?'

कैप्टन थोड़ी देर चुप रहा। फिर धीरे से बोला - 'वह कह रहा था कि उसने रात ग्याहर बजे के आस-पास तुम्हें और समर को शांता के घर के पास खड़े देखा था।'

'हाय राम! कितना झूठ बोलता है। मैं कभी उस ओर जाती ही नहीं थी। बस शांता से ही बातें होती थी, जब वह सब्जी लेने

आती थी। जिस दिन शांता का खून हुआ, उस दिन पहली बार मैं वहाँ गयी थी। सिर्फ शोक मनाने के लिये और शांता की माँ को धैर्य बंधाने के लिये। कितना झूठ बोलता है। खून करने के बाद मुझे भी घसीटना चाहता है। अभी जाकर उसे देखती हूँ। गुंडा मवाली कहीं का। वह गुस्से से बोली और अपना सब्जी कांटने का छूरा हाथ में उठाया। छूरा नया था और चमचमा रहा था।'

'नया छूरा ले लिया क्या?'

'हाँ, सा'ब क्या करती। पुराना छूरा पता नहीं कहाँ गया।'

कैप्टन ने कहा - 'देखो गुस्सा मत करो। उसकी बात पर पुलिस को भरोसा नहीं है। तभी तो दोनों को लेकर उनके दोस्तों के घर जायेगी। नहीं तो अब तक पुलिस उन्हें बुला लेती। वैसे भी उसकी माँ कह रही थी कि रात को उनका ठेकेदार काम खत्म होने की खुशी में पार्टी दे रहा है। जिसमें सभी मजजूरों को बीवी बच्चों के साथ बुलाया है। शायद वे लोग वहाँ जायें। इसलिये इस समय लड़ाई-झगड़ा मत करो। लेकिन पुलिस ने राधे को साथ ले जाने के लिये मना कर दिया है। देखो, वे लोग जाते हैं नहीं।'

सब्जी वाली की आँखें चमक उठीं। वह बोली - 'पुलिस भी ऐसे लोगों को जानती है। उन्हें पक्का पता होगा कि दोनों गुंडे हैं और राधे, वह तो रात-आधी रात को आवारा लड़कों के साथ घूमता रहता है। उसके घरवाले भी कुछ नहीं कहते।'

'ठीक है। पुलिस अपने आप निपट लेगी। मैं जरा ऊपर जाकर शांता के मम्मी-पापा से मिल आऊं। क्रियाक्रम के बाद मैं मिला ही नहीं।'

'ठीक है सा'ब।'

कैप्टन सीढ़ियों से चॉल की ओर बढ़ गया। वह ऊपर जाकर सीधे राधे के घर पहुंचा। दरवाजा बंद था। खटखटाने पर राधे की माँ ने दरवाजा खोला। कैप्टन ने अंदर जाकर द्वार बंद कर दिया। फिर वह धीरे-धीरे राधे की माँ से कुछ बातें करने लगा। पहले तो राधे की माँ उसकी बात पर सहमत नहीं हुई। किन्तु जब कैप्टन ने उन्हें आश्वासन दिया तो मान गयी।'

वहाँ से निकलकर, वह बाहर आया और सीधे पुलिस चौकी जा पहुंचा। इंस्पेक्टर उसे देखकर चौंका और बोला - 'आप क्या खबर लाये हैं। कोई नई बात।'

'हाँ बातें तो बहुत हैं।' कैप्टन ने कहा - 'बहुत गुस्सा कर रही थी कि दोनों को गिरफ्तार क्यों नहीं किया। डंडे मारते तो सब उगल देते।' कुछ देर रूक कर वह धीरे-धीरे बोला - 'मेरे पास एक आइडिया है। उसमें आपको मेरा साथ देना होगा। मैं चारा डाल आया हूँ। लेकिन बिना आपकी मदद के वो काम नहीं हो सकता है। हो सकता है हम आज ही रात खूनी को पकड़ लें।'

'कैसे?' इंस्पेक्टर ने कहा।

कैप्टन आगे झुका और धीरे-धीरे अपनी योजना बताने लगा। दोनों तल्लीनता से सुनते रहे।

----****----

# 11

रात के दस बजे थे। जब किसी ने राधे का दरवाजा खटखटाया। राधे खाट पर लेटा हुआ था। वह चौंकन्ना हो गया। एक बार पिछले कमरे की ओर देखकर उसने दरवाजे की चटकनी खोल दी। तभी वह झटके से दो कदम पीछे हट गया। एक औरत अपना पूरा चेहरा ढंके और हाथ में बड़ा-सा छूरा लिये उसकी ओर झपटी। वह दौड़ कर पीछे हट गया। उस औरत ने आगे बढ़कर उसकी खोपड़ी पर वार किया और बोली - 'तुझे मैं छोडूंगी नहीं। मुझसे गलती हो गयी थी। उसी दिन मुझे तुम्हें भी मार देना चाहिए था।'

वह फिर झपटी। उसने हाथ उठा कर वार किया। लेकिन वार नहीं कर सकी। क्योंकि उसका हाथ पीछे से किसी ने पकड़ लिया था। वह चौंक कर मुड़ी। सब-इंस्पेक्टर उसका हाथ पकड़े खड़ा था। उसे देखकर वह घबराई और हाथ छुड़ा कर भागने की कोशिश करने लगी। किन्तु सब-इंस्पेक्टर के मजबूत हाथों से अपने को छुड़ा न सकी। तभी इंस्पेक्टर भी अंदर कमरे से बाहर और अपने रूमाल से पकड़कर छूरा छीन लिया। पीछे-पीछे कैप्टन को देखकर उसके आँखें फैल गयी। और वह रोने लगी।

सब-इंस्पेक्टर ने उसके चेहरे का कपड़ा हटाया। सब्जी वाली को देखकर बोला - 'तो तुम राधे का भी खून करने आई थी।

जिससे कोई गवाह न बचे, जो कह सके कि शांता का खून तुमने किया है।'

वह जोर-जोर से रोकर कहने लगी - 'मैं शांता का खून नहीं करना चाहती थी। मैं तो उसे धमकाना चाहती थी। पर हो कुछ गया।'

'चलो, अब पुलिस चौकी चलो। वहीं सारी कहानी सुनाना।'

जब शालिनी को लेकर तीनों बाहर निकले तो शोर सुनकर आस-पास के लोग जाग गये। वे हैरानी से शालिनी का मुंह देखने लगे। सब्जी वाली रो रही थी। राधे भी बाहर निकला तो कैप्टन ने उसे घर पर ही रहने के लिये कहा। वह रूक गया।

पुलिस चौकी में इंस्पेक्टर के बैठने के बाद, एक कुर्सी पर सब्जी वाली शालिनी को बैठाया। और जब वह बैठ गयी तो दोनों भी उसकी दायें-बायें बैठ गये। इंस्पेक्टर ने टेबल पर रखा एक कैमरा चालू किया और बोला - 'शालिनी, अब बताओ तुमने शांता को खून क्यों किया?'

'मैं उसका खून नहीं करना चाहती थी। मैं उसे सिर्फ धमकाना चाहती थी।'

'क्यों? और वह भी रात में?' इंस्पेक्टर ने पूछा।

कुछ रूक कर वह बोली - 'एक दिन जब वह सब्जी ले रही थी कि किसी बात पर मेरे बेटे समर को दो चांटे मार दिये। मुझे देख कर बहुत गुस्सा आया और मैंने उसे डांटा। उसे मारने की भी मैंने कोशिश की। तब वह तोली हुई सब्जी वहीं फेंक कर दूसरे सब्जी वाली के पास चली गयी। मैं बहुत देर तक उसे गालियां बकती रही। समर के हाथ में छूरा था। वह उसकी ओर भागा। लेकिन मैंने उसे रोक लिया। उस दिन के बाद उसने मेरे से सब्जी लेना छोड़ दिया। इस पर मुझे और क्रोध आया। मैंने निश्चय किया कि जब कभी वह अकेली होगी, तब दो नहीं चार थप्पड़ मारूंगी। थोड़ा डर भी लगता था। समर जब-तब छूरा हाथ में लेकर उसके पीछे दौड़ता था। इसलिये मैंने सोचा कि समर के साथ ही जाकर उसे थप्पड मारूं तो वो शांत हो जायेगा। ये बात मैंने समर को भी समझाई तो वो मान गया।'

'तुम्हारे आदमी को पता नहीं चला?' इंस्पेक्टर ने पूछा।

'उसे कहाँ पता चलता सा'ब। वो तो रात दस बजे कच्ची दारू पीकर टुन्न हो जाता है। पता नहीं रोज कहाँ से कच्ची दारू लेकर आ जाता है।'

इंस्पेक्टर ने पूछा - 'अच्छा आगे क्या हुआ?'

थोड़ा रूक कर वह बोली - 'एक दिन समर ने आकर मुझे बताया कि शांता के माँ-बाप कहीं शादी में गये हैं और शांता घर में अकेली है।' मेरे पूरे शरीर में आग लग गयी। मैंने सोचा आज

अच्छा मौका है। आज मैं उसकी इतनी पिटाई करूगी कि आज के बाद वो किसी को थप्पड़ तो क्या, टेढ़े मुंह से भी बात नहीं करेगी। उस दिन मैं और समर जल्दी घर आ गये। मैंने जल्दी-जल्दी खाना बनाया। समर को खाना खिलाकर बाहर यह देखने के लिये भेज दिया कि उसके साथ सोने के लिये कोई आयी तो नहीं।'

'रात दस बजे मेरा आदमी आया। दारू पीकर और थोड़ा सा खाकर वो सो गया। मैं भी थोड़ा-बहुत खाकर, रोशनी बंदकर लेटने का नाटक करने लगी।'

इंस्पेक्टर ने टोका - 'तुम्हारे आदमी ने पूछा नहीं कि समर कहाँ है?'

'उसे होश रहता तो पूछता। घर आते ही वह पहले दारू पीता। तब फिर होश रहता तो पूछता।'

'ठीक है, आगे बोलो।'

वह बोली - 'सा'ब, रात के करीब ग्यारह बजे थे। मैं उठी और चुपचाप बाहर निकली। शांता के घर पर गयी। उसके दरवाजे के पास ही समर बैठा हुआ था। उसके हाथ में छूरा भी था। मैंने धीरे से डांटा कि छूरा क्यों लाया। तो बोला कि डराऊंगा। मैं चुप हो गयी। एक बार मैंने चारों ओर देखा। कहीं कोई नहीं था। मैंने धीरे से दरवाजा खटखटाया। तभी सीढ़ियों से राधे ऊपर आया। उसे देख कर मैं डर गयी। मैंने जल्दी से अपना मुंह दूसरी ओर कर दिया। मैं समझी उसने मुझे नहीं पहचाना। क्योंकि वह सीधा अपने घर में घुस

गया था। जब उसने दरवाजा बंद कर दिया। तब मैंने दरवाजा खटखटाया और धीरे-धीरे शांता को आवाज दी। थोड़ी देर में शांता ने दरवाजा खोला। वह नींद के झौंके में थी। मैंने झपट कर उसे धक्का दिया। हम दोनों अंदर घुसे और दरवाजा बंद कर दिया। धक्के से शांता वहीं रखी चरपाई पर गिर पड़ी थी। मुझे देखकर उसकी आँखें फैल गयी थी। वह कुछ कहती, उससे पहले ही मैंने उसका हाथ पकड़ कर उठाया और खींचती हुई उसे अंदर वाले कमरे में ले गयी। वहाँ जाकर मैंने उसे उसके खाट पर पटका और बोली - 'तूने क्या समझ कर मेरे बेटे को मारा। मुझसे शिकायत कर देती।' वह कुछ कहती उससे पहले ही मैंने उसे दो-तीन झापड़ मार दिये। वह भी गुस्से में आकर मेरा हाथ पकड़कर चिल्लाई - 'निकल जा मेरे घर से। अपने आवारा बेटे की हरकतें देखती नहीं। वह कुछ भी करता रहे, तुझे कोई मतलब नहीं। अभी भी छूरा लेकर घूम रहा है।'

'वो जैसा भी है। लेकिन तुझे मारने का हक किसने दिया। वो भी सबके सामने।'

और मैंने एक घूंसा मारना चाहा जो उसने अपने हाथों से रोक दिया। तभी समर चिल्लाकर बोला - 'माँ, ऐसे मारो, ऐसे।' यह कह कर उसने छूरा उसकी छाती पर घोंप दिया। शांता चिखी उसकी आँखें बाहर निकल पड़ी। खून का फव्वारा निकल पड़ा। वह खाट पर गिर पड़ी। समर ने लगातार जब उसके पेट पर तीन-चार वार किये तो उसकी चीख बंद हो गयी। समर के पूरे कपड़े खून से रंग

गये। उसके सिर पर, मुंह पर और हाथ भी खून से रंग गये। वह खून देखकर डर गया और छूरा उसके हाथ से छूट गया।'

'ये तूने क्या कर डाला रे?' मैं उस पर चिल्लाई। मैंने शांता के हाथ पर अपना हाथ रख कर देखा। वह मर चुकी थी। मैं घबरा गयी। मैंने छूरा उठाया तो मेरे हाथों पर भी खून लग गया। अपनी धोती पर मैंने अपना हाथ पोंछा और समर का हाथ पकड़ कर बाहर निकली। मैंने चटकनी भी अपनी साड़ी पकड़कर ही खोली। बाहर झांक कर देखा। कहीं कोई नहीं था। बाहर जाकर जब दरवाजा बंद करने लगी तो समर शंभू के घर की ओर भागा। किन्तु मैंने थोड़ी दूर में उसे पकड़ लिया और घर ले आई। उसका बापू उस वक्त खर्राटे भर रहा था।'

'मैं समर को लेकर सीधे-बाथरूम में गयी। वहाँ उसके कपड़े उतरवाकर एक सफेद बोरी में डाल दिये जो वहीं रसोई के पास रखी थी। समर को मैंने अच्छी तरह नहलवाया और दूसरे कपड़े पहनवाकर सोने के लिये भेज दिया। मैंने फिर उसकी चप्पलें साफ की। किन्तु वे ठीक से साफ नहीं हुई तो उन्हें भी मैंने बोरी में डाल दिया। छूरे को भी अच्छी तरह से साफ कर एक ओर रख दिया। अपनी धोती उताकर पानी की बाल्टी में डाल दी। कपड़े बदल मैं छूरे को साफ करने का प्रयास किया तो उसकी धार से मेरी उंगली कट गयी। मेरी धोती गंदी न हो जाये, इसलिये मैंने उस खून को बोरी पर ही पोंछ दिया और छूरा ठीक से साफ कर के पोलीथीन में लपेट कर बोरी में ही रख दिया। उंगली से खून बराबर निकल रहा

था। मैंने बेहतर जानकर कुछ देर उंगली को उसी बोरे में लपेट लिया। जब खून निकलना थोड़ा बंद हुआ तो समर से मैंने उस पर एक कपड़े का टुकड़ा बंधवा लिया। दूसरे दिन मैंने मेडिकल वाले को दिखाया। उसने दवा लगा कर एक टेप चिपका दिया और कुछ खाने की गोलियां देकर बोला कि डाक्टर को दिखा देना।'

'दो दिन तक मैंने बोरी और छूरे को घर में ही छुपा कर रखा। मैं सड़क वाले के कचरा के बास्केट भी देख आई। यहाँ तक सामने वालों के घरों के बास्केट भी देख आई। लेकिन वे लोग अपने बास्केट सड़क के उस कोने पर उलट दिया करते थे, जहाँ से ट्रक वाला आकर बाद में उठा ले जाता था। मुझे डर लगा कि कहीं वे खून से सने कपड़े और छूरा न देख लें। इसलिये हिम्मत नहीं हुई।'

फिर, एक दिन मुछे पता चला की शंभू का बापू ऊपर एक कोठी में काम करता है और वहीं राधे भी काम करता है। मैंने सोचो क्यों न वहीं इसे डालू दूं। वहाँ का मलबा ट्रक में भरकर जाता है जिसे वह गड्ढों में डाल देते हैं। बस फिर, एक रात मैंने पति को ढूंढने के बहाने वहाँ गयी। मैंने सोचा गार्ड पति का नाम पूछेगा तो राधे का नाम ले लूंगी। लेकिन मैं तब वहाँ गयी, जब मेरा आदमी टुन्न पड़ा था। मैं बोरा अपनी छाती से लगाकर और अपने आंचल में ढंक कर वहाँ गयी। गार्ड को देखकर मैं रोने लगी तो गार्ड ने पूछा - 'क्या बात है? क्यों रो रही हो?' मैंने उसे अपने आदमी के घर न आने की बात कही और उससे बोली कि वह ढूंढ कर ले आये। लेकिन उसने गेट छोड़ने में असमर्थता जताई तो मैंने उससे अंदर

जाने की इजाजत माँगी। गेट खोल कर उसने मुझे जल्दी लौट आने के लिये कहा। मैं खुश हो गयी और पीछे की ओर भागी।'

मैं जब पीछे की दीवार के करीब पहुंची तो मेरी नज़र पानी से भरे एक टैंक पर पड़ी। मैंने सोचा छूरा इसमें डाल दिया जाये तो तब तक पता नहीं चलेगा जब तक कोठी का काम न हो जाये। मैंने बोरा खोलकर छूरे वाला पोलीथीन निकाला और उस पर बंधी सुतली खोलने लगी। मैं डर भी रही थी। मेरे हाथ कांप रहे थे। किन्तु सुतली अभी खुली भी नहीं थी कि छूरा पोलीथीन समेत पानी में गिर गया। मैं उसे निकालने के लिये झुकी। लेकिन अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं दिया। घबरा कर मैंने बोरा उठाया और उस ओर आई जहाँ मलबा पड़ा था। मैं मलबे के ढेर पर चढ़ गयी और हाथों से ऊपर का बारीक मलबा हटा कर, बोरे को जैसे-तैसे थोड़ा-बहुत उसमें दबा दिया।'

'उसके बाद में नीचे उतरी। अपने कपड़े साफ किये और गेट के पास आई। गार्ड ने जब पूछा कि आदमी मिला नहीं क्या? तो मैंने उससे कहा कि यहाँ नहीं मिला। अब नालों में देखती हूँ कि कहीं पड़ा मिल जाये।'

चलते समय गार्ड ने पूछा - 'तू एक थैला लाई थी। उसे कहाँ छोड़ आई?' तो मैंने उससे झूठ कहा कि उसमें आलू-प्याज और सब्जी थी। उसे वहीं छोड़ आई हूँ जहाँ हम दोनों काम करते हैं। अब जाकर थोड़े ही खाना बनाऊंगी। कल सवेरे आकर ले जाऊंगी। अभी तो उसे जाकर ढूंढू।'

फिर मैं बाहर आई। घर आकर मैंने चैन की सांस ली।'

उसके बाद वह चौकी में ही जोर-जोर से रोने लगी।

थोड़ी देर में इंस्पेक्टर ने कहा - 'इसका अर्थ है कि खून तुम्हारे बेटे ने किया और तुमने उसकी मदद की। सबूत भी तुमने झुपाये।'

'नहीं सा'ब मेरा बेटा बच्चा है। आप मुझे गिरफ्तार कर लो। उसे छोड़ दो।' वह गिड़गिड़ाई।

'वह अब बच्चा नहीं है। तुम्हारे प्यार ने उसे आवारा और हिंसक बना दिया। तुमने एक जरा-सी बात के लिये एक भोली-भाली लड़की का खून कर दिया। जो अपनी मेहनत से पेट भरती थी। कैप्टन साहब की मम्मी को तुमने बेरहमी से मार डाला। तुम्हारा ये कारनामा हमें बहुत पहले ही पता लग गया था। बोरी पर तुम्हारे खून की पहचान कर ली थी जो तुमने कहा था कि सब्जी के थैले में तार बांधा गया था। तुमने जब उसे खोला तो तुम्हारी उंगली पर चुभ गया था। तुमने मेडिकल वाले लड़के से दवा लगवाई थी। दूसरे दिन तुम डाक्टर के पास गयी थी। उसने पट्टी बदलकर इंजेक्शन लगवाने के लिये कहा। तुमने मना कर दिया। किन्तु तीसरे दिन जब उंगली सूज गयी और चबक-चबक करने लगी तो तुम डाक्टर के पास गयी। उस वक्त कैप्टन भी तुम्हारे साथ आ गया। तुम पट्टी करा के चली गयी। लेकिन कैप्टन रूक गया और उस रूई को उठा कर ले

आया जिस पर तुम्हारा खून लगा। बोरी वाले खून से उसका मिलान हो गया था।'

कैप्टन मुस्कुरा दिया और बोला - 'तुम तो उसी दिन शक में आ गयी थी, जब गार्ड ने दुकान के पास तुम्हारी आवाज सुनी थी। लेकिन सब-इंस्पेक्टर ने ऐसा जताया जैसे वह जान-बूझकर दूसरे को फंसाना चाहता है।'

तुमने उस वक्त अधिक ध्यान नहीं दिया। लेकिन गार्ड को देख कर थोड़ा डरी जरूर। हमें वो छूरा भी मिल गया जो तुमने पानी के टैंक में डाल दिया था। तुमने एक अच्छा काम किया कि छूरे को पोलीथीन में लपेट कर रखा था। उसका नतीजा यह हुआ कि तुम्हारे हाथों के निशान सुरक्षित रह गये। हमें तुम पर शक तो था ही। लेकिन प्रफू चाहिए था। तुम्हें याद है, कि मैं तुम्हारे पास कद्दू लेने आया था। तुम एक छूरी से कद्दू काटने लगी। मैंने जब कहा कि दूसरी दुकान से ले लेता हूँ। क्योंकि छूरी से यह नहीं कटेगा तो तुम छूरी वहीं छोड़ उस दूसरी दुकान से छूरा माँगने गयी थी। तभी मैंने तुम्हारी छूरी उठा कर जेब में रख ली थी। तुमने एक बार भी यह नहीं सोचा कि मेरी छूरी कहाँ गयी। बस उससे पता लग गया कि छूरा तुम्हारा है।'

'इतना बड़ा धोखा?' वह आश्चर्य से कैप्टन की ओर देख कर बोली।

कैप्टन ने कड़वे स्वर में कहा - 'धोखा तो शुरू से मुझे तुम दे रही थी। तुम बार-बार मुझसे यह कहती रही कि तुमने रात ग्यारह बजे शंभू और राधे को देखा था। वे बातें करते हुए जा रहे थे। दो आदमियों की बातें करने की बात किसी और ने भी सुनी थी। लेकिन वह पहचान नहीं सके थे। वे आवाज पीछे की गली में रहने वाले दो आदमियों की थी। जो रात की ड्यूटी पर नीचे जाते हैं। उनसे पता लगा कि वे दस-ग्यारह बजे के बीच जाते हैं। क्योंकि उनकी ड्यूटी बारह बजे से दस बजे तक रहती है। वे जरा जल्दी जाते हैं। तुमने उनको देखा था। तुमने केवल उन्हें उसी रात देखा था, जब शंभू सीढ़ियों पर बैठा था और राधे घूम कर आया था। शंभू उसे लेकर नीचे चला गया। गली में एक बैग उसके ऊपर गिरा तो वह उसे उठाने के लिये मुड़ा। तब उसने तुम्हें सीढ़ियों के ऊपर खड़े देखा। उसके देखते ही तुम आड़ में हो गयी।'

तुम्हारे बार-बार उन पर इल्जाम लगाने से मेरा शक पक्का होने लगा। जब राधे ने बताया कि उसने समर को शांता के दरवाजे के बाहर छूरा लेकर बैठे देखा था तो हमने प्लानिंग की कि तुम्हें रंगे-हाथ पकड़ा जाये। और आज तुम यहाँ हो।'

'लेकिन उसके माँ-बाप?' वह हकला कर बोली।

'वे कहीं नहीं गये थे। तुम्हारे सामने उन्होंने नीचे जाने का नाटक किया। लेकिन दोनों टैक्सी स्टैण्ड के पास वाले पार्क में ही बैठे रहे।'

वह बड़बड़ाई - 'इतना बड़ा धोखा' और वह टेबल पर सिर टिका कर रो पड़ी। फिर बोली - 'आपको मैं अपना समझती रही। आपने भी धोखा दिया।'

कैप्टन ने गुस्से से कहा - 'तुमने मुझे अपना समझा ही कब? तुम मुझे शुरु से हो धोखा देती रही हो। तुम चाहती थी कि मैं पुलिस वालों को बार-बार यही बताऊं कि खूनी शंभू और राधे ही हैं। इसीलिये जैसे ही वो आए तो तुमने पुलिस के बजाये मुझे बताया। जब पुलिस ने उसका बयान ले लिया और छोड़ दिया तो तुम भड़क गयी। तब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि कर्ता-धर्ता तुम ही हो। यदि यह सच होता तो तुम बार-बार उनके बारे में नहीं कहती।'

तुमने सोचा कि पुलिस को उनके आने का पता नहीं चला। लेकिन, पुलिस बेवकूफ नहीं है। उन्हें उसी वक्त पता चल गया था, जब वे नीचे से ऊपर आ रहे थे। लेकिन वे इसलिये चुप रहे कि तुम्हारा व्यवहार कैसा रहता है। जब पुलिस ने उन्हें छोड़ दिया तो तुम भड़क गयी। जब मैंने जान-बूझकर यह बताया कि राधे ने तुम्हें और तुम्हारे बेटे समर को देखा है तो तुम डर गयी। और तुम इस ताक में थी कि कैसे उसका मुंह बंद किया जाये। जब मैंने बताया कि आज रात उसके माँ-बाप पार्टी में जा रहे हैं लेकिन राधे को नहीं ले जायेंगे तो तुम्हारी आँखों में चमक आ गयी। तुम उसका खून करने आई थी। लेकिन तुम्हें क्या मिला? क्रोध की भी एक सीमा होती है। तुम शांता को पहले ही खूब डांट चुकी थी। फिर भी तुम नहीं मानी। अब उसका फल तो भुगतना ही पड़ेगा। तुम और तुम्हारे बेटे समर को अब जेल की हवा खानी ही पड़ेगी।'

सब्जी वाली जोर-जोर से रो पड़ी। आवाज सुनकर आस-पास के लोग उठ गये और पुलिस चौकी के आगे खड़े हो गये। वे चकित थे कि सब्जी वाली क्यों रो रही है। पुलिसवालों ने उन्हें वहाँ से दूर हटा दिया। किसी कांस्टेबल ने जब उन्हें बताया कि इसने शांता की हत्या की है तो सभी चौंक उठे थे।

कैप्टन खड़ा हुआ और इंस्पेक्टर से बोला -'अच्छा सर, आपका केस पूरा हो गया है। समर को आप अब जाकर ला सकते हैं। अब मैं चलता हूँ। मम्मी जी से मैंने वादा किया था कि मैं खूनी को छोडूंगा नहीं। लेकिन क्या करूं। कानून को मैं अपने हाथ में नहीं ले सकता।'

इंस्पेक्टर और सब-इंस्पेक्टर भी खड़े हो गये। इंस्पेक्टर बोला - 'आते रहियेगा। आपने जो काम किया वो हम भी नहीं कर सकते थे। ईश्वर आपकी मम्मी को सद्गति दे।'

फिर उनसे हाथ मिलाकर कैप्टन अशोक घर को चल पड़ा। एक बार उसने ऊपर सीढ़ियों की ओर देखा और उसकी आँखों में आंसू आ गये। फिर वह तेजी से घर की ओर चल पड़ा।

दूसरे दिन ही उसने मकान छोड़ दिया और आर्मी मैस के सिंगल क्वार्टर में चला गया।

----****---

बस